morial College Of Education Bantalab Jammu

बाइपास

मलिक राजकुमार

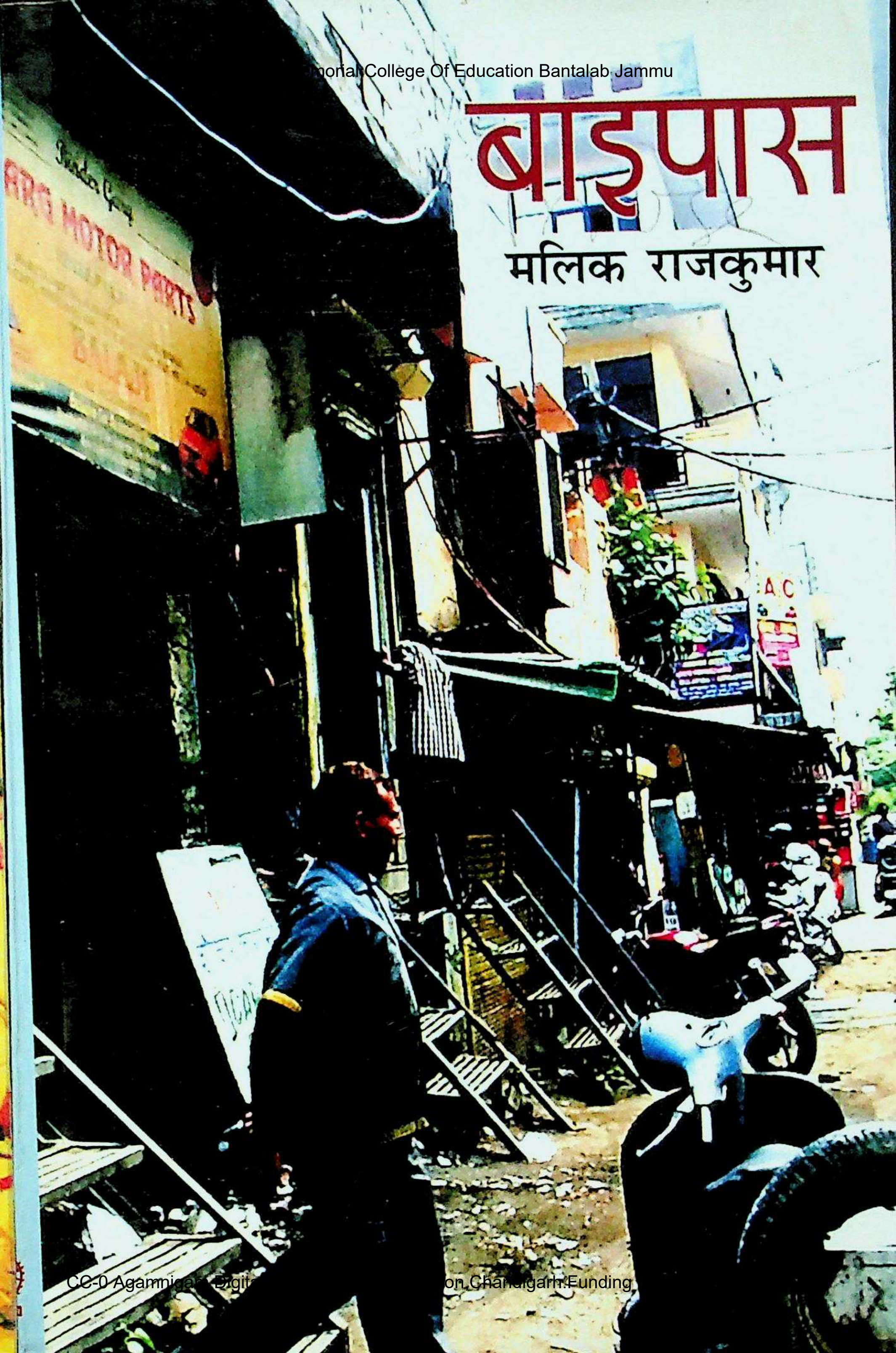

CC-0 Agamnigam Digit... on Chandigarh Funding

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बाइपास

G.M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu
Acc No. 9247
Dated 13.12.2023

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

श्री नटराज
श्री नटराज प्रकाशन
ए-507/12, साउथ गामड़ी एक्स. दिल्ली-53

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बाइपास

अग्निशेखर और क्षमा कौल
द्वारा यह
पुस्तक सप्रेम भेंट

मलिक राजकुमार

श्री नटराज प्रकाशन
दिल्ली-110053

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रकाशक
श्री नटराज प्रकाशन
ए-507/12, साउथ गामड़ी एक्स.
दिल्ली-110053
फोन : 011-22941694

ISBN : 978-93-81350-03-4

@ लेखक

प्रथम संस्करण : 2013

मूल्य : 350.00 रुपये

शब्द संयोजन : प्रिंस कम्प्यूटर्स दिल्ली-110094

मुद्रक : सलमान ऑफसेट प्रेस, दिल्ली-110053

भारत में मुद्रित : Baipas (Novel) by Malik Rajkumar

श्री नटराज प्रकाशन, ए-507/12, साउथ गामडी एक्स. दिल्ली-110053 से टी. एस. राघव द्वारा प्रकाशित, प्रिंस कम्प्यूटर्स द्वारा पृष्ठ सज्जा व क्वालिटी प्रिंटर्स द्वारा आवरण सज्जा तथा सलमान ऑफसेट प्रेस, मौजपुर, दिल्ली-110053 द्वारा मुद्रित।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

''करो बेटा, मनमानी करो। मैं क्या कर सकता हूँ पर मुझे कोई तो रास्ता बताओ।'' देवी दयाल ने जैसे समर्पण कर दिया। वे अभी-अभी रेलवे स्टेशन मास्टर की दिन की ड्यूटी करके लौटे थे।

''पापा जी बड़े आप हैं। घर के मुखिया हैं। आप ही इस तरह करेंगे, तो बात कैसे बनेगी।'' कुमार बहुत मायूसी से बोला।

''बेटा, मैंने कौन सा गुनाह कर दिया है। एक ही रोना तो रो रहा हूँ, मेरे पास पैसे नहीं हैं, तुझे दुकान कहाँ से दिलवा दूँ।''

''पापा जी, दुकान खरीदने के लिए मैंने कब कहा, बाइपास पर सरदार ने छः दुकानें बनाई हैं। दो में उसका अपना ढाबा है, बाकी चारों खाली पड़ी हैं। उन्हीं में से एक किराए पर ले लें, तो काम चल सकता है।''

''बेटा, तुझे दुकान खोलनी है तेरे पास उसके लिए हजार दलीलें हैं, मेरे पास पैसे नहीं हैं। मैं तेरी दलीलें सुन कर भी क्या करूँ। अच्छी हैं या बुरी ...उन पर कुछ तब कहूँ जब अंटी में माल हो। वो कहते हैं न अंधे का तीतर बाहर बांधू के भीतर।''

''पापा जी... दो सौ रुपये से पाँच हजार तो मैंने साढ़े तीन महीने में कर लिए न। यह तो आपको भी पता है। आप यह भी तो सोचो अगर दुकान होगी...अपना ठीहा होगा तो कोई भूला भटका ग्राहक भी आ लगेगा। आमदनी तो ग्राहक से ही होनी है।''

''वो तो तू अभी भी कर ही लेता है।'' देवी दयाल रेलवे वाला सफेद कोट पैंट उतार कर खूँटी पर टाँगते हुए बोले।

''हाँ, कर लेता हूँ पर खाली इतवार-इतवार को ही न। रोज़ अगर बिक्री होगी और कुछ आइटम भी ज्यादा होंगे तो फायदा होना तो दिख ही रहा है। अभी ट्रक वालों के पास भी दर-दर जाना पड़ता है। फिर वो आएँगे दुकान पर।''

''हाँ बेटा... बाइपास का माहौल जो तुझे बिगाड़ कर रख देगा उसका क्या? शराब...गालियां।...बदफैलियां। इसके अलावा बाइपास तुझे क्या देगा। बाइपास बदनाम इलाका है।'' देवी दयाल आराम करने के लिए लेट गए।

''पापा जी....यह तो आदमी-आदमी पर निर्भर करता है। कोई ज़रूरी तो नहीं कि सभी वैसा ही करेंगे। मुझे अपने मतलब से मतलब रखना है।''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"ज़रूरी क्या नहीं.....माहौल अपना असर छोड़ने से कैसे चूक सकता है? तू मुझे सिखा रहा है।"

"सुभाष जो काफी देर से चुप बैठा था यह सुनकर बोल पड़ा।" पापा जी ठीक कहते हैं। हमारे मोहन लाल सर भी तो एक मिनट में पूछते थे...क्यों बे, बाइपास जाता है?"

"वो तो उससे पूछते थे जो होमवर्क करके नहीं लाता था।" कुमार शायद सुभाष का मतलब समझ नहीं पाया था।

"पर पूछते क्यों थे? इसलिए ही न कि बाइपास आवारा लोगों, गलत कामों. ...मोटरबाजी....होटलबाजी के लिए बदनाम है। तू तो खुद मोटरबाजी में घुस पड़ा है। अब दुकान भी बाइपास पर खोलेगा।"

"भैय्या, कम से कम आप तो मेरा साथ दो। आप नहीं समझते क्या, हम गरीबी के मारे हैं। इससे निकलना हमारे सामने सबसे बड़ी चुनौती है।"

"चुनौती है तो...सामना कर। मैं नहीं कर रहा, मैंने रेलवे की परीक्षा दे दी है। भगवान ने चाहा तो सलैक्ट भी हो जाऊँगा। साढ़े चार सौ रुपये सीधे एक तारीख़ को घर आने लगेंगे।"

"साढ़े चार सौ ही न....जहाँ पोस्टिंग होगी, वहाँ रहने खाने का खर्च निकालकर घर कितने दे पाओगे, सूखे दो सौ ....आप बताओ दो सौ से क्या होगा। साथ ही रात की ड्यूटियां, उनका क्या?"

"तो तू दस हजार रुपये महीना ला देगा क्या? ये सपने देखना छोड़, अगले साल अठारह का हो जाएगा। टी.टी. की परीक्षा दे दे, तनख्वा के साथ अड़ी भी मिला करेगी। टी.टी. लोग तनख्वा से ज्यादा तो ऊपर से बना लेते हैं।"

"मर जाऊँगा पर रिश्वत नहीं लूंगा, यह मैं पहले ही बता दूँ। साला, काला कोट पहनकर इस गाड़ी से उस गाड़ी खानाबदोशों को तरह घूमना मेरे बस की बात नहीं है। तभी तो मैंने बारहवीं का इम्तिहान भी नहीं दिया। मुझे पता था मेरे साथ यही होने वाला है।"

"पापा जी, देखा आपने अभी इसने कैसी भाषा बोली। साला, गाली निकाली न। अभी से यह हाल है, आगे तो रोज घर में भी माँ-बहन कर रहा होगा। इसकी जबान पे गालियां। चढ़ जाएँगी और इसे पता भी नहीं होगा।"

"भैय्या, ऐसा नहीं होता। थोड़ा ध्यान रखना पड़ता है। स्टेशन पर क्या लोग-बाग गाली-गलौच नहीं कर रहे होते।"

सुभाष ने हथियार डाल दिए। "तू पापा जी से ही बात कर ले। पर मुझे पता है, तू रोज पउआ पीकर यही कर रहा होगा। मुझे क्या, न मुझे तुझसे कुछ लेना न तेरी दुकान से।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

''हाँ, आप बड़े हो आप कह सकते हो। कुछ नहीं लेना, न तुझसे न तेरी दुकान से। पर मैं तेरा-मेरा नहीं सोच रहा मुझे घर की गरीबी दिख रही है...कुछ करना पड़ेगा तभी बात बनेगी। नौकरी में सीमित तनख्वा है, व्यापार में ज्यादा मौके हैं।''

''तूने घर का ठेका ले रखा है।''

''ठेका तो कोई किसी का नहीं लेता भइया, पर जो आने वाले कल की सोचकर नहीं चलता, वह खता खाता है। मैं क्या करूँ, मेरा दिमाग परेशान रहता है। उसी के लिए सारी जद्दो-जहद कर रहा हूँ, पर मेरी बात न कोई सुनकर राजी है, न समझ कर।''

''चार पैसे हों, तो तीनों बहिनें भी पढ़ जाएँगीं। पढ़ जाएँगीं तो ढंग के घर में शादी हो जाएगी। छोटा भी अगर अच्छी शिक्षा पा लेगा तो कहीं अफ़सर लग लेगा। नहीं तो क्लर्क का बेटा क्लर्क ही बने, यह क्या बात हुई। पापा जी कब तक अकेले यूँ खींचते रहेंगे, उन्हें राहत तो हम ही दे सकते हैं।''

''तो क्या क्लर्क का बेटा प्राइम मिनिस्टर बनेगा। लालबहादुर शास्त्री हरेक नहीं हो सकता। भैय्या, यही दस्तूर है...देखता नहीं देश में कितनी बेरोजगारी है। क्लर्क के बेटों को क्लर्की भी मिल जाए तो गनीमत समझो। नहीं तो आज के वक्त में चपरासी की नौकरी भी न मिले।''

''जहाँ जाओ वहीं सोर्स चाहिए....रिश्वत देनी पड़ती है...कोई चाचा-मामा, कोई मिनिस्टर जान-पहचान का न हो तो आदमी की औकात फूटी कौड़ी की नहीं होती। बता हमारे पास क्या है? जो करना है अपने बूते पर ही करना है।''

दो-चार साल नखरे तू भी कर ले, फिर ये रेलवे की नौकरी के भी लाले पड़ जाएंगे और यह तेरी समझ में जब आएगा तब पानी सिर से ऊपर निकल चुका होगा। कहते भी तो हैं ज्यादा होशियारी अच्छी नहीं होती। सबसे पहले दुनियादारी सीख।''

''भैय्या, बात होशियारी की नहीं समझदारी की है। आप समझने की कोशिश तो करो, आगे जाने के लिए कस के मेहनत करनी पड़ेगी।''

''तो कर न मेहनत, किसने रोका है? रेलवे परीक्षा को तैयारी कर, जैसा पापा जी कहते हैं। पर नहीं, तुझे सिर्फ बाइपास पर मोटर पार्टस की दुकान खोलनी है। तेरे लिए दुकान खोलने को ही मेहनत कहते हैं। यूँ तो रिक्शे वाला भी सारा दिन जी-तोड़ मेहनत करता है, पर शाम को क्या परिवार वालों के लिए सूखे निवालों का इन्तजाम भी कर पाता है।''

''भैय्या, मैं आपको क्या कहूँ । आप कहाँ की कौड़ी कहाँ जोड़े दे रहे हैं।

''फिर तुम्हारी बहस शुरु हो गयी। दुकान खोल दो रफ़ड़ा खतम करो। उससे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
पहले चलो, तवा रख दिया है, रोटी खा लो। गर्मा-गर्म फुलके सेंक रही हूँ। फिर लाइट चली जाएगी तो काम करना भी मुश्किल हो जाएगा।''

माँ ने शिकायत भी कर डाली, व्यवधान भी उपस्थित कर दिया, समाधान भी दे दिया, साथ ही खाने की सूचना भी। छहों भाई-बहिन और पिता जी रसोई में आ गए। बहिन ने सबके सामने खाने की प्लेटें, कटोरी और गिलास लगा दिए।

माँ ने तवे पर चार-चार रोटी अधसिंकी करके अंगीठी पर सेंक कर फूले-फूले फुल्के बच्चों की थाली में जमा दिए। सुदीप्ता और बबली छोटी हैं, दो-दो फुल्कों से काम चल जाता है। अगले चार फुल्कों से घर के चारों मर्दों को एक-एक रोटी मिल गयी। देवी दयाल को छोड़कर सबने खाने की ओर ध्यान लगा लिया।

''आप क्यों झिक्की मंजी (उदासी ओढ़ना-सिरायकी कहावत) डाल के बैठ गए। दो सूखी रोटियों के अलावा है भी क्या, उसे भी शान्ति से न खा सको तो मेरा सारा पोहरा (कड़ी मेहनत) किस काम का।'' माँ ने देवी दयाल को टोक दिया। ''सुदेश..बेटा, बहिनों को पानी दे दे, उन्होंने रोटी खा ली है।''

''सरला, जब औलाद बड़ी हो जाती है तो चुप्प मारनी पड़ती है। कुमार अपनी जगह ठीक है। उसकी बात में वजन है। व्यापार में खतरा लेना पड़ेगा। पर मैं किस बूते पर लूँ....लूँ भी तब जब कोई वसीला तो नजर आता हो। दुकान तो खुल जाए, पर खुले कैसे? यही उथल-पुथल दिमाग की नसों को खींचती जा रही है। ड्यूटी पर भी यही सारा कुछ सोचता हूँ। कोई कहीं आशा की किरण नजर तो आए। कोई रिश्तेदार, कोई सगा-संबंधी, कहीं भी तो उम्मीद से देख नहीं सकता।''

''सोच के देख, दो सौ गाड़ियां। ड्यूटी पर निकालता हूँ। परेशानी में कहीं किसी दिन कोई रेल भिड़ गयी तो तुम सब इन दो रोटियों से भी जाओगे। सोचता हूँ, तब इन बच्चों का क्या होगा।'' देवी दयाल ने अपनी बेबसी और डर जाहिर कर दिया।

''सब ठीक हो जाएगा। ऐसा अशुभ क्यों सोचते हो...रब भी विसारा है क्या?'' हम गरीबों का तो वही वली और वही वारिस है। ज्यादा मत सोचो, मेरे जेवर पड़े हैं गिरवी रख के दुकान खोल दो। चलो सुदीप्ता, बबली अपना होमवर्क पूरा कर लो।''

''तेरा दिमाग खराब हो गया है! कोई अच्छा वक्त था, तेरे जेवर बन गए। अब तो एक छल्ला बनवाना भी मुश्किल है। कल लड़कियों का भी विवाह करना है, सुदेश पन्द्रह की तो गयी। कुछ अकल की बात किया कर, कहीं तेरी मत तो नहीं मारी गयी।'' देवीदयाल क्रोधित हो उठे।

''पापा जी, अब आप लोग बहस में मत पड़ो। रोज-रोज तो घर में कलह हो

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जाती है। इसलिए तो मैंने परीक्षा छोड़ दी, कम से कम कहीं ठिकाने तो लगूँ। लगूँ तो यह घर की किलकिल कम हो।''

''नालायक, परीक्षा छोड़ दी तो ऐसे कह रहा है जैसे कोई मैडल जीत के लाया है। मत मेरा भेजा खराब कर...इस साल परीक्षा दे और रेलवे इम्तिहान की तैयारी कर।'' देवीदयाल ने निर्णय दे दिया।

''पापा जी, आप जो कहें मैं करने को तैयार हूँ। एक बार मेरी बात ध्यान से सुन लें। हम छः भाई बहिन हैं। सरकारी स्कूल की फीस भले थोड़ी है पर कॉपी...किताबें...पैन-पैन्सिल इन सबका कितनी मुश्किल से होता है। पुरानी कॉपियों के पन्ने सी-सी कर कॉपी बनाकर आखिर कब तक चलेगा।''

''बेटा, हम पाकिस्तान में जो जमीन-दुकानें छोड़ आए थे, उनका क्लेम हमें खानवा में मिला था। तेरी दादी वहाँ अकेले रहने में डरती थी, फिर जमीनों का करते भी क्या, पास में पैसा नहीं, बैल नहीं, औजार और बीज नहीं। बस, घबरा के नौकरी में चला गया। ''

''पापा जी, वो समय ही ऐसा था। आपने जो किया ठीक किया। कम से कम हम लोग रोटी तो खा पा रहे हैं। पर हमें इससे आगे जाना है, इसकी जुगत भी तो हमें ही लगानी होगी।''

''तो बेटा, दिल्ली में ही कोई काम तलाशता, तुझे भेजा तो था।''

''पापा जी, दिल्ली वाले बहुत मतलबी हैं। कश्मीरी गेट में एक दुकान पर नौकरी की थी, पिछत्तर रुपये महीने में। वो भला आदमी साइकिल के कैरियर पर पचास-साठ किलो की दो-दो पेटियां लाद कर बिल्टी कराने भेज देता था।''

जब वो बाज़ार जाता तो मैं थैला लेकर साथ जाता। वह खरीदता मैं, सामान उठाए-उठाए उसके साथ चलता। यह मेरा काम नहीं था। यह तो झल्ली वाले और ट्रांसपोर्ट के ऐजेण्ट करते हैं। पर वो पैसे लेते हैं। झल्ली वाला चार-पाँच रुपये और ऐजेण्ट दो रुपये पेटी लेता था। मुझे अढ़ाई रुपये देकर वह अपने सात रुपये बचाता था। पक्का व्यापारी था। पर उसका भी क्या कसूर।''

''वहाँ सब लोग ऐसे ही करते हैं। हफ़्ते बाद जब मैंने काम करने से मना करके काम छोड़ दिया, तो उसके पिता ने मुझे अपने घर बुलाकर धमकी दी, मैं तेरे खिलाफ चोरी की रिपोर्ट लिखा दूँगा। मेरा लड़का टूर पर जा रहा है और तू बीच में काम छोड़कर धोखा देता है।''

''सत्यानास हो उस कमीने का। ये लोग भगवान से भी नहीं डरते। काम सीखने आए लड़के को काम सिखाने के बदले मजदूरी कराते उसे शर्म नहीं आयी और उसका बाप...वो भी इनसान नहीं था क्या? बेटा, तुझे डर नहीं लगा।'' माँ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
आदतन बोल पड़ी। "सुदेश, बेटा अलमारी से साफ कपड़ा तो दे। ये उघणा घी वाला हो गया है।"

"माँ, डर क्या लगना था। मैं तो कहता हूँ, कर नहीं तो डर नहीं, जब मैंने कुछ किया नहीं तो डरता क्यों। उल्टा उसे मैंने उसके बेटे की शिकायत कर दी।"

"किस बात की शिकायत।"

"मैंने, उसे कहा मेरे ताऊ जी यहीं इनकम टैक्स में हैं। मैं भी तेरी दुकान में रेड करवा दूँगा। आप का यह बेटा वहाँ दुकान में बैठकर, दुकान के सामने मजदूर लड़कियों से नैन मट्क्का करता है। मैं झूठ बोलता हूँ तो किसी भी दिन अचानक जाकर देख लेना। देख लेना किसी दिन ये वहाँ जूते खा रहा होगा।"

"फिर...।"

"फिर क्या, मैं ठाठ से उठकर चला आया। वो बाप-बेटा देखते रह गए।"

"हाय...हाय...मेरे बच्चे, तुझे ऐसे मुश्किल वक्त भी देखने पड़े। सुनो जी, इसे जैसे-तैसे यहीं दुकान खुलवा दो। बच्चा नजर के सामने भी रहेगा और घर की रोटी भी खा सकेगा, हमने मरी दिल्ली का क्या करना है।" माँ ने देवीदयाल को मनुहार कर डाली।

"सरला...ये कह देना आसान है, पर करना बहुत मुश्किल।"

"पर कुमार की पूरी बात तो सुन लो। इसने कुछ तो सोचा होगा, तभी तो इतना जोर दे रहा है। देखना यह लड़का कर लेगा, इसमें लियाकत है।"

"बस इसने कहा, तूने माना और हो गया।" देवीदयाल तल्ख हो उठे।

"कहा नहीं, यह करके दिखाएगा। हमारी जबान का अखाण भी तो है आशकां बधिया कमरां ते दिल्ली ढाई कोह। चल बिटिया रानी बर्तन उठा के समेट, फिर हम भी खा लें।"

"पापा जी, मम्मी जी ठीक कह रही हैं। आप मेरी पूरी बात सुन लो।"

"चल भई, माँ-बेटे मिलकर मुझे ही दबाओ।" देवीदयाल अपने कमरे की ओर बढ़ते हुए बोले।

"पापा जी, दबा नहीं रहा, बता रहा हूँ। पाँच हज़ार का तो पार्ट्स मेरे पास है ही, ये दुकान में रख देंगे। बैंक से भी कुछ लोन मिल जाएगा। दिल्ली, जिससे माल उठाता हूँ, दुकान होगी तो, वो भी उधार देने को तैयार हैं। जहाँ काम सीखा, उन चाचा जी के पास काफी ट्रक पार्ट्स पड़े हैं जो बिकते नहीं क्योंकि वहाँ कार मार्किट है। वो पहले ही कह रहे हैं मेरा यह माल निकलवा दे। उनसे साफ कह दूँगा सारा माल मुझे दे दो, मैं किस्तों में पैसे दूँगा। वो मान जाएँगे।" कुमार और सुभाष पिता के पीछे हो लिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

''जब सारी स्कीम तेरे पास रेडीमेड तैयार है, तो मेरी जान के पीछे क्यों पड़ा था? खोल ले दुकान।'' पिता ने अखबार उठा लिया।

कुमार सीधा पिता के गले झूल गया। ''हाँ पापा जी, यही तो मैं भी कह रहा था। आप कल सुबह मेरे साथ बाइपास चलो, सरदार से बात करो। किराया भी तय करा दो और उसे कह देना, बच्चे का ध्यान रखना। उस पर प्रभाव पड़ेगा, नहीं तो मुझे बच्चा और ज़रूरत मंद समझ कर ज्यादा पैसे माँगेगा।''

''वो तो मैं कर लूँगा। पर बेटा दुकान में फिटिंग वगैरह पर भी तो बहुत खर्च आ जाएगा।'' देवी दयाल ने शंका रख दी।

''नहीं पापा जी, वो भी मैंने सोच रखा है। रेलवे वालों को रेलवे के कंडम लकड़ी के स्लीपर दो रुपये स्लीपर मिलते हैं न, उनसे अच्छा काम चल जाएगा। फट्टे में बड़े छेद ही तो होते हैं। हमें उनसे क्या लेना है। फिटिंग हो जाएगी, पुर्ज़े रखने की जगह ही तो चाहिए। उस लायक तो वो ठीक ही रहेंगे।''

''पर वो तो मुझे सिर्फ दो स्लीपर ही देंगे, यही नियम है।''

''पापा जी, बाकी भी हम दूसरे अंकलों के नाम इशु करा लेंगे। उन लोगों ने कौन-सा मना करना है। मैं अभी पी.डब्लू.आई. अंकल से बात करके आता हूँ।''

अगले दिन सुबह ही कुमार बाइपास पर अपने पिता को लेकर गया। प्रीतम सिंह सरदार कुर्सी पर बैठा धूप में अपने बाल सुखा रहा था। उसने तुरंत ढाबे वाले को कहा, चाय बना बे और इधर मुखातिब हो गया।

''आओ जी बाउजी...सत श्री अकाल। आपने क्यों तकलीफ की?''

''सत श्री अकाल, सरदार जी। बस, लड़का कह रहा था आपने दुकानें बनाई हैं और किराए पर चढ़ानी हैं। सोचा खुद जाकर देख आऊँ।''

''लो बाउजी आपकी दुकानें हैं, जिसपे हाथ रखो आपकी।''

''पर ये तो अभी बन रही हैं। कब तक पूरी हो जाएँगी।

''लो बाऊजी, अपने अच्छी बात की। ये बस इतनी ही बननी थीं और बन गयीं। अब जो आएगा अपनी मर्जी से सफ़ेदी कराएगा, दरवाजा लगाएगा जो कौन्टर शोंटर चाहिए होगा, आपे लगाता रहेगा। हमें क्या करना है। हमने किसी को मना थोड़े करना है।''

''सरदार जी, किराया कितना देना पड़ेगा।''

''बाऊजी, आपसे ज्यादा थोड़े लेना है। साठ रुपये महीना दे देना। वो भी आपने कौन-सा दे देना है। मेरा पुराने माडल का ट्रक है, पार्ट्स में ही किराया पूरा होता रहेगा।''

''सरदार जी, साठ तो बहुत ज्यादा है।''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"लो बाऊजी, जे मैंने सौ माँगे होते तब भी अपने कहना था ज्यादा हैं। किराया तो जी, जो मुँह से निकल गया। पहले ही कम है पर अपने बच्चे से ही लेना है, कोई बात नहीं। अब एक भी दुकान पिछत्तर से कम नहीं चढ़ानी, आप देख लेना।"

"सरदार जी, आप सियाने व्यापारी हैं।"

"चलो साठ ही सही। पर दरवाजा तो आप को ही लगवाना पड़ेगा।" कुमार ने पिता से पहले ही जवाब दे दिया।

"बेटा जी, दुकान तो जहाँ है, जैसी है, आपके सामने है। आप बगैर दरवाजे के काम चला लेना, मैंने क्या करना है जी।"

"लो जी, चाय पियो।" ढाबे वाला चाय रख गया था। चाय पीकर देवी दयाल चल दिए। सरदार ने पीछे से आवाज़ दी।

"बाऊजी, अपने बताया नहीं कौन सी दुकान...और एडवांस किराया?"

"सरदार, जी दुकान तो कोई सी भी दे दो। सब एक जैसी हैं। घर जाकर सोचकर बताता हूँ।"

"बाऊजी, तब तक तो देर हो जानी है। साठ रुपये तो आज की बात है। कल का रेट कल होगा। बीस रुपये एडवांस दे दो....मेरे पउए का काम चल जाएगा।"

"सरदार, जी सुबह-सुबह पउआ?"

"बाऊजी, सुबह क्या और शाम क्या? जब मिल गयी तो पी ली, नहीं तो सूफ़ी के सूफ़ी। आज आपकी दुकान खुलने का जश्न तो हमने मनाना ही हुआ।"

"ठीक है, बीस रुपये घर जाकर भेजता हूँ। देखिए, अभी फिटिंग होनी है, दरवाजा लगना है, पन्द्रह-बीस दिन लग जाएंगे। आपका किराया अगली एक तारीख से शुरू होगा।"

"चलो जी, अगली एक से सही, पर बीस रुपये भेजना मत भूल जाना। मेरा सारा टशन बिगड़ जाएगा। शुभ काम तो शुभ तरीके से अच्छा लगता है।" प्रीतम सिंह ने अपनी मूंछों को सँवारते हुए कहा।

कुमार घर आया तो बहुत खुश था। उसकी मुराद जो पूरी हो रही थी। सरदार को लौटकर बीस रुपये दे आया। स्लीपरों की एप्लीकेशन भी लगा दीं। पी.डब्लू. आई. ने मेट को कहा, "इसे कंडम के बजाए सैंकिड क्लास के दस स्लीपर उठवा दें।"

आरे पर चिराई के बाद दुकान का काम शुरु हो गया। बोर्ड बनवा कर लटका दिया, कुमार मोटर्स, ट्रक कार एवं जीप पार्ट्स के एक मात्र विक्रेता।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

□

गिर्राज के ढाबे पर जब कुमार गया तो उसे कुछ काम था। "चाचा राम...राम।"

"राम...राम बेटा। बैठ, आमलेट बनाता हूँ।" गिर्राज भट्टी के सामने पालथी मारे बैठा था।

"चाचा, आमलेट खाने नहीं, काम से आया हूँ।"

"हाँ...बेटा बोल, तेरा काम हो जाएगा।"

"चाचा, मेरी एक्सलों की बिल्टी आनी है। आपके ढाबे का नाम लिखाया है, यहाँ उस ट्रांसपोर्ट कम्पनी की शाखा नहीं है।"

"चिन्ता ही मत कर, जिस ट्रांसपोर्ट की शाखा नहीं है। उस कंपनी की शाखा गिर्राज ढाबा है। तेरा माल दुकान में पहुँच जाएगा..., कोई फिकर नहीं। दुकान का महूरत कब हो रहा है।"

"बस चाचा, अगले हफ़्ते में हो जाना चाहिए।"

गिर्राज का छोटा भाई मंगतू आ गया, बोतल मेज पर लगा रहा था, "आ जा. ..कुमार...घूंट मार ले।"

"आप शौक करो, मैं पीता नहीं।"

"पीता नहीं के...हमसे शर्म आ रही है, अरे जिसने करी शरम उसके फूटे करम, जिसने ओढ़ी बेशरमाई उसने खाई दूध मलाई। बाइपास आ गए तो यहाँ के तौर तरीके तो चलाने ही पड़ेंगे।"

"नहीं...मैंने कभी नहीं पी, और पीऊंगा भी नहीं।"

गिर्राज ने हंसकर भाई को कहा, "अभी दो दिन से ही तो बाइपास पर आया है। अपनी दुकान चालू होने के साथ ही ये भी चालू हो जाएगा। बाइपास से कौन बचा है, नहीं तो इसे बाइपास कौन कहेगा।"

"चाचा...आप भी देख लेना, कुमार यहाँ कभी चालू नहीं होगा। मुझे पढ़ना है, आगे जाना है। बाइपास पे मजबूरी खींच लाई है।"

"चल बेटा...वो भी देख लेंगे। नाई नाई कितने बाल....बाबूजी बैठो कुर्सी पर, आए सामने।"

"अच्छा चाचा राम...राम।"

"राम...राम.. बाबूजी को मेरी नमस्ते कह दियो।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
पीछे से आवाज सुनाई पड़ी, गिरीश भाई से कह रहा था।

"कुछ भी कह लो, लौंडे में गजब की तड़ है। देखा, कैसी वजनी बात करता है। बाइपास पे आज तक ऐसी भारी बात नहीं सुनी, घुने-चने तो खड़-खड़ ही करते हैं।"

"पहले-पहले सारे ऐसे ही करते हैं," फिर रोज नाली चाटते हैं। मंगतू ने अपनी व्याख्या दे दी।

"पर ये कुछ और मिट्‌टी का लगता है। खानदानी है...पक्का खानदानी, देख लियो, ये दस-पाँच साल में कहीं से कहीं जा पहुँचेगा। पूत के लखन पालने में ही दिख रहे हैं भइया। हमारी भी नोट करके रख लो।"

कुमार आश्वस्त-सा दुकान पर आ गया। अभी बढ़ई दो-तीन दिन और लेंगे। वह बाहर ही ढाबे की कुर्सी पर जम गया। देखा-देखी आस पास के लड़के भी जमा होने लगे।

चार लड़के एक साथ आए और परिचय की इच्छा से बातें शुरु कर दीं।

"ये आपने बहुत बढ़िया किया जो पार्ट की दुकान खोल ली। हम भी यहीं बाइपास पे रहते हैं। ये सूरज, इसका भाई मंसा, मैं शर्मा और ये पुनिया, मेरा भाई। हम गाड़ियों में ग्रीस करते हैं।"

"अरे ये पुनिया।....यह तो बहुत छोटा है," मुश्किल से दस-बारह साल का होगा।

"ये तुमें छोटा दिख रहा है। ये बहुत हरामी है। जितना जमीन के बाहर है उतना ही जमीन के अन्दर है। अभी कोई टिरक रुक के भी नई लेगा, ये लपक के पहुँच जाएगा...उस्ताज जी; ग्रीस कराओगे। हम पै गाड़ी नई पकड़ी जाती है। ये खटाक से फंसा लेता है। साला, वहीं ते आवाज मारैगा...शर्मा चल ग्रीस कर। जैसे ये मालिक है, हम इसके नौकर हैं।"

"अरे, फिर तो पुनिया बड़ा तेज है।" कुमार ने कहा तो पुनिया गर्व से शरमा रहा था।

सूरज ने उसके सिर पर चपत लगा दी, "देख कैसा बन रहा है। उस दिन तैने पउआ डिरेवर से क्या कही थी, वो बता न।"

"है...वो तो कहनी पड़ती है, गाहक क्या योंई पैसे देता है।"

"अच्छा जी, पैसे के लिए हमे कुत्ता कहना पड़ता है, तोई काम मिलैगा... शाबास बेटा, तू घना सुरता है।"

"हूँ...हूँ...बताओ भाई, क्या हुआ था। पुनिया तू ही बता दे न। ये बताएँगे तो मिर्च-मसाले के साथ बोलेंगे...तू जैसे हुआ, वैसे ही बता।" कुमार ने पुनिया को पुचकार दिया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"है...मैं नई बतारा...इनते पूछ लो।" पुनिया उठकर चल गया।

सूरज ही शुरू हुआ। "लो मैं बताऊँ, एक दिन प्रिंस ट्रांसपोर्ट की गाड़ी रुकी, उसका डिरेवर ठिग्गा है। सो उसे सब पउआ कहते हैं। पुनिया लपक कै ये जा और वो जा। डिरेवर खिड़की पै जाके देखा तो कोई नई उतरा। जब वापस आ रा था तो क्लीडर सैड से पउआ उतरा।"

"उस्ताज जी, मैं तो तुम्हें ड्रैवर सैड देख रहा था। तुम कहाँ चले गए थे?"

"मैं ब्रेक लगाने गया था...सीट से उतरकर जाना पड़ता है न, चल तू बोल।"

"उस्ताज जी, ग्रीस करा लो।"

"कै पैसे लेगा?"

"पाँच रुपे।"

"तब तक मैं भी पहुँच गया था। उसने मुझसे ग्रीस के पैसे पूछे तो मैंने भी पाँच रुपए बताए। पउए ने पुनियां को कहा चल कर दे ग्रीस।"

"ये एक दम से बोला...उस्ताज जी, बाइपास पे सब एकई रेट बताएंगे। ये भी अपने पाले कुत्ते हैं।"

"अरे बाप रे...लगता तो नहीं इतना तेज। अच्छा यह बताओ यहाँ कार पार्ट्स ज्यादा बिकता है या ट्रक पार्ट्स।

"यहाँ कुछ भी बिकैगा जो गाहक की जरूरत हो। यहाँ कौन से बर्कसाप हैं जो इंजन खुलैगा। योंई चलती गाड़ी में जो जरूरत पड़े वोई बिकता है। एक्सल, फैन वैल्ट, हब के बोल्ट, साफट का बैरिंग और क्या। भले कार के हों या ट्रक के।" शर्मा बेतकल्लुफ होकर बोला।

"बौस...ग्रीस का पीपा जरूर रखना...चालू ग्रीस लाल वाली। वो तो हम ही ले लेते हैं, ट्रैक्टर और इंजन वाले भी ले जाते हैं।" सूरज ने अपनी ज़रूरत बताई।

"वैसे यहाँ बाई पास पर कुल मिला कर कितनी दुकानें होंगी," कुमार ने पूछा।

"दुकान कितनी हैं, ये आपई गिन लो। यहाँ से देखो तो सामने गिर्राज का ढाबा उससे आगे तो कुछ है ही नहीं, सीधा पुल ही है। यों जानो के ढाबे के बगल की आठ दुकान गिर्राज की हैं। तीन-चार बंद पड़ी हैं। बाकी में वे पंचर वाला भोला सरदार जिसका एक बड़ा भाई जीत सिंह ड्रैवर है और बलजीत बैरान है कभी ड्रैवर, कभी पंचर, कभी ढाबा, न तो कभी चारपाई तोड़ूँ।" सरदार है, पर खूब बीड़ी खैंचता है।

"अन्दर जो सड़क शेरगढ़ को जाती है। वहाँ पै एक ढाबा है न, पंजाबी ढाबा, उसका लौंडा पप्पी इल्कट्रीसन का काम करता है। अगली दुकान में रैटर (रेडिएटर) वाले बाप-बेटा और बाकी कौने की दुकान में बिल्टा मिस्त्री जो कब दुकान खोलता

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

है, कब बंद करता है, उसके दरवाजे को ज्यादा पता होता है।''

''उसके आगे तीन दुकान जाट राम की हैं। वो किराए पे देता नहीं है। पहले ढाबा खोला, फिर उसका टंडीरा बिक गया तो दूर के रिस्तेदार को ले आया। महीने भर में वो भी निकल लिया। अब भट्टी में और दुकानों में कुत्ते सोते हैं। उसके बाद पैट्रोल पंप है और शमशान तक खाली जगह ही जगह।''

''इस बगल को तो आप देख रहे हो। सरदार पीतम सिंह ने छः दुकान अब बनाई हैं। उसे बाद रामजी लाल की तीन दुकान ये नीचे वाली और दो वो ऊँची। एक चुन्नी पंचर वाले पे, एक सलीम की खराद मसीन, शेरे पंजाब टिरक मिस्त्री और ऊँची मैं चमन और डाक्टर इलैक्ट्रीसन, अगली खाली।''

''डॉक्टर...इलैक्ट्रीशियन कैसे?''

''अरे वो पंजाब में दाँतों का डॉक्टर था। बस अड्डे पे नीचे जमीन पे चादर बिछा कै डॉक्टरी करता था। एक दिन किसी जाट सरदार की ऊपर के बदले नीचे की दाढ़ निकाल दी तो वो अपने ट्रक में डाल लाया और यहाँ छोड़ दिया। चमन को मुफ़त का हैल्पर मिल गया। शर्मा किस्सा सुनाते हुए रस ले रहा था।

सूरज चुप बैठा था तो उसने शर्मा को झाड़ दिया। ''अबे कौन क्या करता था, तूने क्या लेना है। बाइपास पै सबके सब ऐसे ई आए हैं, कमाने की आस उम्मीद लेकर। भूख, साली सबसे कुत्ती चीज है।''

''कुमार, बस बाइपास इतना ही है, वो जो ऊँची दुकान है पार्ट वाले की और डीजल इंजन वाला उसी का भाई है। वो जो हरा-हरा लकड़ी का मकान-सा दीख रहा है वो ग्रीन हैवन रैस्टोरेंट। पंजाबी कालोनी के विश्व जीत ने खोला है उसके संग उसका भाई भी है राजेश कालरा...वो थोड़ा घना पढ़ा-लिखा है।''

''उसके आगे देसी सराब का ठेका और पेट्रोल पंप, लो निपट गया बाइपास. ..सुसरा हैं ई कितना।''

''ग्रीस के काम में कितना बच जाता है। मतलब दिन भर में कितनी गाड़ियों में ग्रीस कर लेते हो।''

''कोई ठिकाना नई है। कोई-कोई तो हफ़्ता ई ऐसा जाता है के बैठे रह जाते हैं। बस मंगलवार को जरूर थोड़ा घना काम निकल आता है।''

''मंगलवार ही क्यों?''

''वो पैठ का दिन होता है न, दिल्ली...मेरठ के टिरक आते हैं। भेड़, बकरी, गाय, भैंस, लेकर और दूसरी जगह ले जाने को। यों जानों तीस चालीस टिरक तो आते हैं।''

''अरे, उस दिन तो सबको काम मिलता है। किसी की क्लच प्लेट, साफ्ट,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

डैनमो, लैट, ना तो आइल पल्टी। उस दिन तो सारे ढाबे गरम रहते हैं।''

''और बाकी दिन?''

''पूरा हफ़्ता गप्प मारते और ताश खेलते निकल जाता है। यों सड़क पे चलते किसी टिरक, कार में कोई कमी आ जाये बस इस बात का इन्तज़ार करते रहते हैं। शर्म ठाठ से कहता है।''

''अरे, दिन क्यों, चौबीसों घंटे। रात-बिरात भी काम निकल आए तो मिस्त्री भी हाजिर और पार्ट वाला भी।''

''मतलब, दुकान का खोलने बंद करने का समय फ़िक्स नहीं है।'' कुमार को आश्चर्य हुआ।

''सूरज ताज्जुब करता है। बाइपास पे भी कहीं फिक्स टैम होता होगा। ग्राहक और मौत का कोई बखत नहीं होता बुजरग तो येई कहते हैं, सो हाल बाइपास का है। गुरु, आए हो धीरे-धीरे सब पता लग लेगा, आधी रोटी पै दाल मत खाओ।''

''कुमार सोच में पड़ गया। एक हफ़्ता बिक्री नहीं। कहीं मेरा फैसला गलत तो नहीं है। सातों दिन, चौबीस घंटे, काम के घंटे उस पर भी उम्मीद ही उम्मीद कि भूला भटका ग्राहक ज़रूर आएगा। यही बाइपास का अलिखित कानून है। सभी के लिए समान। वरना विराम ही विराम यहाँ पसरा रहता है तो गुजर कैसे होगी। उसने लड़कों को कुरेदना शुरु किया।''

सूरज...शर्मा...भाई यह बताओ, ''इस तरह तो बड़ा मुश्किल हो जाएगा। दुकान में पैसा डाल दो और बिक्री का पता नहीं, होगी कि नहीं। इस तरह कैसे चलेगा।''

''देखो कुमार...तुम पढ़े-लिखे हो। पूछपाछ के वोई सामान रखो जो यहाँ चहीता होता है। बाकी रखने की जरूरत नईं है। वैसे तुम्हारी दुकान ऐन मौके की है। सही टैम पै ले ली है।'' सूरज अचानक बड़ा बन गया था।

''और क्या...सामने गिर्राज का ढाबा कोई दो-सौ फुट चौड़ा है। गिर्राज के पराठे और तीतर खाने दिल्ली से डी.एल.वाई कार आती हैं। आगरा जाने वाली कारें भी सुबह यहीं रुकती हैं। ड्रैवरों से उसने सैटिंग कर रखी है। कोई बीस-पच्चीस कार सुबह भी रुकती हैं और वापसी पै संजा को भी।'' शर्मा ने बताना शुरु किया।

''और ट्रक वाले भी ज्यादातर यहीं रुकते हैं। कै तो संजा को खा पीके रात की ड्रैवरी की तैयारी को या रात यहीं सोने को। सुबह-शाम तो रौनक है ही, दिन में भी यूँ तो भूली-भटकी कार बसें, टिरक निकलते हैं।''

''अबे, तू छोड़ न, जब देखों मरी फैला के रखेगा।'' सूरज ने शर्मा को लगभग डाँट दिया। ''साले जिसने चोंच दी है, चुग्गा भी तो वोई देता है। वैसे ई बकवास

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
मारे जा रहा है। कभी भूखा सोया है क्या। बता कब सोया, योंई अल्ल-बल्ल मारे जा रा है।" फिर वह कुमार से मुखातिब हो गया।

"भइया, ऊखली मैं सर दै दियो है तो मूसलन की भली सोची। अब दुकान बन ली, शुरु करौ। सब अपने ते ठीक है जायगो। ज्यादा सोचने ते दिमाग खराब क्यों करो। चल बे शर्मा, घूम के आते हैं यहाँ बैठे बखत है गयौ।"

वे तीनों उठकर चल दिए। कुमार गहरी सोच में पड़ गया। "अगर दुकान न चली तो, मेरे पास तो कहीं कोई सहारा भी नहीं है।"

थोड़ी देर वैसे ही बैठा रहा और उकता कर साईकिल उठाई और घर की ओर चल पड़ा, "बड़ा मुश्किल काम है ज़िन्दगी जीना। लगता तो ऐसे है जैसे हम ज़िन्दगी नहीं जी रहे ज़िन्दगी हमें जी रही है। पर मुझे कुछ ऐसा करना है कि मैं ही ज़िन्दगी को जी सकूँ। ठीक ही है...अब मैं ज़िन्दगी को जीऊँगा...निचोड़-निचोड़ के जीऊँगा...इस ज़िन्दगी को इजाज़त ही नहीं दूँगा कि यह मुझे जी सके। भले कुछ भी करना पड़े...कुछ भी।" कुमार ने इरादा सोचा और सिर झटक कर नकारात्मक विचारों को जैसे गिरा डाला।

बीते दिनों पर निगाह डाली, पहले तो बस मिस्त्री और पार्ट वालों से मिलकर ही वापस चला आता था। अन्य बाइपास वालों से कभी कोई बातचीत ही नहीं हुई।

जब साइकिल से बाइपास आता-जाता था तो बस अड्डे से जो सड़क बाइपास पहुँचती है दोनों ओर बिलकुल भी आबादी नहीं है। फासला मुश्किल से चार-पाँच सौ मीटर का ही है, पर आते-जाते समय तीन-चार बार साइकिल का हैंडल डगमगा जाता था।

"चल बेटा कुमार....अब यही बाइपास ही तेरी नियति है। ये ढोल तो तूने खुद गले लटकाया है। अब हँस या रो, थाप तो तुझे देनी ही पड़ेगी। वही जिससे बचते रहे, एक दिन स्वयं उसी को चुन लिया।"

पेट को पटाना सहज स्थिति कदापि नहीं कही जा सकती, कम से कम सत्तरह साल के किशोर के लिए तो बिलकुल भी नहीं।

दसवीं कक्षा में मोहन लाल सर अंग्रेजी पढ़ाया करते थे। जो होमवर्क करके नहीं लाता था उसे टैक्स लगता था। टैक्स यानि पिछवाड़े पर डंडे से प्रहार। साथ ही लम्बी तफतीश, "क्यों बे...बाइपास जाता है क्या कभी? ये बताओ, कल बाइपास कौन-कौन गया था।

क्लास भर के लिए बाइपास एक हौव्वा बनकर खड़ा हो गया था। आवारा लोगों के लिए....गलत कामों के लिए...या असामाजिकता के लिए ही बाइपास का नाम लिया जाता था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पर कौन-सी असामाजिकता...। पता नहीं। छात्र लोग कयास लगाते रहते। ढेरों किस्से और घटनाएँ सुना डालते। सबकी सब काल्पनिक या फिर कानाफूसी से छनकर आयी हुई।

ग्यारहवीं कक्षा तक आते-आते कॉलेज में एन.सी.सी. आ गयी। कुमार डट गया। अब तो वर्दी मिलेगी...बूट मिलेंगे...फ़्लीट मिलेंगे। साथ में परेड वाले दिन नाश्ता, बिलकुल मुफ़्त।

सीधा कमाण्डर के पास पहुँच की। पैरा मिलट्री फोर्स के नायब सूबेदार और हवलदार, मोहनलाल के साथ विचार में तल्लीन थे। हवलदार हरियाणवी था। मोहन लाल पहले पी.टी.आई. था। अंग्रेज़ी में एम.ए. करके पी.जी.टी. लग गया। एन.सी.सी. आने पर कमाण्डर का पद भी उसे ही मिला।

"बात यो सै जी, जो थम पच्चीस-पचास नै राजी कर ल्यो, तै फिर बाकी छोरे आण में देर न करने के।"

"यहाँ गाँव का माहौल है। पहली बार एन.सी.सी. आयी है। बच्चों के माँ बाप समझते हैं। बच्चों की मिलट्री में भर्ती हो रही है। इसलिए उन्हें समझाना मुश्किल होता है।"

"मुस्किल-वुस्किल कुच्छ ना। हम गाम के ना हैं के? एक बेर चस्का लग जा तो घणे आ लेंगे।"

"वही तो मैं भी कह रहा हूँ। यहाँ शुरु करना मुश्किल हो रहा है। सारे आसपास के गाँवों से आने वाले लड़कों से बात की, पर सुन के...हाँ जी... औरों से बात करता हूँ, कह के चुप लगा जाते हैं।"

"कुमार उनकी बात रुकने की प्रतीक्षा में दरवाज़े पर ही खड़ा रहाँ मोहन लाल की निगाह पड़ी तो पूछ लिया। "हाँ...बोल, क्यों अड़ा खड़ा है?"

"सर...आपसे बात करनी है।"

"अन्दर आजा....बोल क्या कहना है?"

"सर...मुझे एन.सी.सी. लेनी है।"

"चल...तो ले ले। ये ले," रजिस्टर में नाम लिख। तुझे एन.सी.सी. में ले लिया।

"इशे किशे ले लिया...। हवलदार थोड़ा तेज हो गया। उड़े ने आ...यो बता के मन ते एन.सी.सी. लेंणी है, के न्यू ऐ?"

"जी, मन्न से लेनी है। मुझे एन.सी.सी. की ड्रेस बहुत अच्छी लगती है, सर... सर...मैं स्काउट रहा हूँ, मेरे पास प्रमाण-पत्र है।"

"कुण सी क्लास सै तेरी?"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

“जी... बारहवीं साइंस।”

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

“जे तन्ने एन.सी.सी. लेणी है, तो जाके क्लास के छोरां ते बात करके आ। इकल्ले ने एन.सी.सी. न मिलती।”

“जी...मैं अभी बात करके आता हूँ।”

कुमार सीधा कक्षा में गया और लड़कों से बात की। कुमार की देखा-देखी काफ़ी लड़के तैयार हो गए। कुमार उन्हें लेकर के कमाण्डर के पास गया। एन.सी.सी. कॉलेज में बहाल होने का फैसला दूसरे दिन प्रार्थना सभा में घोषित हुआ।

नौंवी से बारहवीं के एक सौ से ऊपर कैडेट तैयार हो गए। कुमार बना अण्डर आफिसर। एन.सी.सी. युद्ध अभ्यास के दौर परेड को बाइपास देखने का मौका मिला था।

एन.सी.सी. की कमाँड देते एक रौब और कड़क लहज़ा रहता था। बाइपास पर जी.टी.रोड पार करते कुमार के शरीर ने एक झुरझुरी-सी ली थी, जैसे एक किशोर ने कोई बड़ा अनैतिक कार्य कर डाला हो।

□

निर्जला एकादशी को कुमार मोटर्स का महूर्त है। सत्तरह बरस के अल्हड़ युवक से उम्मीद भी कितनी की जा सकती है। उसने महूर्त के लिए सिर्फ मिस्त्रियों और पार्ट्स वालों को ही आने के लिए कहा है। पार्ट्स का वास्ता तो उन्हीं से पड़ना है।

ढाबे वालों, ग्रीस वालों, पेट्रोल पम्प या शराब के ठेके वालों को, किसी को बुलाया नहीं गया।

पण्डित जी हवन करा रहे हैं। कुमार और मकान मालिक सरदार दो व्यक्ति ही वहाँ हैं। घर-परिवार या पड़ोस से बाइपास जैसी जगह पर स्त्रियां आने से रहीं। पिताजी रात की ड्यूटी के बाद विश्राम कर रहे हैं।

महूर्त क्या है एक धार्मिक कृत्य भर ही ना। माँ के ज़्यादा ज़ोर देने पर करवाया गया है, उनके मन में संशय ज़रा ज़्यादा जल्दी घर करने लगता है। वरना कुमार तो प्रतिदिन जो ग्राहक आता है, सामान बेच ही रहा है। कभी यहीं पेटियों से निकालकर कभी घर से लाकर।

बाहर ढाबे की मेजों पर लड़कों की चौकड़ी जमी है और खूब बतकहियां। हो रही हैं जो कुमार तक साफ पहुँच रही हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

''आज तौ कुमार मोटर्स कौ महूरत है...चक्क हलुआ और बौंदी मिलनी चाहिए।'' पुनिया जीभ लपलपाते हुए कहता है।

''पहले तो ये बताओ, काऊ ते कहीं भी है महूरत में आवे के लिया। या बैसेई मौह पैना रहे हो तुम सब।'' चुन्नी चुहल करता है।

''अरे,, बुलावे और जावे की कहा जरूरत है। अब तौ कुमार हमारी सैड में आ गया है। पूजा के पाछै प्रसाद तौ सुसरौ मिलै ही मिलै।'' शर्मा ने अपनी सोच जाहिर कर दी।

''न, तू चलौ जा...बामहन के ...तू वैसेऊ घनौ सगौ बनतौ दिखै...जा चलौ जा।'' सूरज किलस कर बोला।

''हम क्यों जाएँ महूरत में जब हमैं बुलायौ ई नांय। तू चलौ जा...वा दिना कैसे लपक कैं गयौ। कुमार साब तुमनै अच्छौ कियो जो पारट की दुकान खोल लई। यहाँ एकऊ दुकान ढंग की न है।'' शर्मा ने सूरज से शिकायत की।

''हमने कौन-सा गलत कहा था। नयी-नयी दुकान खोली है, बताना तो पड़ता है। अच्छी ग्रीस लाकर रखेगा तो हमें खरीदने का सुख हो जाएगा, उसे दो पैसे मिल जाएँगे। कोई दान-खाते में रखने का नहीं कहा था।'' सूरज सफाई दे रहा था।

''अरे बाइपास वालो सुनो इनकी बात। सीधे दिल्ली के कश्मीरी गेट से उठकर कोसी बाइपास पै कुमार मोटर्स खुल गई है। लो बोर्ड पढ़ो...ट्रक-कार पार्टस के एक मात्र विक्रेता, और सब भड़भूजा हैं। एक येई असली हैं, सुनौ।'' शर्मा अपनी भड़ास से कैसे चूके।

''अबे...टूरिस्ट कार आई...।'' कहकर वह भाग पड़ा कार की ओर। गंदे मटमैले कपड़े को त्वरित गति से शीशों पर मारने लगा और डी.एल.वाई. कार की सवारी की ओर हाथ बढ़ा दिया, ''सर...भैरी फुअर (वैरी पुअर)।''

कार का शीशा खुला एक रुपया उसे मिल गया। दाता को सलाम बजा कर उसने भाई को आवाज दी,...''पुनिया... आजा, या कार मैं ते एक रुपइया मिलौ है।''

पुनिया जो दस-बारह साल का बच्चा है, अपनी जगह पर बैठा ही रहाँ भाई खीजकर उसके पास पहुँचा और एक तमाचा जड़ दिया।

''कितनी आवाज दीं...बहरा है क्या? देखता नहीं पूरा एक रुपया दिया उसने, चल मैं तेरे साथ चलता हूँ।''

पुनिया टस से मस नहीं हुआ, ''मुझे नहीं माँगना....मैं बस ग्रीस करूँगा, करानी है तो करा, नहीं तो मैं घर जा रहा हूँ।''

''मुझे नहीं माँगना...रोटी के बखत तो खटाक से भकोसने लग पड़ता है। ये बाइपास है, यहाँ सब करना पड़ेगा। साले बैक लाइट भी ठुकवानी पड़ेगी।''

ढाबे के सामने पड़ी मेज-कुर्सियों पर आस-पास काम करने वाले लड़के अक्सर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
इसी तरह जमे रहते हैं। तभी कुमार आ गया हाथ में हलवे के चिलमची लिए।

"लो भाई, प्रसाद ले लो। आज दुकान का महूर्त है।"

अपने कपड़ों पर पीछे हाथ साफ़ करके सभी ने एक साथ हाथ आगे बढ़ा दिए। सभी ने हाथ के हलवे को एकबार में ही मुँह में समो दिया। गले से नीचे उतारने के बाद बधाई दी, साथ ही हाथ मिलाने को हाथ आगे बढ़ा दिये।

शर्मा चहका,..."हम आपके ग्रीस के ग्राहक हैं। हमें डबल हिस्सा मिलना चाहिए...और फिर हम बामहन हैं।" उसने हथेली को पूरा पसार कर फैला दिया। हथेली पर दुबारा प्रसाद पाते ही वह चक्कर घिन्नी-सा घूम गया और बुलंद आवाज में दुआएँ देने लगा।

उसके साथी उस पर घिर आए, "अभी दो मिनट पहले तो तुझे महूरत पर बुलाया नहीं था। अब दो बार प्रसाद मिलते ही जै कारे भी शुरु...वाह!" वे खीजे हुए थे।

"अरे, तो हम कौन से दुकान पे गए। वह खुद अपने हाथ से देने आया। बोलो, आया के नहीं।" उसने कुर्सी पर बैठे-बैठे अपने पाँव मेज पर पसार दिए।

"हम बामहन हैं, आसीरवाद देना हमारा काम है। ये तो बखत की ऐसी-तैसी हो रही है। नहीं तो हममैं अभी भी इतनी ताकत है जिसे स्राप दे दें उसी का बंटाधार हो जाए, जिसे आसीरवाद दें उसकी पौ बारह।"

"क्यों नहीं, भीख माँग कर खाने वाले। तुम साले हगने नहीं जाते तो पीर होते। बाप ने मारी मेढ़की बेटा तीरंदाज।" दूसरे ने पूरी भड़ास निकाल ली।

"अरे, कुत्ते भूंकते रहते हैं, हाथी घंटारा बजाता निकल जाता है। तुम तो जरैला ईर्ष्या करने वाले हो (कहें भी तो हैं) जरैला जर-जर कैं मर जांय-फुकैला फुक-फुक कैं मर जांय। हमारा क्या है हम मस्त रहते हैं।"

"ओए शर्मा...तमीज से बैठ, पैर नीचे कर कुत्ते।" ढाबे वाले मस्तान ने शायद ध्यान इधर कर लिया था।

"ओ सौरी...बौस... शर्मा ने तुरंत पैर नीचे कर लिए। अपने हाथ का कपड़ा भी मेज पर मार दिया, जहाँ पैर रखे थे।"

तभी प्रीतम सिंह भी आ गया। शर्मा की बाँछे खिल गई, "सतसिरी अकाल सरदार जी...जरा इस मोटे को कहो, हमें नैक-सी चाय पिला दे।"

"अभी कोई गाहक आने दे...चाय बचेगी तो तुझे भी मिल जाएगी।"

"ये हुई न बात, तुम तो धरमात्मा हो पर ये मोटा...चाय बचने देगा तब न। बची चाय को नाली में लुढ़का देता है, हमें नहीं देता है।"

"अच्छा, उसको कहता हूँ। पर एक काम कर, जरा पानी का छिड़काव मार दे...मेज-कुर्सियों पर भी कपड़ा मार दे। सारा दिन यहीं अड्डा जमाए रहते हो। कुत्ता भी बैठता है तो पूँछ से झाड़ कर बैठता है।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"अभी लो सरदार जी, तुमने बड़ी बात करी।" शर्मा ने पानी की बाल्टी उठा ली और पानी छिड़कने को हुआ।

प्रीतम सिंह ने रोक दिया, "ओए घनचक्कर, पहले झाड़ू मार ले....दिखता नहीं कितना कचरा है।"

"बची चाय में तो बस छिड़काव होगा। झाड़ू लगवानी है तो मोटे को चाय के लियां कह दो।"

"मस्तान, इसके लिए बढ़िया-सी चाय बना दे...स्पेशल। ये अपना छोरा है। चल बे...अब तो खुश...झाड़ू मार के पानी छिड़क दे। शाबास बेटा...।"

"अभी लो...।" शर्मा ने झाड़ू उठाया और जोर-जोर से झाड़ने लगा। जानबूझ कर उसी जगह जहाँ वे सब बैठे थे। धूल का गुबार उठने लगा तो वे बिफरे, "अबे धीरे कर...धूल उड़ा रहा है।"

"चलो-चलो...बहुत काम है, निठल्लों की जरूरत नहीं। अभी बस आने वाली है। ग्राहकों के लिए जगह खाली करो।" झाड़ू की गति तेज ही रही।

हार कर वे उठकर दूसरी ओर चले गए। पानी छिड़क कर शर्मा ने चाय का कप थाम लिया। चटखारे लेकर चाय पीने लगा और बड़बड़ाया...। "मेहनत की चाय का स्याद ही कुछ और होता है।"

ढाबे के दोनों लड़के खाने की तैयारी में व्यस्त थे। एक यात्री बस आकर रुकी तो शर्मा ने तुरंत प्रीतम सिंह के सामने प्रश्न फेंक दिया।

"सरदार जी, गाहक आ गए... दोपहर को रोटी खिलाओ तो सेवा करुं। तुम्हारे लड़के तो काम में लगे हैं।"

"चल खिला दूँगा...पहले ग्राहकों को देख।"

सुनते ही शर्मा सजग हो गया, "आओ...आओ....चाय...परांठा... आमलेट. .ठंडा...बैठो, बैठो। एक दम रेडी...देरी का काम यहाँ नईं है।"

वह कुर्सिया। सीधी कर आर्डर लेने लगा। उसकी चपलता देखते ही बनती थी।

□

कुमार दुकान में कुर्सी पर जम गया। आज महूर्त का दिन है, अच्छी बिक्री होनी चाहिए। उसे याद आया फर्स्ट इम्प्रेशन इज़ दा लास्ट इम्प्रेशन। हर जाने-आने वाले को वह बड़ी हसरत भरी निगाहों से देखता और सोचता शायद वह कुछ न कुछ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खरीदने उसके पास आ रहा है। पर वो तो सामान्य आवाजाही वाले लोग थे...कुमार को निराश कर के आते-जाते रहते।

एक ट्रक रुका, ड्राइवर सरदार ने ढाबे वाले प्रीतम सिंह से दुआ-सलाम की, प्रीतम सिंह उसे इधर ही ले आया। गुरदेव सिंहा, "आपने मुण्डे ने दुकान दा महूर्त कीता ऐ। कुछ वटक करा। (अपने लड़के ने दुकान का महूर्त किया है, कुछ वसूली करा।)

"लौ जी सिंह साब...तुसी बड़ी गल कीती। ल्या भई पुत्तर इक फैन बैल्ट दे नवे माडल दी...दो हैड लाइट बल्ब....होर छे...शाफ़्ट दे बोल्ट वी दे दे। इद्दाकर, जोड़ा आयल फिल्टर दा वी दे दे....अग्गे जा के आयल पल्टी कराना पैणए।"

(लो जी सिंह साहब...अपने बड़ी बात की। लाओ भाई, बेटे एक फैन बैल्ट दो, नए मॉडल की...दो हैड लाइट के बल्ब...और छः शफ्ट बोल्ट भी दे दे। ऐसा कर, आयल फिल्टर का जोड़ा भी दे दे...आगे जाकर आइल बदलवाना पड़ेगा।)

गुरुदेव सिंह ने साथ ही सौ का नया नोट काउण्टर पर रख दिया। और बता कितने देने हैं?" कुल सामान की एक सौ तीन रुपये की पर्ची वनी। कुमार ने कहा। "जी हो गया।"

"ओ इद्दा किद्दा हो गया, ऐ लै पुत्तर, खुल्ले तिन रुपये। अज महूरत दे दिन तेरे नाल वणजार करनी है। (अरे, ऐसे कैसे हो गया? ये ले बेटा खुले तीन रुपये। आज महूर्त के दिन तेरे साथ व्यापार करना है।)

फिर धीरे-धीरे सारे इलक्ट्रीशियन और मिस्त्री आने लगे। कोई स्थानीय ट्रक वाला या किसी के जान-पहचान का ट्रक आता तो वो उसे बताते, कुमार मोटर्स का महूर्त हुआ है। चलो कुछ बोहनी बट्टा करवाओ। कुछ न कुछ सभी अपनी ज़रूरत का या भविष्य की ज़रूरत के लिए खरीदकर ले गए।

पुनिया।, दौड़ता हुआ आया, "कुमार तेरा फोन है...पेट्रोल पंप पे।"

"मेरा फोन...?"

"तेरे पिता जी का है।"

"पुनिया।, जरा दुकान देखना मैं बात करके आता हूँ।" कुमार पेट्रोल पंप की ओर चल दिया।

"शर्मा जी प्रणाम...।"

"प्रणाम...प्रणाम...अरे, अभी यहीं बाइपास पे बैठा है। नौ बज लिए, वहाँ घर पे पिताजी परेशान हो रहे हैं, ले बात कर।"

"हलो...पापा जी।"

"बेटा, अब दुकान बढ़ा दे...खाना नहीं खाना क्या?"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"बस पापा जी आ ही रहा था।"

"आजा बेटा... ।"

"थैंक्यू पण्डित जी...फोन के लिए।"

"बेटा, टैम से दुकान खोलो और टैम से बंद करो। सारी कमाई महूरत के दिन ही करेगा क्या....और दिनों के लिए भी कुछ छोड़ दे।"

"ठीक है, पण्डित जी।"

"और देख, यहाँ कोई परेशानी हो तो सीधा चला आइयो। कोई तंग करे तो बतइयो। तेरे बाबूजी ने ध्यान रखने को कहा है।"

"जी, ठीक है।"

दुकान बंद करके कुमार ने घर की राह ली। घर में सभी प्रतीक्षारत थे।

"बेटा...इतनी देर कर दी, पिता जी ने आते ही पूछ डाला।"

"हाँ पापा जी, वो ग्राहक आ रहे थे। नयी दुकान देखने ही ट्रक वाले आ रहे थे। बोहनी कराने के चक्कर में कुछ न कुछ लेकर ही गए। कुछ लोग आइटमों के रेट पूछ रहे थे। टाइम तो लगना ही था।"

"कुछ बिक्री बट्टा भी हुआ क्या।"

"हाँ पापा जी, हज़ार से ऊपर बिक्री हुई। अभी रुपये गिने नहीं हैं।"

"उसमें बचत के कितने हैं?"

"पता नहीं...अभी पूरा मीजान फैलाऊंगा। पर लगता है अच्छी बचत है। सारे आइटम ज्यादा लाभ वाले ही बिके हैं।"

"चल ठीक है। हाथ-मुंह धो और खाना खा ले। बहुत थका-थका-सा लग रहा है। इतनी जान मारी भी अच्छी नहीं, कुछ अपनी सेहत का भी ध्यान रखना जरूरी है।"

"जी...पापा जी।"

खाना खाकर हिसाब छांट डाला। चार सौ रुपये का लाभ था। कुमार बहुत ही उत्साहित हुआ। घर वाले भी प्रसन्न हुए माँ ने दुआएं दीं, हलवा बनाया, भगवान को भोग लगाकर सभी को दिया। कुमार ने सोचा एक अच्छी शुरूआत शायद यों ही होती होगी।

सुबह उठते ही माँ का उलाहना सुनाई पड़ा, "आज सूरज कहाँ से उगा बेटा-देर से उठने वाला आज इतनी जल्दी। अभी तो मैंने अंगीठी भी नहीं जलाई।"

"लो, मैं जला देता हूँ।"

"नहीं, मैं तो रात को ही अंगीठी तैयार करके रखती हूँ। बाहर रख के नीचे से तीली दिखा दे। बस अभी तैयार हो जाएगी।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"आप पराठा बना देना...खाना मैं दोपहर को घर आकर ही खाऊंगा।"

"बस बेटा...तू नहा के आ। नाश्ता तैयार मिलेगा।"

सात बजे बाइपास अभी उठ कर ही चुका था, कुमार ने दुकान खोल ली। ढाबे वाला मोटा मस्तान आ गया।

"चलो, अच्छा हुआ तू आ गया। सुबह से छोकरों के साथ सिर खपाई के सिवा कोई काम नहीं है। चलो बताओ नाश्ते में क्या लोगे। अण्डा, आमलेट...परांठा।"

"कुछ नहीं मस्तान जी। मैं नाश्ता घर से कर के आया हूँ।"

"लो, क्या फैदा तेरे दुकान खोलने का। मैं तो उम्मीद लगा के बैठा था, कुमार आएगा बोहनी कराएगा, बड़े घर का लड़का है। बोहनी अच्छी होगी तो दिन भी अच्छा गुजरेगा। पर तूने तो पहले दिन ही नाट मार दी!"

"नाट मार दी मतलब, कुमार ने पूछा।"

"नाट मार दी मलतब, उम्मीद के पहले ग्राहक के मुंह से न निकली तो समझो आज लागत के पैसे भी नहीं निकलने के।"

"मस्तान जी ऐसा नहीं होता। अभी देखना ग्राहक आएंगे और तुम्हारा सारा सामान बिक जाएगा।"

"चलो, जो होना है, सो होना है। तेरी एक बात अच्छी है, गुड़ नहीं देता तो क्या हुआ गुड़ जैसी बात तो करता है।"

दो घंटे बाद मस्तान हाजिर था, "ले कुमार...आमलेट खा...चाय बन रही है।"

"मस्तान जी, मैं बाहर का नहीं खात। आप तकलीफ न करें।"

"देख कुमार...एक तो ये आप-आप करना छोड़ दे। मैं इतने मान से तेरे लिए आमलेट बना के लाया....अब नखरे मत कर। मैं तेरे से इसके पैसे नहीं ले रहा सारा बाइपास जानता है, मस्तान अपने बाप को भी मुफ़्त की चाय न पिलाए।"

"फिर आप मुझ पर इतने मेहरबान क्यों।"

"लो कहता है, मेहरबान क्यों? सुबह आते ही तूने कहा था न आज इतने ग्राहक आएंगे के सामान ही खतम हो जाएगा। बस-दो-तीन बसें लग गईं, दस-बारह कारें, हो गया काम। बहुत-से ग्राहक तो लौटाना पड़े।"

"अरे, तो लौटाए क्यों?"

"ये ढाबा है! ताज़ा लाना, ताज़ा बनाना। बस साठ-सत्तर आदमी का इन्तज़ाम होता है दिन भर के लिए। सारा खतम, अब जा रहा हूँ सामान लेने। ये दो अण्डे तो मैंने बचा लिए थे तेरी मुबारक जबान के लिए। रोज ऐसे ही बोल दिया कर।"

साथ चाय पीकर खुशी-खुशी मस्तान शहर चला गया। इधर बाइपास अपनी सुस्त रफ़्तार में घिसट रहा था। दसियों लड़के ढाबे की कुर्सियों पर जमे थे कि अचानक शोर सुनकर कुमार दुकान से बाहर निकला।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

□

सूरज और सामने रेडियेटर वाले का लड़का भिड़े थे, ''बहन... तूने बहन की गाली क्यों दी।''

''देख कैसा बहन... है! खुद साला बहन की गाली दे रहा है, कहता है बहन की गाली क्यों दी।''

''हरामजादे! तू सच-सच बता तूने गाली वाली गाली दी थी, के असली बहन की गाली दी थी?''

''अबे, गाली तो गाली है। असली-नकली क्या कर रहा है? ये क्या सिपेयर पार्ट हैं? आया बड़ा असली बहन की गाली दी।''

''देख, ज्यादा बकवास तो करियो मत। साले, असली बहन की गाली देगा तो तेरा जबाड़ा तो तोड़ना ही पड़ेगा।''

''तू बहन...जबाड़ा तोड़ेगा और हम चुप रहेंगे। हमने चूड़ी पहन रखी हैं क्या?''

''फिर तूने गाली दी...ले।'' सूरज ने उसके घूंसा जड़ दिया।

दूसरे ने गिरेबान पकड़ के सूरज को खींच लिया, ''अब तो पमाड़ा होने ई दो। तू बहन...ऐसे मानेगा भी नहीं।''

दोनों गुत्थम-गुत्था हो गए। जमीन पर खींचा-घसीटी हो गयी। कमीज़ों के जेब और बटन टूट गए। तभी सूरज का सर शायद पत्थर से टकराया। वह चिल्लाया। ''अरे मर गया रे।'' उसकी पकड़ ढीली हो गयी। दूसरा छिटक कर अलग हो गया और अपने कपड़े संभालने लगा। तब तक कुमार वहाँ पहुँच गया था।

''अरे भाई, लड़ो मत...यार, तुमने सबने यही रहना है।''

शर्मा तुरंत बोला, कुमार, ''तू रहने दे, ये इनके रोज के रांड रोजने हैं।''

''शर्मा तुम यह क्या कह रहे हो।?'' तुम्हें चाहिए था इन्हें छुड़वाते।

''हाँ, छुड़वाता और अपनी ऐसी-तैसी करवाता। ऐसे चूतिया शिकारपुर में होंगे बाइपास पे नई हैं।''

तब तक सूरज भी उठकर आ गया था। सीधे रेडियेटर वाले के लड़के से बोला, ''इतनी जोर से लग गयी।''

''अबे तो तेरे लगी है...हमें नहीं लगी क्या। कपड़े और फाड़ दिये? मेरे पास

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तो दूसरी बुकसैट (बुशर्ट) भी नई है।

"तो हमपै बजाजी की दुकान खुल रही है? देख, पूरी की पूरी जेब उखाड़ गेरी। बहन...हमारे दो रुपये पता नहीं कहाँ गिरे?" "वह इधर-उधर नजर मारने लगा..." वो पड़े। उसने जाकर दो का नोट उठा लिया। फिर वह कुमार से मुखातिब हो लिया।

"कुमार, यार चा पिला दे। सिर में बड़ी जोर की लगी है, सिर घूम गया।" सूरज सिर पकड़ कर कुर्सी पर बैठ गया।

कुमार ने मस्तान को कहा, "इनको दो कप चाय दे दो।"

"अरे रहने दो, इनमें कोई नहीं मरेगा।" मस्तान ने वहीं से हाँक दी।

"मर साले तू....मरें तेरे होते सोते, हम क्यों मरें?" तेरे को कहा है चाय बना तो चाय बना। तू क्यों जला जा रहा है? तेलची का तेल जले मसालची की....।" सूरज मस्तान पर बिगड़ पड़ा।

"सूरज, बैठ जा...अब उससे मत भिड़। मस्तान जी, ऐसा करो इन सबको चाय पिला दो, मेरी तरफ से।"

मस्तान ने बुड़बुड़ाते हुए जोर-से चाय का पैन भट्टी पर रखा और चीनी-पत्ती झोंकने लगा। कुमार भी वहीं कुर्सी पर बैठ गया।

"भाइया, सुनो, तुम लोग छोटी-छोटी बातों पर मत लड़ा-झगड़ा करो।"

सूरज थोड़ा तेज हो गया, "ये छोटी बात है....इसने बहन की गाली दी।"

"अरे यार, सारा दिन तो तुम लोग बात बे। बात खूब धड़ल्ले से माँ-बहिन की गालिया।, स्त्री अंगों के नाम उनके साथ क्रिया, विशेषण, अतिशयोक्ति और जाने क्या-क्या जबान से ऐसे निकालते हो जैसे पान खाकर पीक की पिचकारी, फिर लड़ाई का मुद्दा गाली को कैसे बना सकते हो।"

"बई, ये बात तो बिलकुल ठीक कही है कुमार ने। बात बेबात गाली का क्या, मतलब है। खुद लड़ौ मरौ, माँ बहनन को क्यों बीच में लामैं। सुनौ...आज ते बाइपास पै गाली बंद।" शर्मा ने फैसला दे दिया।

"अबे ओ, गाली बंद के....वहाँ पंचायत मत कर, ले चाय दे सबको।" मस्तान ने शर्मा को लगभग झाड़ दिया।

"आया उस्ताद जी।" शर्मा लपक कर गया और चाय की ट्रे उठा लाया। सबके सामने कप रख दिए। कपों में आधा-आधा कप चाय थी। रेडियेटर वाले के लड़के ने मस्तान से शिकायत की।

"क्यों भई, तेरे को हाप कप चाय कही थी, के पूरी।"

"अबे पी ले....हाप और पूरी मत कर। दुकान पे बाप-बेटा एक चाय मंगाते

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हो, दोनों पीते हो। यहाँ मुफ़्त की है तो पूरी चाहिए।'' मस्तान अपनी अकड़ से बोला।

तभी भगवान सिंह आ गया, ''चल उठ कुमार...तू भी इनमें मिल गया। बाबूजी से कहूँगा, लौंडा बिगड़ रहा है बाइपास पे। चल शाफ्ट का बैरिंग, स्लीव, रबड़ दे गाड़ी छाता में खड़ी है।''

कुमार उठ लिया...पीछे से भगवान सिंह बोलता हुआ आया, ''बेटा, अपनी गद्दी पे बैठ....गद्दी दबे की। इन लौंडों-लपाड़ों से तूने क्या लेना है? न तेरे जोड़ के, न तेरी बिरादरी के, न तेरे गाहक...फिर। वैसे ई खामखा।''

भगवान सिंह ने सामान के पैसे दिए और चलने लगा तो बोला, ''बेटा, बुरा मत मानना, आदत है न भौंकने की। साला किसी का बुरा हमसे देखा नहीं जाता। तू भले घर से है, भलमानसों की तरह रह। नहीं तो देख ले बाबूजी को कह दूँगा, फिर मत कहना, बताया नहीं था।''

□

कुमार दोपहर को घर जाकर जल्दी से खाना खा आया। कहीं पीछे से कोई ग्राहक न आ जाए, पर लौटते ही पप्पी इलेक्ट्रीशियन आ गया, ''डायनेमो का आरमेचर है।''

''हाँ है।''

''नये मॉडल का।''

''नये...पुराने दोनों मॉडल का है।''

''कितने का है?''

''एक सौ साठ का।''

''तू कहाँ चला गया था?''

''मैं...कहीं नहीं, बस पन्द्रह मिनट रोटी खाकर आया हूँ।''

''तेरा काम पैंतीस है।''

''ऐसा क्या हो गया...पप्पी भाई?''

''देखा, नुकसान हो गया ना, पूरे साठ रुपये का। आर्मेचर तो सौ रुपये का आता है दिल्ली से, एक सौ साठ का मजे से बिक जाता।''

पीछे से चुन्नी ने आवाज लगाई, ''पप्पी का बाप इसकी माँ की हैवी माडल

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ड्राइव कर रहा था। [illegible] आर्मेचर, सो हमने सोचा कुमार नया लौंडा है इनका आरमेचर ज्यादा जोरदार होगा। तू तो था नहीं सो बेचारे ने कामीटेटर घिस के वही चालू कर दिया।''

''देख बे, दो के बीच में बोलने वाला चूतिया होता है। तेरे से किसी ने पूछा।?'' पप्पी बिगड़ गया।

''बिलकुल ठीक कह रहा है। दो के बीच में बोलने वाला चूतिया नहीं, महाचूतिया होता है, साथ में फुद्दू फगवाड़े का। मैंने तुझे कुछ कहा... कुमार से बात कर रहा था? तू बीच में क्यों बोला।''

''और सुनाओ कुमार साहब, बिक्री-बट्टा ठीक चल रहा है न...चलो आपके आने से एक बात तो अच्छी हुई। बाइपास पे पढ़ा-लिखा कोई तो आया। नहीं तो यहाँ सारे....।'' चुन्ने ने अपना अंगूठा जीभ पर लगाकर अपनी दूसरी हथेली पर ऐसे जमाया जैसे अंगूठा निशानी लगा रहा हो।

पप्पी भड़क गया, ''तू जा के अपने पिंचर लगा....सिलोचन देख, पार्ट में तेरा क्या लेना-देना।''

''अबे ओए, सिलोचन के...। ज्यादा सगा मत बन... सारे डुप्लीकेट कार्बन, प्वाइंट और बल्ब तू खुद अपने पास रखता है। यहाँ किसे बेवकूफ बना रहा है?'' कुमार, दो पैसे मत कमाना पर इसे कोई सामान मत बेचना, ये साला बल्ब ले जाएगा, फिर डिब्बी में फ्यूज बल्ब ला के वापस करेगा, गाहक ने लिया नहीं। एक दिन इसे जाट के ने मारा होता, वो तो हमने बचा लिया।''

''अबे तू क्या किसी को बचाएगा? तू अपनी खैर मना। वो दिन भूल गया जब पंजाब की लांग चेसी आयी थी पिंचर लगवाने। तूने खोल के ट्यूब में हवा भरते-भरते पांच सात सुइयां मार दीं।''

''उसने कैसी गर्दन पकड़ी थी तेरी....साले दिल्ली से छः की छः नयी ट्यूबें डलवा के चला हूँ...तू कहता है ट्यूब छनी हुई है। तेरे को शर्म नहीं आती। अपनी पुरानी ट्यूब बेचने के लिए उसकी नयी ट्यूब बर्बाद कर दी। ये साली कौन-सी इनसानियत है। हमें कहता है हम डुप्लीकेट माल बेचते हैं।''

''पप्पी बस...बहुत हो गया। अब निकल ले पतली गली से...तू साले यहाँ आया क्यों, सड़क पार करके? अपनी तरफ ही रहा करा फूंस बराबर झोंपड़ी मियां मोहल्ले दार।''

''ओ देखो, ये बाइपास के मालिक हैं। सड़क पार करके मत आया कर। अबे घर में रहा कर और बाप के साथ बकरे काटा कर साथ में बड़े की बोटियां मिला कर बेचा कर। तुझे वही अच्छा लगता है, किसी को पता भी नहीं चलता। यहाँ कोई तुझे बहुत मारेगा किसी दिन।''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"अबे टल जा लप्पू, नईं तो लांप दूँगा टैर वाली छुरी से। साले हम कुरैश हैं, मिंट नई लगेगा, अंतड़ियां संभालता फिरेगा।"

"तुम साले यहाँ रह क्यों गये? चले जाते पाकिस्तान। तुम्हारे लिए वही जगह ठीक थी।"

"भैन की...पाकिस्तान की और पाकिस्तान भेजने वाले की। हम यहाँ के बादशाह हैं और यहीं रहेंगे। पाकिस्तान जाओं तुम, यहाँ डर के मारे आये क्यों? साले हमने तुम्हें पनाह दी, तुम हमें ही निकालने की बात कर रहे हो।"

पप्पी जोर से हंसा, "ओ शकल देखो बादशाह की। एक पेंदी के अलावा दूसरा बर्तन नईं है। उसी में बनाना, उसी में खाना, उसी में ट्यूब का पिंचर चैक करना। साले बने बादशाह के खैरे...।"

"अरे कुमार सुन, इसके बाप से पूछो तो कहेगा.... अरे हम फ़्लोर मिलें वहाँ पाकिस्तान में छोड़ के आए हैं। फ्लोर मिलें, समझा ना। इसकी माँ वहाँ हाथ की चक्की में घर-घर आटा पीसती थी। चुटकी-चुटकी पिसाई इकट्ठा करके तो शाम को रोटी बनती थी। ऐसी फ्लोर मिलें छोड़ के आए हैं।"

"अबे, तू वहाँ देख के आया था, हाथ की चक्की के बच्चे। तेरा बाप वहाँ चक्की खूंटता था?"

"कुमार, चुन्नी के लिए बाइपास पे जिससे मर्जी पूछ ले, सब बता देंगे। गपोड़ी नम्बर एक, साला मूत के आ रा होगा पूछो तो कहेगा, बौम्बे गया था... अबकी मोटा चक्कर मिल गया था।"

"इससे पूछो मोटा चक्कर काय का मिला, एक ट्रक का कण्डक्टर बीमार पड़ गया, तो वो ले गया इसे ऐवजी पे। खाना और दो रुपये रोजिनदारी। एक बार गया तो अब रोज बौम्बे के चक्कर ई गाता रहेगा। पूछ इससे कोसी के आगे छाता भी गया है कभी।"

कुमार अब तक पक चुका था, "पप्पी-चुन्नी बंद करो यार, आपसी बातों में माँ-बाप तक को घसीट लाते हो। कुछ तो सोचो।"

"अरे, जो कहेगा उसे सुनने की बर्दाश्त होनी चाहिए। ये क्यों तुझे चूतिया बनाने आया था? हमारी सैड के लोगों को कोई गलत नजर से देखेगा तो....आप तो जानते हो। इसे कहो अपनी सैंड पै रहा करे।" चुन्नी बेशर्मी से बोला।

"ले रख ले अपनी सैड...साले अब अइयो हमारी सैड। तू ई देखा है अबकी।" पापी कहता हुआ अपनी साइड चला गया। साइड मतलब सड़क के इस ओर व उस ओर।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

□

शाम ने आंचल पसारना शुरु किया। कुमार दुकान से जिस समय बाहर निकला, ऐन उसी समय शर्मा झाडू बुहारने लगा था। धूल का गुबार उठा, कुमार ने टोका।

"शर्मा जी... आहिस्ता। यहाँ और लोग भी रहते हैं भाई।"

"अभी लो बौस, तुमने बड़ी फिकर करी। एक मिंट में धूल बंद, पहले पानी मार देता हूँ।" वह पानी की बाल्टी उठा कर छिड़काव मारने लगा।

"बौस, बस अब धंधे का बखत हो लिया। खटियां बिछ जाएंगी, मेज-कुर्सी जमा के, चारपाई पे फट्टा रख के, सब मामला एकदम फिट। अब गाहक आयें और धंधा चले।"

"पर अभी तो गर्मी और उमस है।"

"अभी देखते जाओ, सब उड़न छू हो लेगा। पउए बाज आए नई के चारों बगल को सुन लेना तीतर, मुर्गा, आमलेट, बरफ, पानी। बस बाइपास नई लौंडिया के तरह जवान हो लेगा।"

मिट्टी की हल्की सोंधी खुश्बू वातावरण में बिखरने लगी थी। कुमार एक कुर्सी लेकर दुकान के सामने ही बैठ गया तो मस्तान भी दो आधे कप चाय लेकर वहीं आ गया।

"ले कुमार, चाय पी।"

"मस्तान जी, आपने कष्ट क्यों किया। मैं चाय का आदी नहीं हूँ।"

"अरे, तो पउआ मंगाता हूँ। ओए शर्मा, जा कुमार के लिए पउआ ले आ, पैसे गल्ले में से ले ले।"

"अरे रहने दो मस्तान जी...मैं चाय ही पी लेता हूँ।"

"हाँ...अब आए न लाइन पर। कुछ बिक्री-बट्टा हुआ।"

"हाँ...थोड़ा बहुत हुआ तो है।"

"बस, यहाँ ऐसे ई चलेगा। परसों मंगल है, तब रौनक होगी बाइपास पे और धंधा भी। ये सामने बैठी हैं न माँगने वालिया।? इनको देखना, कैसे माँगती हैं।"

"ये कौन हैं?"

"हमारी तुम्हारी तरह इनसान हैं और कौन हैं? बेचारी माँग मूंग के गुजारा करती हैं। उनके पास गोह है। वो नेवले जैसी, ये पालती हैं। नर की कमर में रस्सी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बांध के ऊंचे रस्सा फेंककर कर कमंद डालते हैं। फिर चढ़ जाओ और चोरी कर लाओ। इनका यही धंधा है।''

''जब चोरी करके काम चल जाता है, तो माँगती क्यों है।''

''यार कुमार, तेरे पास कितने सवाल होते हैं? ये क्यों है, वो क्यों नहीं है? अरे, ये भी धंधा है...देख, उधर देख, सब सालियां अपनी कमीज के बटन खोले रहती हैं। मांगती है ड्रैवरों से...तेरी कंटीली मूछों की खैर...तेरी आस औलाद सलामत रहे। ड्रैवर साले रुपया, आठ आना डाल देते हैं, इनके पम्पाड़ों के बीच और हाथ भी लगा लेते हैं, इनका भी काम हो गया उनका भी।'' मस्तान मूंछों में मुस्कराया।

''अरे, ये तो बदफैली है। गलत बात, ड्राइवरों को ऐसा नहीं करना चाहिए।''

''हाँ, अब जब तू देखे तो रोक लियो ड्रैवरों को। कैसी बेवकूफ की बात करता है। उसे देख वो जो लड़की है इनके साथ, कैसी गोरी चिट्टी है।...ये भी इनका मूत है क्या? ये किसी पंजाब के ड्रैवर की करतूत है। साला अपना बीज छोड़ गया।''

''ये रात को भी यहीं रहती हैं?''

''न, बस अब चली जाएंगीं। अब तो यहाँ शराबियों की गाली-गलौच, गिरने-संभलने का झमेला चलेगा।''

इतनें में मस्तान का ग्राहक आ गया, वह चला गया। कुमार को गहरे सोच में छोड़ गया। मस्तान कितना सच, कितना झूठ कहता है। क्या मुझे भी यह सब झेलना होगा? इस सबका अंग बनना होगा? फिर वह स्वयं को दिलासा देता, इस सब का सामना करना होगा। बाइपास जवान हुआ तो कुमार घर चल दिया।

□

दो दिन बाद गर्मी बढ़ी और बरसात शुरु हो गयी। पेड़ के नीचे बैठी माँगने वालिया। भीगने से बचने के लिए इधर-उधर आसरा तलाशने लगीं। उनकी जवान लड़की ने कुमार से पूछा, ''अंदर बैठ जाऊं।''

''बैठ जा।'' कुमार ने उसे देखे बिना कहाँ लड़की खुद को समेट नीचे रखे बोल्टों के रखने के लिए प्रयोग होने वाले लकड़ी के खानों पर बैठ गई। क्या नाम है तुम्हारा, कुमार ने पूछा।''

''फूली।''

''फूली, मतलब।''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

‘‘फूलमती।’’

‘‘यह तुम्हारी बेटी है।’’

‘‘जी, तिहारी ई है।’’

मेरी...कुमार हड़बड़ा, गया।

कोई पूछै तो योईं कहैं। लड़की बेसाख्ता हंस पड़ी।

कितने बरस की है, इसका नाम क्या है।

आते कातिक में पांच ही जाएगी। याकौ नाम है गिलैहरी।

गिलैहरी, भी काई नाम हुआ। गिलैहरी बोल्टों से खेल रही थी।

क्यों न होय नाम, याकौ है न। जब ई घुटमन चली तो लपक कै गिलैहरी की नाई यहाँ वहा सरक जाती तौ हमनै याकौ नाम गिलैहरी धर दियौ।

पांच साल की होने पर इसे पढ़ने के लिए स्कूल में डाल देना।

ये कहाँ जाएगी स्कूल।

क्यों....क्यों नहीं जा सकती। तुम दाखिला कराओगी तो जरूर जाएगी।

कुमार ने गिलैहरी की ओर चुटकी बजाई...क्यों गिलैहरी...पढ़ने जाएगी न!

गिलैहरी ने अपनी उंगलिया। हथेलियों की तरफ मोड़ कर हथेली आगे कर दी। शक्ल को एक दम निरीह बना लिया और बोली ऐ...ऐ....दे न....पांच पैसे दे...भूख लगी है...भगवान जी देंगे....ऐ....ऐ...दे न... दे दे न... पांच पैसे।

कुमार सकपका गया। उसकी माँ ने डांट लगाई....इनते नई माँगते। कुमार ने गल्ला खोल कर दस पैसे का सिक्का बच्ची के हाथ पर रख दिया। बच्ची ने सिक्का माँ की जेब में डाल दिया।

कुमार, लड़की से मुखातिब हुआ। देखा तुमने....स्कूल की बात करने पर भी यह सिर्फ माँगती है। क्योंकि इसे माँगने के अलावा कुछ भी समझ नहीं है। स्कूल जाएगी तो कुछ सीखेगी, पढ़ लिख कर इसे अक्ल आएगी। तब तुम देखना यह क्या से क्या बन जाएगी।

का बनैगी बाबूजी...राम जाने। हम तो भीख माँगते पैदा भए भीख माँगते मर जांगे।

तुम इसे पढ़ाने की ठान लो तो बहुत कुछ बदल जाएगा। कर के तो देखो...नहीं तो मरना तो सभी ने है, भले पढ़ा लिखा हो या एक दम अनपढ़। आधे घंटे बाद बारिश रुकी तो वह चली गयी। उसके जाते ही सूरज, शर्मा, चुन्नी इत्यादि दुकान में घुस आए।

‘‘अरे वाह कुमार, आज तौ...।’’ शर्मा ने रस लेते हुए कहाँ

‘‘क्या आज तो?’’

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"आज तो चैंचरी संग खूब घुटी, बरसात होते ई उसने फैदा उठाया और घुस आयी तेरी दुकान में।" चुन्नी ने 'खूब घुटी' बड़े नाटकीय लहजे में कहाँ

सूरज पीछे से कहते हुए आया, "अरे, रोज पेड़ के नीचे से कुमार को ताड़ती रहती है। आज तो मार गयी मोर्चा। कुमार, सच-सच बता? क्या-क्या मजे लिए।"

"पहले तो तुम दुकान से बाहर निकलो, भीड़ मत करो। काउण्टर पे खड़े हो के ढंग से बात करो। यह क्या बकवास लगा रखी है?" कुमार ने जरा गुस्से से कहाँ

"अच्छा जी, हम बकवास करें? वो साली हमें तो घास भी नहीं डालती और तेरी दुकान में मजे से घुस आयी।" शर्मा ने शिकायत की।

चुन्नी ने उसके सर पर धप्प लगाया, "अरे वो है भी कुमार के लायक। तूने अपनी शकल भी देखी है शीशे में?"

"तूने बिलकुल ठीक कही।" सूरज बोला। "एक दिन शर्मा ने उसे बुलाया आजा चाय पी ले। उसने इसकी सुनी बी नई ये फ़िर कत्ता से बोला, अरे कभी हम्पै बी नजर मार लिया कर, हम बी तेरे आसिक हैं।"

वो चमक कै बोली, "अभी बताऊं मेरे भइया के सारे, दारी के, मारे चप्पलन के मौह लाल कर दऊंगी, बनौ आसिक को....।"

"अबे, वो साली क्या बोलेगी। वो तो खुदई चालू माल है। अभी ब्याह भी नहीं हुआ है और देख लो, तीन-चार साल की छोरी गोद मैं है। बिना...छोरी हो गयी क्या? इसकी माँ ने खूब मारा, पर हराम जादी ने बता के नई दिया किसकी है। शर्मा ने रहस्य उद्घाटित किया।

"करी न वोई आडुओं वाली बात, साले दुनियां को पता है। वो मोटर साइकिल पे बनिये के लौंडे ने इसके खूब चक्कर लगाए हैं। खूब माल खिलाया है।" सूरज ने पूरी कहानी ब्यान कर दी।

"कौन-सा बनिये का लौंडा?"

"बस स्टैंड पै मिठाई की दुकान है जिसकी।"

"अरे वो मोटा। उसकी तो सादी हो ली। साले पै दो लौंडे भी हैं।" चुन्नी ने आश्चर्य व्यक्त किया।

"हाँ...वोई। सादी हुई है तो क्या हुआ, यहाँ-वहाँ मौह मारने का लैहसंस थोड़े न कैंसल हो गया। यहाँ तो सबनै कच्चे रूट के पक्के परमट बनवा रखे हैं। एक कुमार है, इस पै पक्के रूट का कच्चा परमट भी नई ऐं।" सूरज खिल्ली उड़ाता हुआ बोला।

"अबे ओए, आर.टी.ओ के मूत, चल जहाँ से बनवाऊ तेरा कच्चा-पक्का परमट। पंचायत बरखास्त और जा फैन बैल्ट सेवासिंह को देकर आ गाड़ी पीछे खड़ी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

है। उसके साथ बैल्ट लगवा के चला जइयो शेरगढ़ का चक्कर है। वापसी पे जमना रेत भरवा लियो। तेरा बाप वहीं पे रेत भरता है न, पैसे मत दियो....कह दियो घर के लिए जा रही है।'' प्रीतम सिंह ने आते ही हुकम सुना डाला। सूरज ने विरोध किया।

''चाचा, मैं नईं जा रहा, सुबह से बोहनी-बट्टा भी न हुआ और तुम बेगार लगवा रहे हो।''

''देख ले बेटा, अभी मना करेगा, फिर रोज तेरा काम पड़ना है। फिर उरली तरफ आने का तेरा लैसंस कैंसल हो जाना है, देख ले।''

''है....चाचा दो टिरक तो पहले भरवा लाया। रेत कितनी लगेगी।''

''चला जा बेटा...रेत कोई खाने की चीज थोड़ी न है। बच जाती है तो यहीं पड़ी रहती है जिसको जरूरत हो उठा ले जाता है, बाबे का माल समझ के। उस पुन्न में तेरा भी तो हिस्सा है।'' प्रीतम सिंह बात बनाने में माहिर है।

''ला...बैल्ट दे...और देख चाचा, देर-अबेर हो जाएगी तो रोटी यहीं आ के खाऊंगा।''

''अबे खा लियो...पहले रेत का चक्कर तो लगवा। कुमार, तू क्या कह रहा था?'' प्रीतम सिंह उधर हो लिया।

''चाचा, एक लड़का आया था। पान की दुकान खोलने के लिए दुकान माँग रहा था।'' कुमार ने प्रीतम सिंह से कहाँ

''फिर... तूने क्या कहा?''

''मैंने कहा, चाचा से पूछकर बताऊंगा। कितना किराया बताना है''

''हाँ...जे तूने ठीक किया। देख बेटा, ये सारी दुकानें किराए पर चढ़ानी हैं। दिलबाग और सेवा तो यहाँ होते नहीं, तूने ही सारा देखना है। पढ़ा-लिखा है, तो दिमाग का काम भी किया कर।''

''जी...चाचा जी। आप बता दो, मैं कर लूंगा।''

''दुकान चढ़ानी हैं, पक्के ग्राहक को जो कमा के किराया दे सके। पान वाले को खोखा दे दे। तीस रुपये महीने...वो बिजली का बोले, तो खाली एक बल्ब का उसे दस रुपये महीना बोल दियो। और देख, बिजली के अपने आप मत कह दियो। बस तीस रुपये किराया कहियो, जब बिजली कहे तब कहियो बिजली का। नहीं तो वो खोखा नईं लेगा। दुकान का कहियो चाचा सौ माँगता है, तूने दुकान का क्या करना है? खोका ले ले, तीस में काम हो जाएगा। ठीक है, ऐसेई करके बात करियो।''

''ठीक है चाचा, कर लूंगा।''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"और देख, सारी दुकानें चढ़ानी हैं। अस्सी-नब्बे जहाँ पट जाए तू आप बात कर लियो। मेरे पास आएगा तो मैं सौ रुपये महीना कहूँगा, तू कह दियो मैं कम करा दूँगा। ठीक है ना।"

"जी ठीक है। मैं कर लूंगा, इतनी तो समझ है।"

"तभी तेरे को कहा है...उल्लू के पट्ठे....यहाँ बाइपास पे कोई भी बात हो सारे तेरे को ही पूछने आते हैं। क्योंकि तू काम का बंदा है।"

"चाचा मैं क्या हूँ, अभी तो इंटर भी पास करनी है।"

"बेटा, अंधों में काना भी राजा होता है। इस बात को समझ ले तो तेरे को भौत फैदा होगा।

□

"ओए शर्मा... कहाँ मर गया कुत्ते के लड़के...तेरे को अवाजें मार-मार के तो मेरा गला बैठ जाता है।" मस्तान गुस्से में चिल्लाए जा रहा था।

"उस्ताद, क्यों भौंके जा रा है, वो तेरा बाप टिरक में ग्रीस करने को गया है। साला, तनखा तेरे से लेता है और दिहाड़ी ग्रीस की करता है।" सूरज ने ग्रीस के लिए ट्रक न पकड़ पाने की सारी भड़ास निकाली।

"आ लेने दे भैन के तीतर को...आज ही साले का हिसाब कर के नाक पे मारता हूँ। मैं साला, अकेला कहाँ-कहाँ मरूं!"

"मस्तान, तू कहता रहता है, करता कुछ भी नईं है। देखियो अभी आएगा, ठाठ से चा बना के पिएगा, तू साले बजर बट्टू की तरियों देखता रहेगा।" सूरज ने आग में घी डालने की कोशिश की।

"देख, तू भी देख...आज उसने चाय का फ्राई पैन भट्टी पे रखा नई और मैंने उठा के उसके सिर पे मारा। देख ले तू भी...यही बैठा रहियो...जइयो मत।" मस्तान ने सूरज को पक्का किया।

"मैं कहीं नहीं जा रा...जाने की जरूरत बी नई है। वो आ रा तेरा बाप... देखियों क्या करता है?"

शर्मा ने ग्रीस की बाल्टी पुनिया को थमाई और सीधा भट्टी पे जा के खड़ा हो गया।

"बौस, तुम चहा पिओगे।" शर्मा ने मस्तान से पूछा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

...

"तुमें नई पीनी तो मत पियो...कम से कम मोह से तो फूट पड़ो। हमने तो सुबह से एक भी न पी।" मस्तान को चुप देखकर शर्मा ने कहा और फ्राईंगपैन भट्टी पर रख दिया।

"ओए, ये चाय किसके आडर पे बन रही है...." मस्तान ने सीधे-सीधे शर्मा से पूछा।

"आडर किसका...यहाँ तुझे कोई गाहक दीख रा है क्या....ये तो हम पिएंगे। तुम से पूछी थी तो तुमने तो हाँ-ना करके ई नईं दिया।"

मस्तान ने भट्टी से फ्राई पैन उठाकर सीधा शर्मा के सिर पर मारा, "न तेरा बाप भैन....यहाँ गाय बांध गया है....दो-चार बोरी चीनी डाल गया है। साले, ग्रीस करने जा तो चाय पी के जा, ग्रीस करके आ तो चाय पी।"

गर्म पानी शर्मा के पूरे शरीर पर पड़ा तो वह चिल्लाया, "हरामी, पूरा जला के रख दिया। योंई तेरी चाय नईं पी रए, चौबीसों घंटे काम करते हैं। रोटी-चाय की पहले से तय थी।"

"कुत्ते के बीज....सब्जी मैं काटूं....बनाऊं भी मैं...तंदूर पे रोटियां भी निकालूं तू साले प्लेट में रख के ग्राहक को भी नईं दे सकता, "तो मैंने तेरा आचर डालना है।

"देख बे मस्तान, गाली तो दियो मत...नौकरी करते हैं इज्जत से, गाली खाने की झिलास अपने में नईं है।"

"अबे नईं है झिलास, तो छोड़ दे नौकरी....तेरे बिना ढाबा बंद नईं हुआ जा रा।" मस्तान भी तैश में था।

"तो साले, रख तेरी नौकरी....छोड़ दी तेरी नौकरी, आक थू...ये ले।" कहकर शर्मा ने जमीन पर थूक दिया, "ऐ छोड़ दी मस्तान की गुलामी।" शर्मा ने अपनी बुशर्ट जिसमें कुल दो बटन थे खींचकर वो भी तोड़ डाले और नंगी छाती पर हाथ मार के चक्कर घिन्नी सा घूम गया। सभी को सुनाते हुए बोला, "...मारी पाँच सेर बेच खाई बन्दूख, फिर करेंगे नौकरी ले आएंगे बन्दूख।"

कुमार को पता चला तो शर्मा से पूछा, "अरे?" तूने तैश में काम क्यों छोड़ दिया।

"तैश में नई उस्ताद....मस्तान ने लैनी कर रखी थी।"

"अरे, तो हिसाब कर लिया क्या?"

"वो हिसाब करेगा....पीतम सिंह, कहेगा, नौकरी मेरी करता है के मस्तान की? जब मस्तान के कहने पे नौकरी छोड़ी है तो हिसाब उसी से कर।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"अरे....ये क्या बात हुई?"

"बस, यईं तो बात है। पूरे बाइपास पे येई धंधा है। जिसे न रखना हो कोई बात करके उसको हटा दो, फिर हिसाब मत करौ।"

"तुझे नहीं लगता, तुझे पहले हिसाब करना चाहिए था फिर नौकरी छोड़ने की बात करता।"

"तुम पढ़े, लिखों वाली बात करते हो। यहाँ तुम्हारी बात पे काम नईं चलता। यहाँ तो ऐसे ई चलता है। नौकरी करी, फिर छोड़ दई। लड़े-झगड़े....हिसाब कियौ न कियौ, बस गाड़ी चलती रहे। सब कूं पतौ है, याकै बिगर गुजर न है।"

तभी प्रीतम सिंह आया, "क्यों बे शर्मा? तूने बीच में नौकरी क्यों छोड़ी।"

"देख चाचा.....नौकरी तो हमने छोड़ दी। तुझे करानी है तो मस्तान को निकाल दे, फिर जैसे तू कहेगा....सब काम करेंगे। नांय तो जै राम जी की।" शर्मा ने बेलाग कहा।

□

"चाचा, यार कहीं जगह खाली हो तो देख के बताइयो। लाला की गाड़ी पुल पे पल्टी हो गयी, उसने हिसाब कर दिया।" भगवान सिंह ड्राइवर ने प्रीतम सिंह से बुझे स्वर में कहा।

"नौकरी तो नौकरी, एक लाला की छोड़ी, दूसरे की कर ली। जा चला जा, कोयले वाला लाला ड्रैवर माँग रहा था। पर ये बता, हमने साथ-साथ कोसी आए, साथ-साथ ड्रैवरी करी। वहीं छेदी लाल बिल्डिंग में साथ-साथ रहे। हमारे बच्चे भी आगे-पीछे पैदा हुए, फिर मैं तेरा चाचा कब से हो गया बे?"

"देख चाचा, अब तू जग चाचा ई है। जब से कुमार आया है, बाइपास का ढंग ई बदल गया। तेरे को चाचा, गिर्राज को चाचा, मेरे को चाचा। तू यहीं पे रोज पास है, तो उसकी देखा-दाखी बाकी लौंडे भी तेरे को चाचा कहने लगे। ये पदवी तो कुमार ने दी है, अब संभाले रख।"

"वो उधर चावला ने भी पार्ट की दुकान खोली और उसके बगल को मालक राम मिस्त्री आया है न, पीछे पड़ गए चौधरी साहब हमसे भी कुछ खरीदा करो। बताओं....भतीजे को दुकान छोड़ के इनसे खरीदो...ये क्या बात हुई।"

"जे बात तो तेरी ठीक है यार, पढ़ाई-लिखाई का जे फैदा तो है, बच्चे तमीज

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सीख जाते हैं। हमारे तो पढ़ के ई नईं दिए। वैसे अब बाइपास के भी दिन फिरने लगे हैं। पेट्रोल पंपों के पीछे भी नयी दुकानें बन गयीं। यहाँ मेरी बगल को भी सुरेशचन्द्र बनियां दुकानें बना रहा है।''

''अरे कोई बनाए तेरी बला से, तेरी तो सारी दुकाने चढ़ गयी। तुझे काय की चिन्ता। एक में मिस्त्री आ लिया, एक में डीजल पंप वाला, एक में रासन की दुकान, खोखा तेरा पहले से चढ़ा रखखा है।''

''नई यार, जे बात नईं, दुकान बनेंगी तो खुलेंगी, कुछ कम्पीटीशन भी होगा। थोड़ा रौनक-मेला होगा, तब कुछ धंधा चलेगा; नईं तो यहाँ तो वैसेई बुरा हाल है।''

''कुमार नई दीखा आज, दुकान में कब से ताला लटका देख रहा हूँ।''

''कुमार, अरे वो दिल्ली गया है पार्ट लेने। तेरे को पता है वो पण्डत का न?''

''कौन सा पण्डत, पण्डत तो कैऊ फिरते हैं मारे-मारे।''

''अरे यार हरिप्रसाद, उसने यहाँ सौ गज का प्लाट लिया था। दो कच्चे कमरे डाल के रहने आ गया। शाम को यहाँ भी आता है।''

''अरे वो चोर...जन्म पत्तरी–हाथ देखने वाला। वो तो महा झूठा है।''

''है तो झूठा, पर देख ले, प्लाट भी ले लिया, दो कमरे भी छा लिए, बच्चे भी पाल रहा है। हम साले रात दिन मरें, वो पट्ठा बिना काम किए मजे मारता है।''

''नसीब का खेल है।'' भगवान सिंह ने अपनी उंगली माथे पर फेरते हुए कहाँ नसीब है तो गधे पंजीरी खा रहे हैं, ''हम यहाँ नौकरी को मारे-मारे फिर रहे हैं। चलूं कोयले वाले लाला से मिल आऊं। कुछ न हो तो कायेले में मुंह काला सही, जैसे लाला का वैसे हमारा।'' भगवान सिंह चला गया।

दूसरे दिन पंडित हरिप्रसाद ने पूरा मजमा लगा रखा था। किसी को भेजकर कुमार को भी बुला लिया। जब कुमार पहुँचा तब हरिप्रसाद, मालक राम मिस्त्री का हाथ देख रहा था।

''हाँ भई बोल, क्या पूछना है तुझे?''

''पण्डित जी, आप ही बताओ रोजगार हिल्ले से कब लगेगा?'' मालक राम ने बड़ी दयनीयता से पूछा।

''रोजगार तो जम जाएगा, पर जब तू इसे जमने देगा। तेरा मंगल तुझे कहीं टिकने ही नहीं देता।''

''पर मैं तो पहले जींद में काम सीख रहा था। वहीं पे दुकान खोली। वहाँ पे बहुत दुकान हैं, किसी ने बताया कोसी बाइपास बसना शुरु हो गया है; तो यहाँ चला आया। वहाँ की दुकान तो अपनी ही है।''

''अपनी दुकान से क्या होता है? मंगल से होता है जो होता है। तू अपने मंगल को ठीक कर, नहीं तो वापस जींद की तैयारी कर।''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"तो पण्डित जी, आप ही बताओ, न मंगल को राजी कैसे करूं? मुझे आता होता तो तुम्हारे पास क्यों आता?"

"अरे, वो तो हम करेंगे ही, हमारा काम है। उसका खर्चा-पानी तो तुमैं ही करना पड़ेगा, के वो भी हम से कराओगे, जजमान।"

"पण्डित जी, कितना खर्च है?"

"मीजान लगा के बताऊंगा, ऐसा करना एक-आध दिन में सुबह घर आ जाना। तब आराम से बात करेंगे। यहाँ इन लुक्के लोगों के बीच क्या बता दूँ तुझे? ला पांच रुपये दक्षिणा निकाल, सीधे हाथ से।"

"वो देख कुमार आया।"

"आओ कुमार, लाओ तुम्हारे हाथ देखूं।"

मालक राम ने सवा रुपया ही दिया, पण्डित जी ने कहा, "बस....सवा रुपया...भइया, तभी तो तुम भागे-भागे फिरते हो।, तुम्हारी अंटी से दाम निकल के नहीं देता है। कोई बात नहीं, घर आना।" कहकर सवा रुपया जेब के हवाले किया। तब तक कुमार बोल पड़ा।

"पण्डित जी, मुझे इन हस्तरेखाओं में विश्वास नहीं है।"

"अरे, बैठ तो सही। बिसवास भी हो जाएगा, ला हाथ आगे कर।"

"ऊपर से भगवान सिंह आ पहुँचा, "अरे पण्डत तूने यहाँ भी जाल फैला लिया। इन मजूरों को तो बकस देता। बेचारे रुपया धेली कमाने के चक्कर में घर छोड़-छोड़ के बाइपास पे पड़े हैं।"

"मैं कब छोरों से कुछ ले रा हूँ। कुमार भी मजूर है क्या?" पण्डित खित्तयाना हो आया था।

"कुमार की भली पूछी, स्टेशन मास्टर का लौंडा है और प्रीतम सिंह और मेरा भतीजा। इसने तुझे हाथ दिखा दिए तो भाग जाएगा बाइपास छोड़ के। आजा मैं दिखाऊं तुझे हाथ। चुन्नी ला जरा ताश की गड्डी दियो। बोल, कायका हाथ देखेगा. ..रम्मी, पाए, फ्लैस, भगवान सिंह ने कुर्सी संभाल ली।"

"तुम खेलो तास, मैं चलूं, घर पै थोड़ा काम है।" पण्डित ने पलायन का मार्ग चुनना उचित समझा।

"न हाथ देख ले, काम का क्या है, उमर भर काम ही करना है, ये न तो वो। आजा...हमारे भी पउए के पैसे निकलवा दे।" भगवान सिंह खिल्ली उड़ाता-सा बोला, फिर कुमार से मुखातिब हो लिया।

"कुमार, तेरी परीक्षा कब से है रे। यार, मेरा भतीजा भी दे रहा है इण्टर की परीक्षा, बरसाना में सैन्टर पड़ा है।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"हाँ चाचा, सेन्टर तो मेरा भी बरसाना में पड़ा है। मार्च-अप्रैल में परीक्षा है। पर अभी डेटशीट नहीं आयी। होली बाद आ लेगी।"

"तो तू रोज आना-जाना करेगा के वहीं पे कोई इंतजाम करेगा?"

"चाचा रोज आना-जाना मुश्किल है। पढ़ाई भी तो करनी है।"

"ले, अठारह किलोमीटर ही तो है। बस से आ, बस से जा...आधे घण्टे का रास्ता है।"

"वो तो ठीक, पर बस का क्या भरोसा। किसी दिन नहीं भी गयी या छूट गयी तो दूसरी घंटे भर बाद है। परीक्षा में इतना रिस्क नहीं ले सकते।"

"हाँ यार, बात तो ठीक है। चल, भतीजे को कहूँगा, वहीं का कोई जुगाड़ करेगा।"

□

ये देख ये क्या है...कै रुपये का होगा, कुमार जरा बतइयो।" शर्मा ने एक सिक्का कुमार के हाथ पर रख दिया।

"यह तो क्वाटर डालर का सिक्का है, तुझे कहाँ से मिला?"

"ये अंग्रेज आते हैं न, वो दे जाते हैं....इनके पैसा यहाँ चलते नई, सो फेंक देता हूँ।"

"अबे फैंकता क्यों है, किसी को दे देता। तुझे मालूम है, कुछ लोग अलग-अलग देशों के सिक्के इकट्ठा करने का शौक पालते हैं।"

"हमें क्या पता, यहाँ सुसरा सुबह-शाम पेट-पूजा के बिगर तो कुछ भी सूझ के नई देता है। ये डालर का सिक्का है तो कितने का है?"

"अबे, डालर यहाँ नहीं चलता। ये अमेरिका का है। क्वाटर मतलब डालर की चौअन्नी....समझा।"

"हमें क्या करना है समझ के, ये चलैगी कै पैसे में, ये बता।"

"डालर का नोट चलता है। तीन-चार रुपये में सिक्के कोई नहीं लेता।"

"अभी तो तू कह रहा था। सिक्के इकट्ठे करने वाले ले लेते हैं। तू लेगा क्या?"

"दे जा....पर दूँगा चौअन्नी... और भी सिक्के जो तुझे मिलें दे जाया कर। जितने पैसे का सिक्का हो उतने पैसे तुझे दे दूँगा।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"ये ठीक है....पुनिया से पूछता हूँ...उसपे भी पांच-सात सिक्के घर पे रक्खे हैं।"

"तो तू घर नई जाता क्या?"

"मैं क़हाँ जाता हूँ...मइया-बाप आने ई नईं देते। जाते खैम कहेंगे आटा-दाल ले के आ तो घर आ, नई तो बाइपास पे रह।"

"क्यों झूठ बोलता है यार....पुनिया को आने देते हैं तुझे नहीं आने देते, यह भी कोई बात है।"

"पुनिया छोटा है न....दो-चार साल में उसके लिए भी मनाही हो जाएगी, देख लियो। तू भी यहीं, हम भी यहीं।"

"फिर तो बड़ा मुश्किल होता होगा, सर्दी-गर्मी-बरसात कहाँ सोना, कहाँ खाना? तू ये सब कैसे करता है?"

"अरे, मैं इकल्ला थोड़े न हूँ। सब येई करते हैं। सर्दी में किसी की भी भट्टी के नीचे सो जाते हैं। तुझे एक मजेदार बात बताऊं?"

"एक बेर खूब कड़ाके की ठंड पड़ी। सुसरा कम्पर में दर्द हो लिया। मैं, वो गिर्राज की भट्टी के नीचे जा के सो गया। मेरे संग रात को एक कुत्ता भी आ के सो गया। साले को ठंठ लगी होगी। जा बगल में भट्टी थी, उस बगल तो ठीक-ठीक लगता था पर पीछे पीठ में ठण्ड लगती थी। कुत्ता चिपक के सोया तो पीठ पे भी गर्मी लगी... तब कहूँ जा के नींद आयी। तब से वो कुत्ता मेरे को पहचानता है। उस साले को भी मेरे से चिपक के मजा आया होगा।"

"अबे, तू गंदे कुत्ते के साथ सो गया।"

"तो क्या यहाँ मेरे लिए रेसम की सौर पड़ी भई ही। अरे, जब पैसा अंटी में न होमैं...काऊ ढाबे में काम न करैं और ग्रीस कौ काम भी न मिलै। तो पतौ है तोय, हम साले जंगल हैवे कूं भी न जमैं के भूख लग अवेगी।"

शर्मा तो चला गया, "पर कुमार सोच के सागर में गोते खाने लगा। कितना मुश्किल है जीना। इस बुरे हाल में भी ये कैसे मजे में जी लेते हैं। मैं इनके लिए अगर कुछ कर सकूं तो कोई बात बने, जीवन कुछ सार्थक हो। पर क्या करूं...मैं अपने घर को ही गरीबी की जद्दो-जहद से नहीं निकाल पा रहा इनके लिए क्या करूंगा। चलो देखा जाएगा....वक्त की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी, पर कभी कुछ न कुछ करूंगा ज़रूर। पर ये तो सिर्फ बात कर लेने में ही सन्तुष्ट रहते हैं। सारे द्वंद मुझे ही क्यों खाते हैं? इनको क्या इसका कोई असर नहीं होता। या ये मान बैठे हैं कि जो होगा देखा जाएगा।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

□

"हलौ...एम्बेसेडर का टाईराड एण्ड है?" ड्राइवर काउण्टर पर आ कर बोला। उसके मुंह से कच्ची शराब की बदबू भभके मार रही थी।

"हाँ....है....बूट भी चाहिए क्या?" कुमार ने पूछा।

"चल फिर कोई काम का मिस्त्री बता...गाड़ी पुल की उतराई पे खड़ी है।"

"वो सामने....दायीं ओर जो पेड़ से लटक के बल्ब जल रहा है वहाँ जा के पूछ ले, कार मिस्त्री का...वो अपने आप चल देगा तेरे साथ और जरा जल्दी आना मैं दुकान बढ़ा के जा रहा हूँ।"

"अभी आया भाई...जाना मत, मेरी रात काली हो जाएगी। मैं, बस गया और आया....भाई रात को ही दिल्ली पहुँचना बहुत जरूरी है।"

"ठीक है... मैं इन्तज़ार कर रहा हूँ।"

"मोहन मिस्त्री...कार लेकर आ गया। कुमार टाइराड एण्ड और बूट दे दे।"

"यह लो... पिचासी रुपये हुए।"

"अरे, तुझे अपने पैसे की पड़ी है। एण्ड की चूड़ी फंसी हैं। मिस्त्री कह रहा है बैल्डिंग से निकलेंगी।" ड्राइवर ने शिकायत की।

"अरे, तो मेरे पैसे से वैल्डिंग का क्या मतलब, ये तुझे ले जाएगा...छेदीलाल बिल्डिंग के बाहर वैल्डिंग वाला रात देर तक होता है।" कुमार ने उजर किया।

"अरे, वो खुला न मिला तो मैं क्या करूंगा एण्ड और बूट का।"

"तो क्या रात भर तेरे लिए दुकान खोल के बैठा रहूँ। तुझे लेना है तो ले, नहीं तो छोड़।" कुमार एण्ड-बूट लेकर खाने में वापस रखने चला।

"अरे...अरे ये कैसी दुकानदारी है....तू घर जा रहा है न, तू भी चल, अगर वैल्डिंग वाला खुला मिल गया, तो वहीं तुझे पैसे दे दूँगा।"

"तो ऐसे सीधे-सीधे बोल न....चलो।"

कुमार ने दुकान बंद की, कार स्टार्ट करके...पहिए पर लात मारते हुए धीरे-धीरे चल पड़े।

पहला मोड़ काटा...बस स्टैंड मार्ग पर सामने पुलिस की जीप आ रही थी। पुलिस वाले ने टोका, "अरे कौन है रे" ड्राइवर ने कार की स्पीड बढ़ा दी। कुमार कहता रह गया... एण्ड टूट गया है।" कुमार साइकिल लेकर कार के पीछे भागा। कार नंदगांव मार्ग पे मुड़ गयी। पीछे से पुलिस जीप घूमकर आ गयी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कुमार ने देखा कि कार बस स्टैंड की ओर यू टर्न ले रही है तो बस स्टैंड के बीच से निकल के उस ओर हो लिया। ड्राइवर ने पुलिस की जीप पीछे देखकर और स्पीड बढ़ाई तो कार एण्ड टूटा होने के कारण पेड़ से टकरा गयी। ड्राइवर निकल कर भागा।

कुमार ने सामने खड़े रिक्शे का हैण्डल पकड़ा और रिक्शे को ड्राइवर की ओर घकेल दिया। ड्राइवर धप से सड़क पर गिरा। कुमार ने उसकी बांह मोड़ के उसे काबू कर लिया...''साले, मेरा एण्ड ले के भाग रहा था।''

''मुझे छोड़ दे...ले सौ रुपये ले ले ड्राइवर हड़बड़ी में बोला।'' तब तक पुलिस वालों ने उसे पकड़ लिया।

''कुमार, तू इसके साथ है क्या? पुलिस वाले ने पूछा।''

''नहीं...इसने एण्ड खरीदा था...वैल्डिग वाले के पास जा रहे थे।''

''चल बे, तेरी कार में क्या है....कुमार तू भी आ...दिखा एण्ड है क्या कार में चल वे कार खोल...ले कुमार तेरा सामान उठा और कुछ तो नहीं है।''

''नहीं।''

''चल बे, कार की डिक्की खोल।'' पुलिस वाले ड्राइवर से बोले। कार की डिक्की खुली तो उसमें ट्रक की टयूबों में कच्ची शराब भरी हुई थी। पुलिस ड्राइवर और कार को थाने ले गयी।

कुमार ने सुबह प्रीतम सिंह को सारा किस्सा बताया। प्रीतम सिंह बोला।

''देख कुमार, तू इन चक्करों में मत पड़ाकर... तेरे को क्या जरूरत थी हीरो बन के ड्राइवर को पकड़ने की।''

''चाचा, हीरो नहीं बन रहा था। वो मेरा एण्ड और बूट ले के भागा था उसे पकड़ा।''

''अकल के दुश्मन, जब पुलिस को देख के ड्रैवर ने कार भगाई, तो तुझे समझ जाना था कोई न कोई गड़बड़ है। अब वो ड्रैवर जब जेल से छूटेगा तो तेरे से खुन्नस निकालेगा।''

''चाचा, अब मैं क्या करूं....मैंने उसे थोड़े न पकड़वाया है....पुलिस की जीप तो अपने-आप सामने से आ रही थी। अगर वो स्पीड नहीं बढ़ाता तो पुलिस को तो मैंने और मोहन ने ही कह देना था कि कार खराब है। वैल्डिंग वाले के पास जा रहे हैं।''

कुमार घबराया हुआ था।

''करना क्या है...जा के थानेदार से मिल और उस सारी बात बता दे। उसने पैसे-पूसे ले के छोड़ दिया होगा तो....वैसे ही मामला खतम, अगर केस बना होगा तो वो अपने-आप देख लेगा।''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कुमार साइकिल लेकर एस.एच.ओ. के पास पहुँच गया, ''अंकल नमस्ते।''

''नमस्ते....बोलो।''

''मैं स्टेशन मास्टर का लड़का हूँ....बाइपास पे मेरी दुकान है कुमार मोटर्स। रात को शराब वाली गाड़ी के ड्राइवर को मैंने ही पकड़ा था।''

''तुम मुखबिर हो।''

''मुखबिर क्या...कार वाले ने सामान खरीदा था, मिस्त्री के पास कार जा रही थी तो पुलिस की जीप देखकर वो भाग पड़ा। मैंने समझा मेरा सामान लेकर भागा है। मैंने रिक्शे को धक्का दे कर उसे गिरा के पकड़ लिया।''

''यहाँ किसलिए आए हो?''

''जी, वो कहीं मुझसे खुन्नस निकाले।''

''नहीं निकालेगा....वो लॉक अप में है। मैं उसे समझा दूँगा।''

□

''भइया, बड़ी मुश्किल से तीन हजार इकट्ठे हुए हैं। दिल्ली जाना है, मोर्ट्स पार्टस लेने। वैसे तो सारा सामान हल्का है। फिल्टर, रबर पार्ट्स, बल्ब वगैरह। आयतन अधिक होगा, कम से कम छः बड़े थैले तो बन ही जाएगे।'' कुमार ने सुभाष से कहाँ—

''फिर मैं क्या करूं?'' सुभाष लापरवाही से बोला। ''आपने कुछ नहीं करना...मेरे साथ दिल्ली चलो। अकेले छः थैले सम्भालना मुश्किल होगा। ट्रांसपोर्ट पे तो पेटी...लदाई और भाड़ा मिलाकर बहुत ज्यादा हो जाएगा।'' कुमार लगभग गिड़गिड़ा कर बोला।

''शीला पे पिक्चर दिखाएगा तो चलता हूँ।'' सुभाष ने अपनी चलने की शर्त रख दी।

''पिक्चर दिखा दूँगा, ऐसा करते हैं सुबह की गाड़ी से चलते हैं। नौ से बारह का शो देखकर कश्मीरी गेट चल पडेंगे। दोनों काम हो जाएंगे।'' कुमार ने स्वीकारोक्ति दे दी।

सुबह नौ बजे शीला सिनेमा की बुकिंग की लाइन में लगे। अभी टिकट के लिए नम्बर आने वाला था कि किसी ने कुमार को पीछे से कंधे से पकड़ कर खींच लिया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"टिकट ले ही लेगा क्या?" ये आज़ाद और भूमेश थे। दोनों कोसी थाने में बैड करैक्टर रजिस्टर्ड हैं। कई केसों में फरार चल रहे हैं।

"आज़ाद! सुना...यहाँ कहाँ?" कुमार ने स्वयं को सम्भालते हुए कहा।

"कैसे दिल्ली आया....दुकान का माल लेने आया होगा।" भूपेश ने कहा।

"नहीं यार...यहाँ मोतीनगर में मेरे भाई साहब रहते हैं। उनके यहाँ जन्म दिन पर आए हैं।"

"तेरे कौन से भाई साहब...तेरा भाई तो तेरे साथ है।" आजाद बदतमीजी से बोला।

"ताऊ जी के लड़के हैं, यहाँ पर वकील हैं। उनके घर जाना है।" कुमार सतर्क है।

"ताऊ जी क्या करते हैं?" भूपेश थोड़ा सशंकित हुआ लगा।

"वो इंकमटैक्स आफ़िसर हैं। अरे, ये तो बताओ...मुझे क्यों रोका...फिल्म शुरु हो जाएगी।" कुमार ने बात को हल्का करने का प्रयास किया।

"अरे, माल लेने नहीं आया...तेरे पास कुछ पैसे हैं, यार? हमने कल से कुछ नहीं खाया।" आजाद अपनेपन से बोला।

"देख, पैसे तो सौ-ड़ेढ सौ हैं। पर तुम्हारे जैसे कोसी थाने के भगोड़ों के लिए नहीं हैं। अगर तुम्हें खाने को पैसे चाहिए थे तो प्यार से बात करते। साले, तुमने तो गर्दन से पकड़ा और अकड़ के बोले...टिकट ले ही लेगा क्या?" सामने वालों को कमजोर होता देख कुमार दबंग हो लिया था।

"अरे यार, तू तो अपना आदमी है। जरूरत के टैम तुझसे नहीं माँगें तो किससे माँगें। यहाँ हमारा कौन है?" भूपेश नरमी से बोला।

"मुझे कुछ नहीं पता....मैं सिर्फ तुम्हारा कोसी का होने का लिहाज कर रहा। हूँ नहीं तो एक आवाज़ में पुलिस वाला तुम्हें धर लेगा। तुम्हारे पास कट्टा-चाकू भी ज़रूर निकलेगा...फिर लगाते रहना कचहरी के चक्कर।" कुमार तल्ख होने लगा।

"अबे, नहीं देने पचास रुपये तो मत दे। साले, धौंस किस पे जमा रा है? पचास देगा तो साठ वापस करेंगे। कोई भीख नई माँग रहे तेरे से। पुलिस बुलानी है तो बुला ले...करा दे अन्दर....जब छूट के आएंगे तो बताएंगे तेरे को, चल भूपेश...ये साला दमड़ी भी नई देगा, खुद साला कड़का है।" कहकर आजाद उसकी बांह पकड़ के चल दिया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

□

होली आ गयी। इस साल तो होली पर बरसाना ज़रूर जाना है। सारे नये-पुराने मित्र भी मिल जाएगें, होली भी हो जाएगी, परीक्षा के लिए रहने का बन्दोबस्त भी देख आएंगे। बरसाना की होली, होली से हफ़्ता भर पहले होती है और लट्ठमार होली विश्व प्रसिद्ध है।

बरसाना में नन्दगांव के पुरुष आते हैं होली खेलने। राधारानी के मन्दिर में खूब गहमा-गहमी होती है। साथ ही बरसाना की कुंज गलियों में लठा मार होली। कान्हाँ बरसाने में आ जइयों बुलाय गयीं राधा प्यारी।

बरसाना की महिलाएं रंगबिरंगे परिधान पहने हाथों में लट्ठ लिये, नन्दगांव के पुरुषों से होली खेलती हैं। वे उनके सिरों पर लट्ठ से प्रहार करती हैं और पुरुष सिरों पर बड़ी-बड़ी पगड़िया। बांधे हाथों में कछुए की पीठ की ढाल लिए वार बचाते भर हैं। कई बार एक पुरुष पांच-छः महिलाओं में अकेला भी होता है।

इस प्रकार यह आयोजन गलियों से होता हुआ ऊपर राधा मन्दिर जाता है। जहाँ टेसू के फूलों के रंगों की पिचकारिया। यहाँ-वहाँ से चलती हैं।

इस आयोजन को देखने दूर-दूर से लोग आते हैं। विशेष रूप से कलकत्ता, गुजरात और पंजाब से, साथ ही आस-पास के गांवों कस्बों के लोग भी बहुतायत में होते हैं। सुबह से शाम का रंग एवं संगीत भरा ग्रामीण कार्यक्रम। बस इसी तरह दूसरे दिन नंदगांव की होली होती है।

बरसाना के पुरुष और नंदगांव की स्त्रियां। आज बिरज में होरी रे रसिया, होरी रे रसिया बरजोरी रे रसिया।

कुमार बरसाना गया तो कोसी के सात-आठ मित्र साथ थे। वहाँ बरसाना के भी कई मित्र मिल गए और रंगीली गली से होते हुए मन्दिर की चढ़ाई शुरु की। ऊपर चौबारे पर स्वर्ण लता अपने परिवार के साथ थी।

स्वर्णलता की कई प्रेम गाथाएं कोसी में प्रचलित थीं। अब अन्तिम रूप से उसका प्रेम सुरेश अग्रवाल से चल रहा था। संभावना भी थी उनका प्रेम, विवाह में परिणत होने वाला है। दोनों परिवारों में औपचारिक बातचीत हो चुकी है।

स्वर्णलता में अपने आप को प्रदर्शित करने व चर्चा में रहने का पुराना चस्का था। सभी लड़के लोग आपस में उसके लिए भाभी संबोधन दिया करते थे पर उसके सामने कभी नहीं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इधर जब कुमार की यह मंडली चौबारे तक पहुंची तो ऊपर से पिचकारी और रंग फेंकने वाले मित्र इन्हें निशाना बनाने लगे। इस बीच स्वर्ण लता जो इनसे थोड़ा आगे थी, लगभग भीग चुकी थी। इधर ऊपर से मित्र, 'कुमार बॉस....कुमार बॉस' आवाज़ें लगा कर खुशी भी प्रदर्शित करते थे।

बस स्वर्णलता रुक गयी, "कुमार, तुझे शर्म नहीं आती। देख मैं पूरी भीग गयी हूँ।"

"अरे, मुझसे क्यों कह रही है? ये रंग क्या मैंने डाला है? कुमार ने भी जबाब दिया।

"तो और कौन-कौन है इसके पीछे?" स्वर्णलता तेवर दिखाने पर आ गयी।

"क्यों? तुझे दिखाई नहीं देता पिचकारियां किनके हाथों में हैं? मुझ पर या जो साथ में लड़के हैं। क्या उनपर रंग नहीं गिर रहा?"

"मुझे नहीं पता, ये सब तेरे इशारों पर हो रहा है। इन्हें रोक दे वरना ठीक नहीं होगा।" स्वर्णलता ने धमकी दे डाली।

"देख स्वर्णलता, न तो ये मेरे इशारों पर हो रहा है न मेरे पास रंग या पिचकारी है। वैसे भी दूसरों के आसरे रहना मेरी आदत नहीं है। मुझे रंग डालना होता तो मैं किसी से भी लेकर डाल सकता था।"

"अरे जा, बड़ा आया रंग डालने वाला, तेरे जैसे छत्तीस डोलते फिरते हैं।"

"स्वर्णलता तेरी समस्या यही है, छत्तीस तो डोलते हैं पर मेरे जैसा एक नहीं। ऊपर लड़कों को कहने भर की देर है, सारा रंग तेरे ऊपर आ लेगा।"

"अगर मर्द का बच्चा है डलवा के दिखा।"

कुमार ने ऊपर खड़े लड़कों को कहा..."अबे ओ बे सहूरो, ये कोसी की छोरी कह रही है बरसाना वालों के पास रंग ही नहीं...जो मुझ पर डालें। अबे डूब मरो. ...जो होली खेलना चाहती है उसके लिए तुम्हारे पास रंग की कमी पड़ गयी।"

कहने भर की देर थी कि ऊपर से रंग ही रंग बरसने लगा। नीचे सभी अच्छी तरह से भीग गए। स्वर्ण लता भीगी बिल्ली बनी आँखें तरेर रही थी। सारे लड़के ठहाके लगा रहे थे।

स्वर्णलता ने गुस्सा उडेल ही दिया, "कैसा ठीं-ठीं कर रहा है? तेरे घर में माँ बहिन नहीं है।"

कुमार ने उसे उत्तर न दे के दोस्तों से ही कहा। चलो रे चलो, "खिसियायी बिल्ली खंबा नोचने पे आ गयी है। रंग न डालो तो परेशानी रंग डालो तो भी परेशानी।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
घर आकर सारा किस्सा कुमार ने बयान किया तो पड़ोसिन आंटी बोलीं, "कुमार तेरे को जबाब देना नहीं आता। उसे कहना था माँ है माँ की जगह, बहिन है बहिन की जगह। एक तुझ कंजरी की जरूरत है।"

"बस आण्टी, यही मुझसे नहीं हो सकता।"

"नहीं हो सकता तो खसमाँ नूं खा। ऊने तेरा घैण्टा लाहणा सी।"

"आण्टी, मेरा उसूल है औरतों की इज्जत करना।"

"औरत की इज्जत तो सबको करनी चाहिए पर उसकी, जो कराए।"

"तूने सुणा नई, रख पत रखा पत आपणी पत आपणे हथ।"

"आण्टी, अपनी इज्जत का सोचकर ही तो चुप हो गया। गंद में जितना लकड़ी मारो उतनी बदबू ही आनी है।"

"चल, जो कर आया ठीक है पर ऐसों को करारा जवाब जरूरी होता है, ये बात भी पल्ले बांध के रख।" आण्टी ने दुलार से कहा।

बाइपास तो गत बीस दिनों से होली की मस्ती में डूबा ही है। रोज सिरों पर और कपड़ों पर रंग पर ही रंग, अभी तो पूरा महीना यही कुछ चलने वाला है। शाम को घर आने पर मोहल्ले के लड़के भी आ पहुँचे।

"कुमार, भइया होली का निशान तो गाड़ भी दिया, अब लकड़ी इकट्ठा करने का जुगाड़ भी लगवाओ।"

"चलो, फिर हो जाओ शुरू। बोलो कब से करना है?" कुमार ने हामी भर दी।

"आज से ही करें?" कमल बोला।

"बॉस, पहले कुल्हाड़ी का इन्तजाम तो करो। सूखे पेड़ तो पहचान रखे हैं। मेरी मम्मी ने तो कुल्हाड़ी छुपा दी।" अनिल और पप्पू ने ज़रूरत बताई। "तो ऐसा कर, पप्पू तू पिछवाड़े के दरवाजे से आ, मैं कुल्हाड़ी देता हूँ। आज इसे वहीं-कहीं छुपा के रख भी देंगे।"

जगदीश ने तुरंत रास्ता दिया। "जो पेड़ काटना है उसके आसपास ही रखेंगे, हमारे सिवाय किसे पता कि कुल्हाड़ी वहाँ रखी है। "

"चलो फिर तय रहा, अभी चलते हैं, जितना हो सकेगा काटेंगे, बाकी जब जिसको टाइम बेटाइम जुगाड़ लगे, वहीं से कुल्हाड़ी उठा के काट आएगा। जब पेड़ गिर जाए तो ऐसे ही टुकड़े भी कर लेंगे...बस हो जाएगा काम।"

सारे लड़के जोश से भर गए और होली जलाने का अच्छा इन्तज़ाम हो गया। गांव कस्बों के लड़कों के लिए तो यह भी उत्साहवर्धक खेल ही होता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

□

बाइपास पर रोज नए पमाड़े खड़े होते हैं। प्रायः सारे के सारे लोग गरीब तबके से हैं। ज़रूरतें तो हैं ही, न उनके पास ढंग के कपड़े हैं, न रहने की व्यवस्था, न ही कोई लगा-बंधा काम। जिस किसी के पास कोई काम आ लगता है, वह हर चन्द कोशिश करता है कि वह उसमें से अधिक से अधिक कमा सके। दूसरी ओर भी राह चलती गाड़ियां ही मजबूरी में रुकती हैं काम कराने, उनके ड्राइवरों के पास भी सीमित मात्रा में धन होता है और रास्ता लम्बा।

कुछ पता नहीं, कहाँ किस समय किस तरह की ज़रूरत पड़ जाए और उसके लिए पैसे की ज़रूरत पड़े। इसलिए वह सोच-समझकर जरूरत का पैसा ही खर्च करना चाहता है। इसी तनातनी में बात गाली गलौच और झगड़े तक पहुंचने में समय तो बिलकुल भी नहीं लगाती। वास्तव में यही बाइपास की संस्कृति है। आप भले ही बाहर से देख कर इसे अपसंस्कृति के फ्रेम में फिट करें।

गिर्राज ने ढाबे वाले लड़के को भेज कुमार को बुला भेजा है। उसकी किसी विदेशी से तकरार हो गयी है। गिर्राज अंग्रेजी नहीं समझता और विदेशी को हिन्दी नहीं आती। कुमार को गिर्राज ने कहा–

"देख यार कुमार, इस भूरे बंदर को, इसने क्या लपर-लपर लगा रखी है?"

कुमार ने मेहमान से पूछा, "कृपया मुझे बताएं, आपकी समस्या क्या है शायद मैं आपकी कुछ मदद कर सकूं?"

"समस्या मेरी जूती, मैं विशेष रूप से तीतर खाने आया था। इसने जो तीतर का माँस दिया वह तीतर नहीं कबूतर का माँस है। मैं माँस विशेषज्ञ हूँ।"

कुमार ने गिर्राज को बताया तो वह भड़क गया, "इस भैन...को बता ये गांवों का इलाका है। यहाँ लौंडे लोग खेतों से तीतर पकड़ लाते हैं। तीतर पकड़ना आसान है। कबूतर को कौन पकड़े। वो ऊँचें पर होते हैं और पालतू कबूतर मंहगे होते हैं।"

उस विदेशी को बताया तो उसे विश्वास ही नहीं हुआ। वह भी नो-नो करता रहा और अपनी बात पर अड़ा रहा।

गिर्राज ने कुमार से कहा, "इसे अन्दर ले जाकर दड़बा दिखा दे। वहाँ तीतर ही तीतर हैं। तब इस छोरी... को समझ आएगा।"

कुमार ने उस विदेशी से कहा और ढाबे के पीछे की ओर ले गया। दड़बे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
में सिर्फ तीतर देखकर भी वह संतुष्ट नहीं था, "तो फिर तीतर बासी था... एकदम बासी, तीतर के माँस का स्वाद ही नहीं है।" वह आत्मविश्वास से बोला।

कुमार ने गिर्राज से कहा, "इससे तीतर के पैसे मत लो झगड़ा खत्म हो जाएगा। विदेशों में यही होता है। वहाँ होटलों में ऐसा ही नियम है।"

गिर्राज की अपनी धुन थी, "अरे, तो साला वहीं खाता तीतर, यहाँ क्यों आ मरा? वो लोग साले, एक के सौ लेते हैं। यहाँ दो रुपये तीतर पे बचते हैं। इसे साले को पांच रुपये छोड़ दूँ। इसे बोल धर जा और मर जा। इसकी पैसे न देने की धपंग यहाँ नहीं चलने की। बाइपास पे रोज ऐसे छत्तीस आते हैं जो खा के कमी निकालते हैं साले।"

कुमार ने विदेशी को अपनी तरह यह बात समझाई, उसने पैसे फैंक कर दिए और गुस्से में बड़बड़ाता अपनी कार में चला गया।

□

कुमार अपनी दुकान पर आया तो यहाँ भी झमेला हो गया। एक ट्रक रुका, उसे स्टार्ट छोड़कर सिख ड्राइवर आया, "एक नए माडल की फैन बैल्ट दे।"

"ये लो जी, फैन्नर की बैल्ट।"

"कितने की है, ठीक-ठीक बता, मुझसे चोर बजारी मत करना।"

"सरदार जी, बयालीस रुपये, एक दम सही दाम।"

"ठीक है, इसे चैक करके पैसे देता हूँ।" ड्राइवर बैल्ट ले कर ट्रक की ओर जाने लगा।

कुमार काउण्टर से बाहर निकल आया, "पहले पैसे....इसमें चैक करने का कुछ नहीं है। नये माडल की औरिजनल बैल्ट है।"

"ओए देते हैं पैसे, कहीं भागे जा रहे हैं क्या?"

कुमार ने बैल्ट पकड़ कर वापस लेने की कोशिश की, "ऐसा यहाँ अक्सर होता है कि सामान लेकर ड्राइवर ट्रक लेकर चलते बनते हैं। ढाबे से खाना खाकर बिना पैसे दिए गोल हो जाते हैं।"

इस तरह बैल्ट खींचते देख ड्राइवर बदतमीजी से कुमार को धकियाता हुआ बोला, "ओए हट पीछे, हमें जानता नहीं हम सिंघड़ होते हैं।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

धक्के से गुसियाए कुमार ने भी जवाब दिया, "होगा सिंघड़, हम सिंघड़ों की भैन नईं....., और बैल्ट छीन ली।"

वह ड्राइवर अपने ट्रक से कुमार को मारने के लिए टायर लीवर लेने भागा, "ओए हुणे दसदां तैनूं। रमते जरा निकाल ट़ैर लीवर इसकी तो माँ का....।"

कुमार समझ गया झगड़ा बढ़ेगा। वह तुरंत पीछे प्रीतम सिंह के घर गया, "चाचा जल्दी उठ, एक ट्रक ड्रैवर से झगड़ा हो गया। वो टायर लीवर निकालने गया है।"

प्रीतम सिंह तहमद में ही मूंछों पर ताव देता हुआ कुमार के साथ हो लिया। कुमार ने उसे सारी घटना बता दी। प्रीतम सिंह शुरु हो गया।

"ओए, कौण ऐ वड्डा बदमाश? केड़ा सिंघड़ है, ले आ अपणी भैण को...हम सिंघड़ों की भैण... हैं।"

वो ड्राइवर जो टायर लीवर निकाल चुका था। क्लीनर को वापस देकर ड्राइवर सीट पर जा बैठा। प्रीतम सिंह यह देखकर जोर से दहाड़ा।

"बुला न तेरी भैण को बणया वड्डा बदमाश जरूरी है उसी से भैण... है। वे नईं करता अपना बीज खराब। हरामजादे, हम तियार हैं तो भागता क्यों है?" ट्रक ये जा और वो जा।

प्रीतम सिंह कुमार को समझाने लगा। इनसे डरने की ज़रूरत नई है। देखा नई कैसे भागा गाड़ी ले के। हम जहाँ के रहने वाले हैं। वो बाहर का था। उसे पता था अभी सारा बाइपास इकट्ठा हो जाएगा। तू भी शेर बन, डरने से बात नईं बणती।

आज कल तो जुवा कांग्रेस का टैम है। तू क्यों नईं बणाता जुआ कांग्रेस, जहाँ तो है भी नईं। जे तूने बणा ली तो समझ ले सरकारी लोग, पुलिस वाले और भी सारे तेरी इज्ज़त करने लग पड़ेगें।"

"चाचा, मेरे को युवा कांग्रेस का कुछ नहीं पता, यहाँ कोसी में कैसे बनेगी, कौन बनाएगा?"

"अबे, तो पता कर न, पढ़ा-लिखा किस बात का है? जे बताना मेरा काम नईं है, जे तू आप पता कर।"

कुमार ने अध्यक्ष, जिला कांग्रेंस कमेटी मथुरा को जानकारी के लिए पोस्ट कार्ड डाल दिया। चार दिन बाद जवाब भी आ गया।

युवा कांग्रेस में उत्साह दिखाने के लिए स्वागत। आपका पत्र अध्यक्ष जिला युवक कांग्रेस को प्रेषित कर दिया गया है। जल्द ही आपको वहाँ से पूरी जानकारी प्राप्त हो जाएगी।

आते सप्ताह अध्यक्ष, जिला युवक कांग्रेस, मथुरा का भी पत्र आ गया। आपको

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नगर युवक कांग्रेस कोसी कलाँ का अध्यक्ष मनोनीत किया जाता है। दस दिन
अन्दर कार्यकारिणी का गठन करके प्रेषित करें।

कुमार ने प्रीतम सिंह को पत्र दिखाया, "चाचा ले, तेरी बात पूरी हो गइ
उन्होंने तो मेरे को ही अध्यक्ष बना दिया।"

"बस...जे अच्छा काम हो गया। अपने जान-पहचान के लड़कों से बात कर
बना ले युवा कांग्रेस। बाकी बाइपास के सारे चमचे तेरे साथ आपे लग लेंगे।"

"चाचा, पहले तो यह पता करना पड़ेगा कौन-कौन कांग्रेसी विचारधारा के है
यह जरा मुश्किल काम है।"

"कुमार, तेरे साथ ये परेशानी बड़ी है, इधर-उधर का सोचने का काम जरा क
किया कर, मतलब की बात ज्यादा समझा कर। बेवकूफ आदमी, बनियों के सा
लड़कों को ले ले, जो तेरे हिसाब से भी चलें और कोई कांग्रेस का काम-शाम कर
हो, तो पैसे भी निकाल के दें। जे लोग पैसे के जोर पे बनते हैं और तेरे जैसे मेहन
और दिमाग के जोर से, जे बात पल्ले बांध के रख।"

"हाँ चाचा, आपकी बात पक्की है। बैनर, पर्चे, मीटिंग सारा कुछ तो कर
पड़ेगा ही। उसके लिए खर्च तो जरूरी ही हुआ।"

इधर नगर युवक कांग्रेस का गठन हुआ उधर जिला इकाई का फरमान
पहुँचा छः हजार रु की सदस्यता रसीद बुकें खरीद कर सदस्यता अभियान चलाओ

कुमार ने महामंत्री को बुलाया, "प्रकाश, छः हजार रुपये की युवा कांग्रे
सदस्यता रसीद बुके लेनी हैं।"

"यार, वो तो ठीक है, पर छः हजार मेरे लिए देना मुश्किल है। एक हज
तो मैं दे दूँगा।" प्रकाश ने मजबूरी बताई।

"ठीक है, ऐसा कर तू बड़े सेठों के पास चला जा, हज़ार-हज़ार रुपये उन
ले ले। बता दियो रसीद बुक लानी हैं। तू तो सबको जानता ही है, नहीं तो पि
जी से सलाह कर लियो। कौन-कौन लोग दे सकते हैं। वो तो सभी को जानते हैं।

छः हजार दो दिन में ही आ गए। कुमार ने प्रकाश को कहा, "जा मथुरा ज
के रसीद बुकें ले आ। रसीद बुकें आ गयीं और कुमार मोटर्स के काउण्टर की शोभ
बढ़ाने लगीं। जिन सेठों ने पैसे दिए; वो कुमार को मिलते तो जताने से न चूकते
कुमार, तूने कही और हमने पैसा दे दिए, कभी कोई काम होय तो भइया याद क
लियो।"

"ठीक है चाचा जी, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। आपकी सहायता से कोसी
में युवक कांग्रेस का गठन हो सका है।"

"युई बात...भइया कुमार बस युई बात याद रखियो और कभी हमैं जरूर
पड़े तो हमारे काम अइयो।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"अरे चाचा जी, आप कैसी बात करते हैं! मैं आपका सहयोग याद रखूंगा।" कुमार ने विनम्रता से कहा।

आते महीने में ही युवा कांग्रेस प्रचार केन्द्र कुमार मोटर्स के आगे खड़ा कर दिया गया। कनात बल्ली टैंट वाले ने, लाउड स्पीकर दाल मिल के मलिक से दस हजार हैंड बिल प्रेस वाले के जिम्मे डाल दिए, पेंटर अपनी खुशी से बैनर टांग गया। कुर्सी-मेज प्रीतम सिंह के ढाबे की।

यहाँ देश प्रेम के गीत बजते हैं। जब जिसे मौका मिलता माइक उठाकर हैंड बिल पढ़ देता या पांच सूत्री कार्यक्रम का उच्चारण कर जाता। ग्रीस वालों, ढाबे वाले लड़कों या जिन्होंने माइक को हाथ लगा कर भी नहीं देखा, खूब बन आयी थी। जिसका मन होता वहाँ बोलकर चला जाता, यहाँ तक कि दूर बैठे मित्रों से गाली-गलौच भी कर लेता।

□

होली के बाद महेन्द्र आ गया। महेन्द्र के पिता बी.डी.ओ. हैं, "चल कुमार रोल नम्बर आ गए हैं, लेकर आते हैं।"

"चल, कुमार बोला, "पर यार तेरे साथ फार्म भरा था, "तब यह तो देखा ही नहीं कि विषय क्या-क्या लिए हैं।"

"हिन्दी, अंग्रेजी समाजशास्त्र और.... ।"

"हाँ वही तो, बाकी दो कौन से, अभी तो उन विषयों की किताबें भी लेनी हैं।"

"चल न, जब डेटशीट लेंगे, वहीं देख लेंगे।"

वहाँ कुमार ने माथा पीट लिया, "महेन्द्र ले बेटा, बिना विचारे जो सूझा भर दिया था। अब देख, गृह विज्ञान और शिक्षाशास्त्र लिया है। इनमें कब पढ़ूंगा और क्या पढ़ूंगा?"

"चल, पहले किताबें ले फिर सोचना। वहाँ रहने का जुगाड़ क्या किया, महेन्द्र ने पूछा?"

"अरे, जुगाड़ से याद आया। बौस, एक साथ दो कमरे देखने पड़ेंगे मेरे साथ रमा भी जाएगी, मेरी पड़ोसन।"

"अकेली?"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

"नहीं यार, आण्टी साथ चलेंगी।"

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"ले फिर क्या है....हमारी रोटी तो बना देंगी ना।"

"हाँ यार...उन्होंने यही कहा है, उन्हें हमसे सुरक्षा और हमें घर की रोटी, दोनों को सुविधा हो जाएगी।"

"अब जाना कब है, महेन्द्र ने चिन्ता जताई।?"

"अबे, अठारह से पेपर हैं, सत्तरह सुबह चलेंगे। कमरा भी देख लेंगे ओर सामान भी सैट हो जाएगा, कुमार ने आश्वास्त किया।"

"पर सब कमरे भर गए तो। सैंटर तो और स्कूलों का भी होगा।" महेन्द्र को चिन्ता ज्यादा है।

"तो क्या हुआ? अपने संग के पढ़े किसी लड़के के घर जुगाड़ कर लेंगे या धर्मशाला में जगह मिल जाएगी। नहीं तो गुसाइंयों के घर यजमान खाने तो बने हैं, फिकर कैसी?"

वही हुआ, दो कमरे की व्यवस्था सुविधा से हो गयी। परीक्षा शुरु हो गई। पढ़ने, सोने, खाने के अलावा कोई काम नहीं है। महेन्द्र को यह रास नहीं आता, वह बोलता है।

"यार कुमार, यों तो कमरे में ही सड़ जाएंगे। कुछ बाहर घूमने का भी समय निकाल।"

"घूमने को साल भर पड़ा होता है। इन दिनों पढ़ाई में जितना ध्यान लगाएंगे उतना हमारा ही फायदा है।" कुमार अपनी बात कहता है।

"अजीब उजबक है। भले मानस थोड़ा तो मन बहलाव भी चाहिए। चल ऐसा कर समय फिक्स कर लेते हैं। न तेरी न मेरी, रोज शाम को राधा रानी के मन्दिर पे पांच से छः एक घण्टा, बोल क्या कहता है" महेन्द्र ने रास्ता निकाला।

"इसमें कहना क्या है? एक घण्टा मतलब एक घण्टा, बाद में कहीं तू बदल जाए।" कुमार ने बात पक्की करने की गर्ज से कहा।

शाम को मन्दिर में खूब रौनक होती है। प्रायः सारे लड़किया-लड़के आते हैं, राधा दर्शन और आरती के लिए। महेन्द्र और कुमार भी पहुंच गए। राधा दर्शन के बाद महेन्द्र बोला, "रोज-रोज दर्शन करने नहीं आऊंगा। वहीं परिक्रमा की दीवार पे नौ रोटी-अठारह गोटी खेलेंगे।"

"ठीक है, परिक्रमा की दीवार सही जगह है। परिक्रमा करके निकलने वाले प्रसाद भी देते जाएंगे। इससे पता भी चलता रहेगा।" किसका पेपर कैसा हुआ है, कुमार हँसा।

"तुझे प्रसाद से कैसे पता चलेगा, किसका पेपर कैसा हुआ?" महेन्द्र ने पूछा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"अबे सीधी-सी बात है, यहाँ सभी धर्म भीरू हैं। भगवान को रिश्वत देकर पटाने का चलन तो है ही। जिसका ठीक पेपर होगा, वो चनौरी का प्रसाद चढ़ाएगा, जिसका ठीक नहीं होगा वो बर्फ़ी या पेड़े का प्रसाद चढ़ाएगा। हम तो वहीं रास्ते पर होंगे ही, प्रसाद तो मिले ही मिले।" कुमार ने चहक कर कहा।

अब दोनों दीवार पर नौ गोट अठारह गोट खेलते। कुमार बायां और महेन्द्र दायां हाथ ऊपर उठाए रखते। जो मन्दिर में प्रसाद चढ़ा कर आता, उनकी हथेली पर रखता और वे उसे मुँह में डाल लेते।

यही सच भी है कि अगर कोई हथेली पर प्रसाद के बदले कंकड़ रख जाता तो वे उसे भी मुंह में डाल लेते, पर धर्मभीरूओं में न इतनी समझ होती है न हिम्मत कि इस प्रकार के मजाक कर लें।

आज पेपर नहीं है। इसलिए जमकर अगले पेपर की तैयारी हो सकेगी। तभी आण्टी की आवाज आयी, "बेटा, कोई महेन्द्र से मिलने आया है।"

"भेज दो आण्टी जी, इधर ही भेज दो।"

"अरे गोपाल तू....तू यहाँ कहाँ पहुच गया रे?" महेन्द्र ने आने वाले से पूछा।

"अम्मा जी ने कही, कुंवर जी के लियां लड्डू बनाए हैं, दे आ।" गोपाल, महेन्द्र के पिता के आफिस का चपरासी है। सिर पर पुराना-सा पीपा और एक थैला लाया है, नीचे रख कर वह अंगोछे से पसीना पोंछते हुए बोला।

"ले जा...लड्डू-वड्डू मोय न खाने....और थैला में क्या है?" महेन्द्र उत्तेजित हो उठा।

"थैला में सन्तरा हैं और पहरवे के कपड़ा। कुंवर जी, लड्डू रख लेओ....नांय तो अम्मा जी रिस करिंगी। उनने पहले ई मोय कह दयी....लाला मनै करै तो जबरदस्ती दै अइयो।" गोपाल लगभग गिड़गिड़ाता-सा बोला।

"अरे गोपाल, खड़ा क्यों है...ले पानी पी...यहाँ बैठ जा।" कुमार ने चपरासी के लिए पैताने जगह बना दी और पानी का गिलास गोपाल को दिया।

महेन्द्र ने कुमार को आँखें तरेरी साथ ही बोला...."अरे, इसने वापस भी जाना है... बैठेगा तो क्या, देर होने पर वापसी की बस निकल जाएगी। चल ले जा ये पीपा...थैला यहीं रहने दे।"

गोपाल विनीत हो आया...."साहब ने भी कही लड्डू जरूर दै के आना, कुंवर जी रख लेओ।"

महेन्द्र से पूर्व ही कुमार ने उत्तर दिया, "रख जा यार...क्यों इतना परेशान हो रहा है।"

"देख ले तू रखवा तो रहा है, मैं एक भी नहीं खाऊंगा।" महेन्द्र का स्वर तीखा है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"हाँ, मम्मी नहीं बोलेगा तो सुबह होने से मना कर देगी। तू नहीं खाएगा तो मत खाना....मैं खाऊंगा। माँ ने इतने प्यार से पंजीरी के लड्डू बनाकर भेजे...यहाँ गधे को पंजीरी रास नहीं आ रही।" कुमार ने भी महेन्द्र को डांट दिया।

गोपाल सामान छोड़कर चला गया। महेन्द्र उसके जाते ही उबल पड़ा, "क्या जरूरत थी उसे अपनी चारपाई पे बैठने के लिए कहने की और पानी खुद डाल के उसे दे रहा था। तेरा दिमाग तो ठिकाने है। वो पिता जी के ऑफिस का चपरासी है।"

"तो...पिता जी के ऑफिस का ही न...तेरा-मेरा तो नहीं....उससे ज्यादा तो वो इनसान है। गर्मी में पानी की ज़रूरत तो सभी को होती हैं ।" कुमार ने जवाब दिया।

"तुम पढ़-लिख के गंवार के गंवार ही रहे। बड़े अपने आप को बनते फिरते हो। तुमसे ज्यादा समझदार तो गोपाल है, न उसने पानी पिया न बैठा।" महेन्द्र हंसी उड़ाने के अन्दाज में बोला।

"समझदार तो वो है....उसे मालूम होगा अगर बैठ गया या इनके गिलास में पानी पी लिया तो बाद में खाल उतारी जाएगी। यही तुम्हारा ठाकुरपना साला, तुम्हारी सामंती प्रवृत्तिया। देश को आगे ही नहीं बढ़ने देतीं। तुम लोग अपने अहं में समझ ही नहीं सकते। जब और जिस दिन इनके सब्र का बांध टूट गया या आक्रोश उबल पड़ा, तुम्हारी ठकुराई धरी की धरी रह जाएगी।" कुमार को गुस्सा आ गया।

"कुछ नहीं धरी रहेगी...सालों को भून दिया जाएगा गोली से, बस्ती ही जला डाली जाएगी। राजा...राजा ही रहेगा।" महेन्द्र कड़वाहट से बोला।

दोस्तों में तलखियां और मुहब्बतें कब कैसी होंगी कोई नहीं जानता पूरा पीपा भरा लड्डुओं का कुमार ने ही खाया, कुछ आण्टी के हिस्से में भी आए। महेन्द्र ने, तो उनकी ओर देखा भी नहीं।

ऐसे ही एक दिन उनके साथ बरसाना के भी कुछ दोस्त थे। महेन्द्र ने कहा, "चलो आज तुम चाय पिलाओ, मुरारी, लक्ष्मी, शंकर।" यार हम तुम्हारे मेहमान हैं।

उन तीनों ने जेब टटोल डाली, पर ले देकर शंकर के पास ही बीस पैसे थे, "लो! भइया मोपै बीस पैसा हैं।"

"अरे रुकौ यार, नीचे कोई बस आ जाए तौ भक्त आए, हमें चौअन्नी-अठन्नी मिल जाएगी।" मुरारी बोला।

लक्ष्मी ने सड़क को तरफ नजरे लगा दीं। गुरु तुम्हारे मुंह में घी शक्कर, वो देख बस आई। चलौ सब यहाँ वहाँ मूर्तीयों के पास बैठ लो।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पांचों अलग-अलग जगह पर जा बैठे। यात्री सीढ़ियां चढ़कर आते-जाते और ये मित्र उनसे माँगते जाते, "आओ...पुन्न कमा लो, लो यहाँ दर्शन करौ...यहाँ चार आठ आना दान करौ। हम ब्राह्मण हैं, यहाँ चौअन्नी दोगे, राधा रानी तुम्हारे भंडार भरेगी। ऐसे मौका हरेक ऐ न मिलैं।"

पता नहीं राधे रानी किसके भंडार भरेगी, पर पांचों मित्रों को कुल जमा दो रुपये चालीस पैसे की पूंजी का भंडार मिल चुका था। चाय-नाश्ता सुविधा से हो गया। रा....धे.....स्या....म का लम्बा जयघोष लगाते हुए मित्र विदा हुए। राम जाने महेन्द्र की ठकुराई यहाँ कहाँ चली गयी थी।

यही है विडम्बना, पांच मित्र, जवान और शिक्षा की राह पर, फिर भी उन्हें माँगते शर्म महसूस नहीं हुई। ब्राह्मण के लड़के तो वहाँ माँगते ही हैं। पर कुमार और महेन्द्र भी उनमें शामिल हो गए, यह आश्चर्य का विषय है। कहते भी तो हैं जो जिस परिवेश में रहता है उसी में ढलकर उसका अंग बन जाता है। जैसा देश वैसा भेष, उचित-अनुचित का भेद तो दृष्टि पैदा होने पर ही संभव है। हमारे हर तीर्थ स्थान पर यह सब व्याप्त है।

□

अचानक सरकार द्वारा आपातकाल की घोषणा हो गयी। अफवाहों के बाजार गर्म होने लगे। ढेरों किस्से-कहानियां कनफूसियों से छन-छन कर आने लगे। सरकारी अफसर, सरकार की चमचागिरी में जोर शोर से जुट गए।

डिग्री कॉलेज के प्रिंसिपल स्टेशन पर कुमार को मिल गए। कुमार ने वहीं बात शुरु की।

"सर....मुझे भी कॉलेज में दाखिला दे दें।"

"ठीक है, सोमवार को कॉलेज आ जाना।" प्रिंसीपल ने टाला।

"सर....दरअसल मैं बाइपास पर मोटर्र पार्ट्स की दुकान भी चलाता हूँ। मुझे हाजरी में छूट चाहिए थी।"

"ठीक है....तो ऐसा करो कैजुअल एडमीशन ले लो।"

"सर, उससे कैसे होगा?"

"तुम्हें सारे साल की फीस देनी होगी। दो किस्तों में जब चाहो क्लास अटैंड करो।" हाजरी की अनिवार्यता तुम्हें लागू नहीं होगी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"धन्यवाद सर... मैं सही समझा हूँ। पर लाइब्रेरी कार्ड तो मुझे चाहिए ही चाहिए।"

"ठीक है, सोमवार को कॉलेज आओ, तब बात करते हैं।" प्रिंसिपल ने पिंड छुड़ाया।

सोमवार को कुमार ने सीधे प्रिंसिपल के कमरे में हाजरी दी, "सर...ये मेरे प्रमाण पत्र। आपने कैजुअल एडमीशन के लिए कहा था।"

"अरे, तुम खुद चले आए। अपने पिताजी को लेकर आओ।" प्रिंसीपल ने लगभग डांट दिया।

"सर, पिता जी रात की ड्यूटी से लौटे हैं। अभी सो रहे हैं। मैं सब कुछ लाया हूँ...सर मैं बालिग हूँ।" कुमार ने विरोध जताया।

"बड़ों को बाइपास करके कोई बालिग नहीं होता। अपने गार्जियन को लाना पड़ता है। जब जगें, तब ले आना।"

दोपहर को कुमार पिता जी के साथ फिर गया। प्रिंसीपल ने दाखिले की शर्त रखी, "आपके बच्चे को एडमीशन तब मिलेगा जब आप अपनी नसबंदी कराएंगे।"

"पर मैंने तो सन बासठ में ही नसबंदी करा ली थी। मेरे पास प्रमाण पत्र है।"

"ठीक है, तो प्रमाण पत्र की प्रतिलिपी जमा करा दें और कोई एक केस लाकर दें। उसके बिना दाखिला मुश्किल है, हमारे पास ऊपर से आदेश हैं।" प्रिंसिपल ने जोर दिया।

कुमार भड़क गया, "मैं युवा कांग्रेस का नगर प्रधान हूं और जिले का सचिव भी। ये पहाड़े कृपया आप किसी और को पढ़ाएं। आप मुझे बताएं, पूर कॉलेज में एडमीशन के लिए आपने कितने केस दिए हैं? मैं अखबार में आपकी प्रशंसा छपवाऊंगा। मैं अभी लैटर हैड पर आपको पत्र देता हूँ।"

पिता जी ने कुमार को शांत किया, "बेटा मैं बात कर रहा हूँ न। मुझे बात करने दे।"

"हाँ प्रिंसिपल साहब, मैं आपको अपने नसबंदी प्रमाण पत्र की प्रतिलिपि भेजता हूँ। आप बच्चे का एडमीशन कर दें। केस लाना मेरे लिए मुश्किल काम है।" पिता जी ने कहा तो प्रिंसीपल नरम पड़ा।

"फिर भी आप कोशिश तो करें। एक हफ़्ते तक देख लेते हैं, नहीं तो आते सोमवार इसका दाखिला कर दूँगा।"

अगले सोमवार को सौ रुपये देकर दाखिला हो गया। लाइब्रेरी कार्ड भी बन गए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

□

धरम कुमार के पास आकर रो ही पड़ा, ''यार कहीं से दो हजार रुपये दिलवा दे।''

''धरम यहाँ बाइपास पे कौन है जिसके पास पैसे हों? वो भी दो हजार। तुझे ऐसी क्या जरूरत पड़ गयी।''

''यार, कमरे का किराया, छः महीने से ऊपर हो गए, नहीं दे पाया हूँ। मकान मालिक कमरा खाली करने का कह गया है।''

''अरे, जब तुझे पता है धंधा मंदा है तो सारे खर्च रोक के किराया देना चाहिए था।'' कुमार ने झिड़क दिया।

''चल बोल ले, तू बोल मैं सुनता हूँ।'' धरम चुप चाप कुर्सी पर बैठ गया।

कुमार ने कहा, ''मेरा ऐसा कोई मतलब नहीं था। पर अपने खर्चे का ध्यान तो रखना चाहिए।''

''यहाँ इतना मंदा है कि काम ही नहीं है। सरदार अपने किराए के लिए रोज छाती पे चढ़ा होता है। कोई ग्राहक आ जाए, बस उसे देखकर कर वहीं घूमता रहेगा। ग्राहक ने पैसे दिए नहीं के आ जाएगा और जबरदस्ती अपना किराया लेकर चलता बनेगा।''

''आज काम आएगा, कल काम आएगा, सोचते-सोचते मकान का किराया चढ़ता गया। तू यार मेरी मशीन गिरवी रख ले...जो मर्ज़ी ब्याज ले लियो। पर पैसे का इन्तजाम कर दे।''

''मेरे पास पैसे कहाँ है यार, दुकान का ज़रूरी सामान लाना है, वो भी जुगाड़ नहीं बनता दिखता।'' कुमार ने मजबूरी बताई।

''तो फिर ऐसा कर कमेटी डाल ले। दो सौ रुपये महीना, पन्द्रह महीने के तीन हजार, जिसे लेनी होगी, बोली लगा के ले लेगा। सबका काम भी चल जाएगा और ब्याज भी कम पड़ेगा।'' धरम ने सलाह दी।

''यह बात तो जोरदार है। पर पन्द्रह आदमी कहाँ से इकट्ठे होंगे? और कोई लेकर चला गया तो कौन भुगतेगा।'' कुमार ने दूर की सोची।

''देख, पांच तो हम डीजल पंप वाले मिस्त्री हैं, मैंने बात कर रखी है। उन्होंने ही कहा है कुमार चला लेगा। दो मैम्बरों की गारंटी लेकर कमेटी देना जिसने कमेटी न उठाई हो, और लेट कमेटी पे दस रुपये रोज का जुर्माना रख दे। डर के मारे कोई लेट भी नहीं करेगा। कुछ और लोगों से भी बातकर लेते हैं। सबको नियम पहले से बता देंगे।'' धरम सब कुछ पहले ही सोच कर आया था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"पर पहली कमेटी तो कमेटी चलाने वाले की फ्री होती है।" कुमार ने कहाँ

"यार तू पहली मत ले, मुझे बहुत ज़रूरत है, दूसरी ले लेना।" धरम अपनी चिन्ता में हैं।

"ठीक है, कोशिश करके देखते हैं। चल ज़रा औरों से भी बात कर लेते हैं। कुमार ने धरम को अपने साथ चलने को कहा।

"कागज़ पर नाम लिखते गए। अगले हफ्ते की तारीख दे दी। नियत समय पर सभी आए, पैसे दिए और बोली शुरु हो गयी। चौदह सौ के घाटे पर धरम ने कमेटी ली। सबको तिरानवे-तिरानवे रुपये वापस मिल गए, सभी बहुत खुश हुए।

आते महीने कुमार को पूरे तीन हजार मिले। कुमार ने थोड़े रुपये और मिलाकर दो पंप वालों को सोलह-सोलह सौ रुपये दिए कि तुम्हारी कमेटी मैं ले लूंगा।

नौंवी कमेटी आते-आते कोई बोली लगाने वाला नहीं था। सरदार जसवंत ने अपनी कमेटी तीन दिन बाद दिलबाग के हाथों भेजी। कुमार ने लेने से मना कर दिया कि तीस रुपये जुर्माना साथ दो।

अगले महीने जसवंत खुद आया, कमेटी के छः सौ रुपये दिये। कुमार ने ले लिए। साथ ही सुना दिया कि पिछली कमेटी जुर्माने के साथ आ गयी। इस महीने की दे दे।

जसवंत उखड़ गया, "तीन सौ की कमेटी के तीन सौ जुर्माना कौन देगा।"

"पता नहीं कौन देगा? पर ध्यान रख लेना ये पिछली कमेटी आयी है, इस महीने की कमेटी का जुर्माना कल से शुरु हो जाएगा।" कुमार ने चेताया।

"ठीक है, मैं नहीं दे रहा पिछली कमेटी, मेरे तीन सौ वापस कर दो। तीन सौ इस महीने के रख लो।" जसवंत अड़ गया।

"ले, तीन सौ वापस ले ले, पिछली कमेटी के दस रुपये रोज का मीटर चलता रहेगा...मुझे क्या है?" तू डिफाल्टर है इसलिए तुझे बोली बोलने का भी हक नहीं है।

तीसरे महीने जसवंत अपने साथ एक-दो लोगों को लेकर आया। कुमार ने कहा, "छः सौ रुपये जुर्माना और कमेटी दे तब बोली लगेगी तेरी।"

सबने दबाव डाला..., "यार कुमार, जसवंत से तीन दिन ही तो देरी हुई थी, ले लेता कमेटी।"

"अरे, मैंने तीन दिन के जुर्माने का कहा था। यह खुद आता और कह जाता गलती हो गई। चलो, तब नहीं कहा, अब कह दे, गलती हो गयी, मुझे एक पैसा जुर्माना नहीं चाहिए। जुर्माना तो मेरा है मेरी मर्जी मैं लूँ न लूँ।" कुमार ने बताया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जसवंत गलती मानने का तैयार नहीं हुआ तो उसके साथ आए मित्रों ने कहा, हम मानते हैं गलती इसी की है, पर अब तू जाने दे यार।''

कुमार ने कहा, ''बात जुर्माने की नहीं, अब इज्जत की है। पिछले महीने भी यह अकड़कर चला गया। अब भी यह दो आदमी तो साथ लाया है, पर गलती मानने को तैयार नहीं है। मैं छः सौ रुपये जुर्माने के छोड़ने को तैयार हूँ, पर इसे कहना पड़ेगा चल यार गलती हुई, बस।''

''नहीं तो भाई, यह ज्यादा नाकदार है, तो झिक-झिक क्यों करता है? छः रुपये देकर अपनी नाक ऊंची रखे। बोलो भी लगाए ..कमेटी भी ले जाए। कौन मना करता है?''

जसवंत ने कमेटी में छः रुपये जुर्माना मिलकर दे दिए.... ''यार, मैं नाक ही ऊंची रखूंगा।''

कमेटियां चल पड़ीं कि कुमार के यहाँ कमेटियां सुरक्षित हैं। अपनी कमेटी दो सदस्यों को देकर उसे पूरी एक कमेटी मुफ़्त बचती थी। साथ ही, हर माह के लाभ का हिस्सा भी।

□

इधर पाए का खेल जमा, उधर पागल बढ़ई मस्तान को गाली दिए जाता था, ''तेरी माँ की...मैं चना मटर भूनूं।'' उसकी दर्द भरी आवाज सुनकर सारे सतर्क हो गए। सूरज भागा, ''अरे, क्या हो गया।''

''मैंने चा माँगी, इस भैन....ने गरम पानी डाल दिया, देख जला दिया। हाय. ..मइया री...मर गया।'' पागल चिल्लाए जा रहा था।

''आजा...यहाँ आ, कुमार तुझे चाय पिलाएगा।'' सूरज उसे ले आया और कुर्सी पर बैठा दिया।

''कुमार, देख नसीब का खेल; चुन्नी ने माथे पर अपनी उंगली चलाई।'' ये बहुत बढ़िया कारीगर है। बस एक रात शमशान के पास से गुजरा तो वहाँ एक तांत्रिक ने जादू मार दिया। तब से ये पागल हो गया। अपना टूल का झोला लिए नंगधड़ंग घूमता रहता है...बेचारा।''

''हाँ....हाँ...इसे मैंने बहुत बार देखा है। एक दिन तो आइल भीगे कपड़े जला कर उनपर दंड पेल रहा था। देखो, पेट और छाती के पास जले के कितने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

निशान हैं।'' कुमार ने भी हामी भरी। पागल चुपचाप बातें सुनता खामोश बैठा था।

''बस, ऐसैई घूमता रहता है। मिल गया तो खा लिया, नहीं तो मस्त, वैसे ये बड़ा कलाकार है।'' फिर चुन्नी उस पागल से बोला...,''कुमार को बना के दिखा...वोई....बेटा... समझाकर, कुमार तुझे चाय पिलाएगा....मोटे को भी झाड़ेगा।''

पागल शर्माने लगा... ''लकड़ी भी तो नई ऐं।'' फिर अपने हाथ में पकड़ी लकड़ी को देखने लगा। झोले से बसूली निकाली और छील-छाल कर जो आकार बना रहा था, उसे देखकर सारे लड़के ठठाहने लगे। कुमार ने भी पागल का आशय समझकर उसे रोक दिया, ''यार तू चाय पी और जा।'' पागल ने बनाने का काम छोड़ दिया और किलककर हंसने लगा।

चुन्नी और सूरज बोले, ''यह मर्द-औरत का जोड़ा भी लकड़ी से बना लेता है जो लीवर से चलता है। हमने खुद देखा है।''

''सच है, कलाकार सिर्फ कलाकार होता है। अक्सर उसकी कला का सही मूल्यांकन ही नहीं हो पाता। कई जगह अच्छे-अच्छे कलाकार अपनी प्रतिभा छुपाए किसी गर्त में खो जाते हैं या अनाम जीवन गुजार देते हैं। यह विडम्बना भोगना कलाकारों के हिस्से अनायास ही आ जाती है।'' कुमार की आवाज़ नपी-तुली थी।

''अबे यार चलो, कुमार के डायलौग सुरु हो गए। ये क्या-क्या कह जाता है हमारे पल्ले कुछ नहीं पड़ता, दिमाग और खराब हो जाता है।'' सूरज ने अपनी चप्पलें पहनते हुए कहा और खिसक लिया।

□

कॉलेज लाइब्रेरी से निकलते ही लैक्चरर शर्मा टकरा गए।

''अरे कुमार, तू यूथ कांग्रेस छोड़कर यहाँ क्या कर रहा है।''

''सर...सोचा बी.ए.कर लूं। मुझे आगे जाना है, पढ़ना है।''

''अरे, तुमने सुना नहीं...शहर के [illegible]डे का[illegible] मिलेंगे...यूथ कांग्रेस के दफ़्तर में। फिर तूने यहाँ एडमीशन क्यों लिया?'' शर्मा जी शायद युवा कांग्रेस के खिलाफ अपनी भड़ास निकाल रहे थे।

''सर...बस यूं ही तफरीह में....यहाँ कॉलेज को ही यूथ कांग्रेस का अड्डा बना डालूंगा। यहाँ तो टीचरों को छोड़कर सारे यूथ हैं।'' कुमार अपने को रोक नहीं पाया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

''पहले थोड़ी तमीज़ सीख कर आ। प्रोफेसर को टीचर कहता है? बी.ए. क्या खाक करेगा।'' शर्मा सर हिकारत से कह कर चले गए।

तीसरा पीरियड अंग्रेज़ी का था, वह भी शर्मा जी का। कुमार कक्षा में गया, आगे की कुर्सी पर कोने में बैठ गया। लड़के आते गए, साथ की कुर्सी उठाकर पीछे बैठते गए। बाईं ओर लड़कियों की कुर्सियां, दांयी ओर लड़कों की। दांयी ओर पहली पंक्ति में सिर्फ कुमार की कुर्सी ही बची, शर्मा जी ने टोक दिया।

''क्यों भाई कुमार, तुम क्या अपने आप को ज्यादा बड़ा समझते हो। एक पंक्ति में अकेली कुर्सी।''

''नहीं सर....जब मैं आया तो पूरी चार थीं। तीन कुर्सियां लड़के उठाकर पीछे ले गए तो इस पंक्ति में मेरी अकेली बची रह गई।''

''चलो ठीक है...'' शर्मा जी सन्तुष्ट नहीं लगे। उन्हें जब मौका मिलता वे कुछ ने कुछ बात निकालते। एक दिन क्लास में कुत्ता घुस आया। कुमार ने जमीन पर पैर जोर से धपधपाया....''चल भाग।''

कुत्ता लौट गया, शर्मा जी ने कुमार को घेर लिया, ''क्यों भाई कुमार। तुमने उस बेजुबान जीव को क्यों दुत्कार दिया। वह भी पढ़ना चाहता था तुम्हारी तरह।''

''सर वो पढ़ना चाहे या पढ़ाना चाहे यह उसकी मर्जी। पर मैंने भगाया इसलिए, कि कपड़े पहनकर तमीज़ से आए, यहाँ लड़कियां भी हैं।'' सारी क्लास जोर से हँस पड़ी, पर शर्मा जी के दिल को तसल्ली नहीं हुई।

एक दिन तो कुमार के पंजाबी होने पर ही व्यंय का मुद्दा बना बैठे।

''यार कुमार, ये बता तुम्हारी भाषा कैसी हैं। स्टेशन का सटेशन, राजेन्द्र को रजिन्दर, ये नाम बिगाड़ कर क्यों बोलते हो?''

''सर, ठीक उसी तरह जैसे ब्रजभाषी स्टेशन को अट्टेसन, श्याम को स्याम और छिपकली को छिपक ली बोलते हैं।'' कुमार की हाजिर जवाबी छात्रों को रास आने लगी और उनका झुकाव कुमार की ओर बढ़ने लगा। इस तरह कुमार के नेता बनने में शर्मा सर का भी अप्रत्यक्ष योगदान रहा।

एक दो और लड़कों ने भी कॉलेज में कैजुअल दाखिला लिया था। वे प्रिंसिपल की छत्रछाया में थे, महीने दो महीने में एक दिन कॉलेज आते थे।

प्रिंसिपल और शर्मा सर की आपसी राजनीति में विरोध था। प्रिंसीपल ने कैजुअल छात्र दिनेश को भड़का कर शर्मा की बेइज़ती करा दी।

कुमार को पता चला तो हंगामा खड़ा कर दिया। सीधा प्रिंसिपल के पास जा पहुँचा, ''सर...यह गलत बात है।''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"क्या गलत हो गया...कुछ मुझे भी तो पता चले।" प्रिंसिपल एकदम अनजान बन कर बोले।

"सर...आपकी शह पर दिनेश ने शर्मा सर से बदतमीज़ी की है।"

"तुम कौन होते हो फैसला करने वाले? तुमसे किसने कहा मेरी शह पर ऐसा हुआ?" प्रिंसीपल भड़के हुए थे।

"सर...सारा कॉलेज जानता है। आप लोगों में कुछ वैमनस्य है। अगर है तो आप आपस में निपटिये, छात्रों को टूल क्यों बनाते हैं?" कुमार ने स्पष्ट कहाँ

"तुम कौन होते हो मुझे सिखाने वाले? गेट आउट, और कल से कॉलेज आने की आवश्यकता नहीं है।"

"सर... इस तरह की नादिरशाही आप यूथ कांग्रेस के नगर अध्यक्ष पर नहीं लाद सकते हैं। मैं भी देखता हूँ मुझे कॉलेज आने से कौन रोकता है? और जो सौ रुपये दाखिले के समय दिए थे उसकी रसीद मुझे अभी तक नहीं मिली है। कृपया दिलवाने की कृपा करें।" कुमार कहता गया।

"यू गेट आउट...सौ रुपये की रसीद का बच्चा।" प्रिंसीपल दहाड़े।

"ठीक है, आपको इस संदर्भ में रजिस्टर्ड डाक से पत्र मिल जाएगा। तब गेट आउट करना, चार माह तक पैसा जेब में रखे बैठे हैं और डांटते भी मुझे ही हैं।" कुमार निकल लिया।

शर्मा सर को सारी कहानी पता चली तो उन्होंने कुमार को बुला भेजा, "यार कुमार...तुमने तो कमाल कर दिया।"

"नहीं सर, मैंने कुछ नहीं किया। एक छात्र, वह भी कैजुअल, एक लैक्चरर की बेइज्जती करे, इसे कौन सहेगा? इस तरह तो कॉलेज राजनीति का अड्डा बन जाएगा।" कुमार ने अपनी बात कही।

"पर तुम मेरे लिए प्रिंसिपल से पंगा ले आए।" शर्मा जी बोले।

"सर...पंगा अपने उसूलों के लिए लिया था, आपके लिए नहीं। दूसरी बात यह कि मैंने एडमीशन में सौ रुपये दिए, अभी तक रसीद नहीं मिली। मुझे प्रिंसिपल की शिकायत करनी हैं। क्या आप मुझे बताएंगे, कहाँ और कैसे शिकायत करूं?"

"अरे कुमार, यह तो कुछ भी नहीं। वो तो छात्रों की सिक्योरिटी के पन्द्रह रुपये तक वापस नहीं करता। मैनेजमैंट और उपकुलपति को लिख डाला।" शर्मा जी ने कुमार को प्रोत्साहित किया।

शिकायतों का सिलसिला चल पड़ा। कुमार को अगले छः माह के सौ रुपये भी नहीं देने पड़े। दूसरे साल रेगुलर दाखिला भी आसानी से मिला।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

□

सुखबीर ढाबा छोड़ गया। विजय का ढाबा भी बंद हो गया। सारे बाइपास पर मुर्दनी छायी है। लोकल ट्रक और ट्रैक्टरों के अलावा काम ही नहीं निकलता।

दुकानों के खुलने, बंद होने का समय बदला गया। चारों तरफ़ ठाली लोगों के जमावड़े है। ताश...लड़ाई-झगड़े और अपनी दुकानों में अकेले ऊबते लोग। यह है बाइपास का नजारा।

कुमार अपनी पढ़ाई पर जोर दे रहा है। पर कितना, लगातार बारह घंटे सिर्फ पढ़ा भी तो नहीं जा सकता। कुर्सी पर ऊंघा भी कितना जा सकता है।

खाली दिमाग में हैं दूर-दूर की सोचें उभरती है। आसमान में जहाज निकले तो कुमार सोचता है जहाज आकाश में ही फट जाए। किसी स्मगलर की सोने से भरी अटैची उसके पास आकर गिरे। बस मज़ा आ जाए।

फिर सोचता है... इतने सोने का प्रयोग कैसे होगा....सारा सोना छुपा के रख लूंगा। थोड़ा-थोड़ा बेच के बहनों की शादी हो जाएगी। कुछ सोना बेचकर ट्रैक्टर पार्ट्स भी दुकान में बढ़ा लूंगा। साथ ही पंप इंजन बेचने की ऐजेन्सी ले लूंगा।

सारा-सारा दिन हवाई जहाज़ की आवाज़ सुनता पेड़ के नीचे बैठकर आसमान को ताकता रहता है...जहाज को जाते देख नजरें गड़ाए रहता है। जब तक जहाज नजरों से ओझल नहीं हो जाता। फिर उकता कर सोचता है... यह तो मुश्किल काम है।

दिमाग में विचार उठता है कोई स्मगलर ही मिल जाए तो उसका काम कर दूँगा। वो मुझे चार पेटियां मोटर पार्ट्स भेजा करे, उसमें एक पेटी अपनी रख दे। मैं उसकी पेटी खोलकर भी नहीं देखूंगा, जिसे वो कहेगा दे दूँगा। पर ऐसा भी कुछ नहीं होता, न कोई आसार ही नजर आता है।

कुमार की बेबसी बढ़ती जाती है। घर के लिए साल भर की गेहूँ लेनी है। आठ बोरी गेंहू डेढ़ हजार की, पर डेढ़ हजार इकट्ठा होकर नहीं देता। अभी कपड़े वाले की उधारी उतारी है, सिलाई वाला तकाज़ा करे जा रहा है। पिता जी की तनख्वा से महीने का रोटी-पानी और भाई-बहिनों को खर्चे पूरे होकर नहीं दे रहे।

"बहन की बी.एड. की फीस और होस्टल के पैसे रो-पीट कर निकलते हैं। उफ...हाय...कहाँ से आएं पैसे?"

"क्या ऐसा नहीं हो सकता कोई रेल गाड़ी टकरा जाए। इनके एक्सीडेंट तो

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
प्रायः सुबह तीन-चार बजे ही होते हैं। अंधेरे में सीधा फर्स्ट क्लास के डिब्बे में घुसूंगा। औरतों के जेवर उतारकर वहीं पास में किसी झाड़ी के नीचे इकट्ठा करके दबा दूँगा। जब झमेला खतम हो लेगा। तो आराम से किसी दिन जाकर निकाल लाऊंगा।''

फिर सोचता... चेन और सैट तो आराम से उतर जाएंगे। चूड़ियां और अंगूठियां कैसे निकलेगीं? फिर लाश के या घायल के पास इतनी देर कैसे की जा सकती है? यह काम तो बहुत जल्दी करना होगा।

...पर इसके लिए तो कतिया अपने पास रखना होगा। कतिये से तो लोहे के तार भी कट जाते हैं। हाँ, यही ठीक होगा... इन्हीं ख्यालों में समय निकलता जाता है।

इस लाचारगी में ध्यान आता है, भला ऐसा कैसे हो सकता है? एक घायल को तो ज़रूरत होगी, कोई उसकी सहायता करे। अरे, पहले तो उन्हें सुरक्षित डिब्बों से बाहर निकालना होगा। इसके लिए बहुत लोगों की ज़रूरत होगी।... कुमार की आंखों में आंसू उतर आते हैं।

नज़र के सामने दृश्य आ जाता है कि रेल का एक्सीडेंट हो गया है। कुमार देखकर चिल्लाता है...आओ...बचाओ...फिर लोगों के साथ लग पड़ता है जो सामने आए उसे बचाओ वह बड़ा है, छोटा है, गरीब है, अमीर है कुछ सोचने का समय नहीं है। बस एक ही सोच है वह घायल है, जरुरतमंद है।

नींद से जागा तो शर्मिंदा हुआ, कोई कैसे किसी मजबूर के सोने या रुपये के हड़पने के बारे में सोच सकता है। इनसानियत के जज़्बे को कोई कैसे दबा सकता है। फिर एक भद्दी-सी बाइपास वाली गाली गरीबी को निकाल कर सोचता है, ''चलो अच्छा हुआ, ऐसा कुछ नहीं हुआ।''

□

मुबीन ने कुमार की बगल की दुकान में मिस्त्री का काम खोला है। मुबीन के पिता मथुरा में मुनीमी करते हैं। मुबीन के साथ उसका छोटा भाई मुस्तकीम भी है।

मुबीन ने कुमार को शिकायत की, ''कुमार...चाचा ने मेरी दुकान के बरामदे में मुर्गीयों का दड़बा बनवा दिया है, इसे हटवा दे।''

''मुबीन, तुझे पता है न चाचा किसी की नहीं सुनता। मैंने परसों ही देख लिया

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
था। चाचा से कहा भी था। चाचा बोला-एक दुकान किराए पर दी है। वो क्या पूरी बिल्डिंग का ठेका लेगा?''

''ठीक है, फिर रखे अपनी दुकान, किराएदार हैं तो क्या उसकी धौंस में काम करेंगें।'' मुबीन गुस्सा होने लगा।

''मैंने तो दड़बा बनाने वाले मिस्त्री को रोका था। पर चाचा आ गया.... बोला...चल बे खाली कर दे दुकान। तो मैं चुप हो गया।'' मुस्तकीम ने बताया।

एक दिन एक मुर्गी बीमार-सी घूम रही थी। प्रीतम सिंह मस्तान पर गरम हो गया, ''क्यों बे मोटे, हराम की खाता है। ध्यान क्यों नहीं रखता?''

''मैंने क्या ध्यान नहीं रखा? चौबीस घंटे तो यहीं ढाबे पे मरता हूँ। छः सौ रुपये की खातिर...अब रोज़-रोज़ तुम्हारी बातें भी सुनूं।'' मस्तान ने भी जवाब दे दिया।

''अबे, तुझे दिख नहीं रहा, वो सफेद मुर्गी बीमार घूम रही है। एक-दो दिन में मर जाएगी।'' प्रीतम सिंह ने कहाँ

''मरेगी तो मर जाएगी....मेरे पास कौन-सा इंजैक्शन रखा है, जो इसको लगा दूँ।'' मस्तान ने सफ़ाई दी।

''इंजैक्शन तो नहीं रखा, पर छुरी तो है। ले जा पीछे और पतीले में सजा दे।'' प्रीतम सिंह ने हुकम दिया।

''बीमार मुर्गी लोगों को खिला दूँ क्या?'' मस्तान भड़का।

''पक जाएगी तो ठीक हो जाएगी। चल बड़बड़ मत कर, मुर्गी साफ़ कर ले।'' प्रीतम ने दबे लहजे से कहाँ शाम को मुर्गी पतीले में सजी ग्राहक का इंतज़ार कर रही थी।

दड़बे में बाकी मुर्गियां पल रही थीं। मुबीन और कुमार बैठे थे कि मुर्गी कुमार की दुकान में घुसी। कुमार धूप सेकना छोड़ मुर्गी भगाने उठा।

मुबीन ने रोक दिया, ''बैठ जा...मुर्गी अण्डा देने गयी है।''

''तुझे कैसे पता अण्डा देने गयी है?'' कुमार ने पूछा। ''ऐसे पता कि चार मुर्गियां मेरी दुकान में अण्डा दे रही हैं। हम आमलेट खा रहे है।'' मुबीन ने रहस्य खोला।

''मुबीन, गलत बात....चाचा को पता चला तो जान खा जाएगा।'' कुमार ने आगाह किया।

''पहले तो चाचा को पता ही नहीं चलेगा। पता चल भी गया तो कह देंगे एक तो हम अण्डा दड़बे से नहीं उठाते। मुर्गी हमसे खुश होकर हमारी दुकान में अण्डा देती है तो दुकान का अण्डा तो हमारा है।'' मुबीन ने अपनी समझदारी दिखाई।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तभी कुमार की दुकान से मुर्गी की कुड़क की आवाज सुनाई दी। मुबीन बोला, ''चल दे दिया अण्डा।''

अन्दर गए तो मुर्गी बाहर भाग ली। जहाँ ट्रक सफ़ाई की धोतिया। पड़ी थीं, वहाँ सात अण्डे पड़े थे। कुमार ने अण्डे उठाए मस्तान को देने चला, मुबीन ने रोक दिया।

''वाह रे समझदार, खुद का नुकसान भी कर और मुझे भी मरवा दे। भले मानस, ये मुर्गियों के दड़बे का किराया है। जो मुर्गियां हमें देती हैं। मजे से आमलेट खा और मौज कर।'' मुबीन ने सलाह दी।

महीने भर चैन से अण्डे खाए। प्रीतम सिंह ने दो दिनों में दो-दो मुर्गियां पतीले में पहुंचवा दीं। कुमार को पता चला तो प्रीतम सिंह से बोला।

''चाचा, मुर्गियों को क्यों पकवाए जा रहा है? पालने को रखी हैं तो पाल, हत्या क्यों सिर लेता है?''

''अरे, कुड़क मुर्गियों को दाना पल्ले से खिलाऊं इतना बेवकूफ नहीं हूँ और तेरा मुबीन भी कलपता है, दड़बा हटाओ।'' प्रीतम सिंह ने कहा।

''चाचा, तुझे किसने कहा कुड़क मुर्गियां हैं, अण्डे नहीं देती हैं। अरे, तुझे अण्डे नहीं मिलते तो क्या, हम तो खाते हैं। एक मुर्गी मेरी दुकान में, चार मुबीन की दुकान में अंडे देती है।'' कुमार ने स्थिति साफ कर दी।

''धत् तेरे की, मैंने खामखां मुर्गियां कटवा दीं। चलो, देर-सवेर तो उन्हें छुरी के नीचे आना ही था।'' प्रीतम सिंह ने सहज ही लिया।

□

चुन्नी, शर्मा और सूरज कंजी के पेड़ तले चारपाई डाले, पाए (ताश का एक खेल) खेलने की फिराक में थे। चुन्नी ने शर्मा को कहा, ''चौथा पाया ढूंढ़ कर ला यार।''

''कुमार को बुला ले।'' शर्मा ने सलाह दी।

सूरज ने कहा, ''कुमार न आने का, चुन्नी बुला सकता है, चुन्नी की कुमार से ज्यादा रैट पैट है।''

''क्यों तेरे मुंह में दही जम रही है क्या।'' चुन्नी ने जवाब दिया।

''अबे, ज्यादा हुड़क तो तुझे ही लगी है, सुबह से पाए-पाए चिल्ला-चिल्ला के जान आफत में कर रखी थी, अब हमें कह रहा है।'' सूरज ने चुन्नी को जिम्मेदार ठहराया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

''अबे, तूने छः गाड़ी में ग्रीसकरी है। नोट तो तेरे पास खुड़क रहे हैं।'' चुन्नी ने बात सूरज पर डाली।

''चलो, तो बंद पाए...कल देखेंगे। ये रक्खी तुम्हारी ताश की गड़डी'', सूरज ने गड्डी फेंकते हुए कहा।

''अबे, रुक न मैं बुलाता हूँ चौथा पाया।'' चुन्नी दौड़कर कुमार के पास गया। कुमार, ''आजा यार, चार-छः बाजी पाए हो जाएं।''

''तुम खेलो, मैं जुआ नहीं खेलता।'' कुमार ने जवाब दिया।

''यार, तू मत खेलियो, मेरी तरफ़ से खेल, हार-जीत मेरी। वहाँ चौथे आदमी की ज़रूरत है।'' चुन्नी ने मीठे स्वर से कहा।

''पर मुझे पाए नहीं आते, कुमार ने कहा।''

''अरे कुछ नहीं, बस फ़्लैश जैसे चार हाथ बनाने होते हैं। जो जितने हाथ जीते वो जीता। तू आ न मैं बताता हूँ।'' चुन्नी बेसब्र हो रहा था।

कुमार मान गया। चुन्नी ने ताश बांट कर एक बार कुमार को समझा दिया कि क्या तकनीक है। खेल चल पड़ा...कुमार की ही जीत ज्यादा हुई पर पैसे चुन्नी को मिले, यही तय भी था।

अगले दिन से कुमार अपनी तरफ से खेलने लगा। कभी प्रीतम सिंह भगवान सिंह, और लोग भी आ जाते और वहाँ अक्सर पाए जमे होते।

एक दिन चुन्नी जीत रहा था। ''वह उठने लगा, मैं अभी आया।''

''बैठ जा बे, जीत के भागने नहीं देंगे।'' प्रीतम सिंह ने कहाँ वह हार रहा था।

''न चाचा, मैं बस मूतने जा रहा था।'' चुन्नी ने बात बदली। कुमार ने जवाब दिया, ''बैठ जा यहीं मुता मुताया मंगवा देते हैं। खांमखा मेहनत करेगा।'' सबने खूब रस लिया।

एक बार कुमार जीत रहा था। उसने भी जाने का बहाना किया, ''अभी मूत कर आता हूँ।''

चुन्नी ने बात को लपका, ''मुता मुताया ला देता हूँ तू बैठ।''

''न तेरा यकीन नहीं, तू झूठा कर लाएगा।'' कुमार ने जवाब दिया।

''तू ये रोज नए टोटके कहाँ से लाता है।'' चुन्नी ने पूछा।

''ये टोटके...नये मॉडल के एक्सल के जोड़े के साथ फ़्री मिलते हैं, एक्सल तो एक-एक बिकता है टोटके बच जाते हैं तो तुम पर चलाता हूँ।'' कुमार ने हंसकर कहाँ।

रोज यही झमेला, ताश बाजी, थोड़ी देर तलाश होती है चौथे पाए की। कभी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
प्रीतम सिंह कभी भगवान सिंह या कोई लोकल ड्राइवर समस्या का हल करने आ जाता है। फड़ जमता है तो कुछ न कुछ ज़रूर होता है।

"ओए चुन्नी, तूने पत्तों में कांप लगाकर गड्डी बांटी।" शर्मा, चुन्नी से अड़ जाता है।

"हाँ...कांप लगा के बांटी...तब क्यों नहीं टोका?....ये जुआ है, अंधों का खेलना मना है।" चुन्नी बेशर्मी से हंस के कहता है।

"जुआ होता है जो बैलों के गले में पड़ता है...फिर उसे जिन्दगी भर जुतना पड़ता है। तेरे बस का नहीं है तो चल हट पासे हो...लेया चुन्नी चल बांट, कांप लगा के बांट, "तेरे को भी देख लेते हैं।" प्रीतम सिंह पीछे से सुनता आ रहा था वह शर्मा को एक ओर करके खुद बैठ गया।

"ओ चाचा, तू तो पहली चारों बाजी में हाथ जीता...इस बाजी में हार गया. ..ये हाथ मेरा है।" ला दो रुपये निकाल, वैसे चाचा तेरे रुपये कैड़े पड़ते हैं। सूरज खुशी से चहक पड़ा।

"सूम का माल हर किसी को नई पचता। ये तो हम कुरैश कुरैश है जो पचा जाते हैं।" चुन्नी बिना बोले नहीं रह सकता।

"अच्छा बेटा, हमारे रुपये कैड़े पड़ते हैं....तो ले, जे रक्खी तुम्हारी गड्डी, मैं ताश ही नहीं खेलता।" प्रीतम सिंह ने उठते हुए ताश की गड्डी चारपाई पर डाल दी।

"मत खेल....चाचा मेरे दो रुपये तो दे।" सूरज पीछे पड़ लिया।

"ओए, कौन से दो रुपये....यहाँ ढाबे पे रोज-रोज का जुआ आज से बंद।" प्रीतम सिंह अपनी पर आ गया।

"चाचा बंद या खुला, मेरे दो रुपये दे दे....मैं वैसे ई सुबह से छः रुपये हार गया हूँ। मुझे ग्रीस लानी है।" सूरज चिरौरी करने पे आ गया।

"अबे, बिना पिटे चला जा....ग्रीस मेरे से दो रुपये से ले के लानी है। ये हाथ भी हार जाता तो कहाँ से लाता ग्रीस....जा वहीं से ले आ।" प्रीतम सिंह अकड़ के बोला।

"देख चाचा, मत दे दो रुपये। चारों पायों को चाय ही पिला दे....।" सूरज ने हथियार डाल दिये।

"चल भई....दो बटे तीन चाय डाल दे इन जुआरियों को।" कहता हुआ प्रीतम सिंह ढाबे की मलाई सम्भालने में लग गया।

चुन्नी ने चाय का घूट भरते ही कहा, "जिसने हमारा मुंह चलवाया, अल्लाह

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उसकी पेंदी चलवाए।''

शर्मा बोला, ''ऐसे न ...ऐसे कहो, जीवत रहो जजमान तुम्हारी दोऊ फूटें, मौह के बल ऐसे गिरो दांत बत्तीसों टूटें।''

''ओ चाचा....चुन्नी और शर्मा तुझसे कुछ कह रहे हैं....इनकी तो सुनता जा।'' कुमार ने घर जाते प्रीतम सिंह को पीछे से आवाज दी। पर प्रीतम सिंह बिना सुने चला गया।

प्रीतम सिंह ने घर से कुमार को बुलावा भेजा। कुमार गया तो आदेश मिला।

कुमार यह श्यामा, अपने दाल मिल वाले सुरेन्द्र बंसल की छोरी है। इसे टूशन पढ़ा दिया कर।

चाचा ट्यूश्न कब पढ़ाऊंगा, टाइम कहाँ है मेरे पास।

अबे, उल्लू के पट्ठे मुझसे पूछता है, टूशन कब पढ़ाऊंगा। जब तेरे पास टैम तो पढ़ा देना। तैने कौन सा इसके घर जाना है। यहीं आ जाएगी। ये किट्टू की सहेली है इसके साथ किट्टू भी पढ़ लेगी। दो सौ रूपया महीना तेरे को मिलेगा। खाली हिन्दी और अग्रेजी पढ़नी हैं

चाचा मैं सोचकर बताऊंगा। कुमार दो सौ रूपया महीना सुन कर लालच में आ गया।

सोचना क्या है। कल से ये आएगी। चार-पांच बजे तो बाइपास पे कोई काम भी नहीं होता।

ठीक है चाचा....पढ़ा दूँगा।

कुमार, कल कितने बजे आ जाऊं, मैंन बिहारी और विद्यापति पहले पढ़ना है। जो आप कहें लेती आऊं। श्यामा खुशी खुशी बोली।

कुछ भी ले आना, पर चार बजे आ जाना। कहकर कुमार आ गया।

□

''कुमार, तुझे हिन्दी प्राध्यापक शंकर त्रिपाठी बुला रहे हैं। स्टाफ रूम में तेरी परेड है। उसे पता चल गया है तू कॉलेज में हड़ताल करा रहा है।'' वरुण ने कुमार को शंकर त्रिपाठी का संदेश भरी क्लास में दिया।

''अरे, वो ढोगी पाखंडी क्या कुमार की परेड लगाएगा, खुद तो पीरीएड भी नहीं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
लेता....सबको धमकाता फिरता है। लम्बा लाल तिलक लगा के वो क्या समझता है अपने आप को?'' सुमित ने अपनी भड़ास निकाली।

''अरे वो...हा...हा...कहानी प्रतियोगिता का निर्णायक जिसने बिजेन्द्र की कहानी पर प्रथम और कर्णसिंह की कहानी पर द्वितीय पुरस्कार दिया था। उसे नहीं पता था मौलिक कहानी प्रतियोगिता रखी गयी थी। नियम पहले ही बताए गए थे। मैंने तो उसको बता भी दिया था कि उन दोनों ने साप्ताहिक हिन्दुस्तान और कादम्बनी में छपी कहानी को लिखा है। उनकी कहानी मौलिक नहीं है। मेरी मौलिक कहानी को तृतीय रखा, क्योंकि मैं कुमार का साथ दे रहा हूँ। वो नाम का ब्राह्मण है...पूरा ढ़ोगी-पाखंडी है।'' सुनील खूब ऊंचे-ऊचे स्वर में बोल रहा था।

''ओए सुनील...तेरी कहानी मौलिक थी ये तू भी जानता है, सारे छात्र-छात्राएं भी जानते हैं। बस एक बेचारा शंकर त्रिपाठी नहीं जानता। दूसरे, कॉलेज की प्रतियोगिता का क्या महत्त्व है। आने वाला समय तेरे लेखन का निर्णय करेगा, तू खुद यदि इसी तरह लिखता रहेगा तो तेरी पहचान बनेगी, देर भले लग जाए। पर दूसरों की कहानी चुराकर लिखने वाले कभी लेखन में नहीं आएंगे, फिर चिन्ता कैसी!'' कुमार ने कहा और स्टॉफ रूम की ओर चल दिया। सीधा शंकर त्रिपाठी के सामने पहुँचा।

''सर....आपने याद फरमाया।''

''आओ....महारथी आओ....सुना है कॉलेज में हड़ताल कराई जा रही है।'' शंकर त्रिपाठी व्यंग्य से बोले।

''बिलकुल बजा फरमाते हैं जनाब....बेचारे छात्र मजबूर हो गये हैं। हड़ताल के अतिरिक्त कोई विकल्प उनके पास बचा ही नहीं है।''

''अच्छा अच्छा....कोई विकल्प नहीं बचा। यह जानते हुए भी कि आपातकाल में हर प्रकार की हड़ताल पर पाबंदी है।''

''सर यही, तो सही समय है जब प्रशासन को पता चलेगा कि इस कॉलेज में क्या अंधेरगर्दी हो रही है। दूसरे अपना अधिकार माँगना कहीं भी, कभी भी नाजायज नहीं हो सकता।''

''तुमने जेल जाने का पूरा इरादा कर ही लिया है तो कोई क्या कर सकता है?'' ईश्वर ही तुम्हारी रक्षा कर सकता है। वरना इनसानों की तो तुम सुनने से रहे।''

''सर, जेल भी चले जाना पड़े तो कोई शर्म की बात नहीं है....यह कोई चोरी-डकैती के केस में जेल जाना नहीं है बल्कि इससे तो मेरी नेता की छवि और सुधर जाएगी....जिले और विश्वविद्यालय तक मेरा नाम चला जाएगा।''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"हरि इच्छा, इसमें कोई क्या कर सकता है?"

"वैसे सर एक बात बताऊं? गांधी....नेहरू...भगत सिंह सबने जेल के दर्शन करके जेलों को पवित्र किया है....इतिहास तो यही घोषणा करता है।"

"तेरा परीक्षा का सैंटर तो यही कॉलेज है न....और तेरा मन परीक्षा पास करने का है नहीं।"

"सर जी.....परीक्षा तो यहीं से देनी है....पास भी करनी है। आपके इरादों का ज्ञान मुझे पहले से ही है। जब परीक्षाएं होंगी तब यहाँ विश्वविद्यालय का ऑब्जर्वर तैनात होगा....आप बेचारे अपने इरादों में कामयाब नहीं हो पाएंगे।"

"शाबास...शाबास, कुमार तू तो भविष्यवाणी भी बहुत बढ़िया कर लेता है रे....भाई मान गए, तुझको।" शंकर त्रिपाठी जलभुन कर बोला।

"सर जी...मान भी लें कि आप कामयाब हो जाते हैं। तो आपको बता दूँ...मुझे नौकरी तो करनी नहीं है। दुकान मैं पहले से चला रहा हूँ पर अन्याय करने वाले को कोसी में तो रहने नहीं दूँगा....क्योंकि गांधी जी कह गए हैं अन्याय सहने वाला भी दोषी होता है।"

"अच्छा, अब तू निकल ले....तुझसे बात करना तो पत्थर से सिर टकराना है।" शंकर त्रिपाठी बड़ी हिकारत से बोले।

दूसरे दिन कुमार ने खादी का सफेद कुर्त्ता पायजामा पहना...माथे पर लम्बा त्रिपुंड लगाया...गले में माँ की तुलसी माला उठाकर पहन ली और कॉलेज पहुंच गया।

"अरे कुमार, यह क्या...तू और तिलक धारी?" जो मिलता वहीं हंसता और टिप्पणी करता।

"मैं ढोगी हूँ...मैं पाखंडी हूँ....कुमार सभी को हंस कर अपनी तुलसी माला और तिलक दिखाते हुए कहता। सभी समझ रहे थे कि सारा स्वांग सिर्फ शंकर त्रिपाठी को चिढ़ाने की गर्ज से किया गया है।

शंकर त्रिपाठी अपनी साइकिल से उतरा तो कुमार अपनी भंगिमा में सामने ही था। वह टेढ़े ओठों से मुस्कराया, "अरे कुमार, ये बहरूपिया क्यों बना हुआ है रे?"

"कुछ नहीं सर....मैं बस....ढोंगी और पाखंडी हूँ...यहाँ सरे-आम स्वीकार कर रहा हूँ।" कुमार ने नपे तुले शब्दों में कहाँ

ये शब्द शंकर त्रिपाठी को भीतर तक बेधते चले गए। वे चुपचाप स्टाफ रूम में चले गए। उस दिन उन्होंने कोई भी पीरियड नहीं लिया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

□

जिला अध्यक्ष युवा कांग्रेस का पत्र आ गया। लखनऊ युवा कांग्रेस अधिवेशन में कोसी की ओर से दो बसें भरकर जाएंगी।

जाने वाले सारे रेहड़ी वाले, ग्रीस वाले तैयार हो गए। बस चल पड़ी तो बहुत से लड़के बस में जुआ खेलने लगे। कुमार ने आगाह किया, "कमीनो मथुरा में जिला अध्यक्ष देखेगा तो मेरी इज्ज़त का फलूदा हो जाएगा।"

"बौस, चिन्ता मत करो। हम तब बंद कर देंगे। अब मन लगाने को कुछ तो चाहिए।" लड़कों ने आश्वस्त किया।

मथुरा में सारे जुआरी जुआ खेलते रहे और कुमार को डांट पड़ी। तेरा कंट्रोल एक दम बेकार। मथुरा से बस चलते ही कुमार ने धमकी दे डाली, "अगर अब भी बाज न आए, तो भुगतने को तैयार रहना।"

"अरे कुमार, जो होना था हो लिया। अब कोई रस्ता भर तेरी चैकिंग थोड़े होनी है।" लड़के बोले।

"अबे, तो गुंडों की रैली तो मत बनाओ। साले कहीं अमरूद वाले के अमरूद उठाते हो, कहीं केले। गरीब आदमी का भी ख्याल नहीं करते। यह साला कौन-सा तरीका है।"

"ओ नेता जी....हमें लाने का तुमने कौन-सा भाड़ा दिया है। एक तो युवा कांग्रेस में तुम्हारी इज्ज़त रखने को चले आए....के नेता जी को कोसी में चलती है।"

"तो साले, तुम इस तरह ब्लैक मेल करोगे। मेरी इज्ज़त का फलूदा करोगे? मैं अपनी पे आ गया तो सालो, यहीं के यहीं तुम्हारा बाजा बजा दूँगा....नेता गिरी करते हैं, कोई घास नहीं छीलते।"

"ओ भइया कुमार, हमें नहीं जाना तेरे अधिवेशन में, हमें यहीं उतार दे। तूने ये कब कही थी, ताश भी नहीं खेलने देगा।" काफी लड़के बिफर पड़े।

कुमार ने प्रकाश से सलाह की, "ये साले यों नहीं मानेंगे। इनका कुछ बंदोबस्त करना पड़ेगा।"

प्रकाश ने भी कहा, "आगरा में कुछ करता हूँ।" आगरा बस रोक कर कुमार और प्रकाश चूरन की दुकान पर गए। चार-पांच शीशी चूरन खरीदा। दो शीशियों में जमाल घोटा मिलाया और बस में आ गए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जो लड़के शान्त बैठे थे उनको एक शीशी चूरन की दी, ''लो भाई तुम्हारा इनाम, शराफत से चलने का।''

''कुमार बौस हमें भी, हम क्या रांड के जवाई हैं।'' ताश खलेने वालों की मंडली ने शोर शुरु कर दिया।

''लो तुम भी मरो।'' जमाल घोटा मिली शीशियां कुमार ने उनकी ओर उछाल दीं। चूरन अन्दर गया पन्द्रह मिनट में वहाँ से आवाज़ आयी।

''बस रुकवाओ पेट गड़बड़ कर रहा है।'' बस रुकी तो एक गया। वह आया नहीं कि दूसरा भी पीछे चल पड़ा। वे सड़क पार झाड़ियों के पीछे चले जाते।

बस चली, दस मिनट बाद फिर रोकने की गुहार, उसके बाद बस चलते ही रुकने की गुहार। कहाँ वे थोड़ा दूर झाड़ियों के पीछे जाते थे अब बस से उतरते ही बैठने लगे। पांच छः की तो पैंटें उतरकर उनके कंधों पर थीं।

जब अच्छी तरह पस्त हो गए हो रोए गिड़गिड़ाए, ''कुमार भइया बचा ले।'' कुमार के अन्दर भी डर था कहीं अधिक गड़बड़ न हो जाए। एक जगह बस रोककर किसी ट्रक ड्राइवर से थोड़ी अफीम ली, ज्यादा पस्त लड़कों को चटाई तब उन्हें राहत मिली।

लखनऊ आने से पूर्व सभी को बता दिया गया, ''अरे समय पर आ जाना, नहीं तो बस चला दूँगा...फिर मत कहना हमारे पास तो वापसी के पैसे नहीं है।'' कुमार और प्रकाश ने कस के ताकीद कर दी।

''ले वापसी की भली पूछी....अरे जिस मर्जी...रेल या बस में बैठ जाएंगे... रैली वालों को कौन रोकेगा...और अपनी धौंस अपने पास रखे रखो....कहीं पुलिस वाले पे जमाने के काम आएगी। हम तो मस्ती मारने आये हैं।'' कुछ लोग बोले।

''जैसी तुम्हारी मर्जी....आगे तुम जानो।'' कुमार ने पिंड छुड़ाया, ''यार कुमार, तेरी बस की गिनती जिला अध्यक्ष को दर्ज हो गयी न, मस्त रह....क्यों टैंशन लेता है?'' गिरीश बोला। वह एक स्थानीय अखबार का संवाददाता है।

लड़के अधिवेशन के बजाय सड़कों पर आवारा गर्दी करते नज़र आए। हर ओर युवा कांग्रेस और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के लोगों के हुजूम। एक दिन पहले आर. एम.एस. का अधिवेशन था।

कोसी के कुछ लाला लोग भी नजर आ गए। कुमार, प्रकाश इत्यादि को वहाँ देखकर उन्होंने अपनी पीली टोपियां उतार कर जेबों में रखी और मिलने पर हाथ मलते हुए बोले, ''अरे तुम यहाँ कैसे? अच्छा युवा कांग्रेस अधिवेशन में....बहुत बढ़िया...बहुत बढ़िया...हम तो यहाँ छोरी कू छोरा देखने आये।''

उनके जाने पर सभी खूब हंसे? ''छोरी कूं छोरा देखने आए...हिम्मत नहीं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पड़ती कह दें हम भी आर.एस.एस के अधिवेशन में आए हैं।'' उन दिनों युवा कांग्रेस का डर इसी तरह फैल रहा था।

कोसी लौटे तो यह बात सच हुई। शर्मा ने सलाह दी, कुमार तेरा यूथ कांग्रेस प्रचार केन्द्र हटाले।

''अबे, इससे तुझे क्या आफत आ पड़ी?'' कुमार ने पूछा।

''मुझे क्या आफत है? इसे देख के ट्रकों ने रुकना बंद कर दिया है। तेरे डर के मारे किसी ने इसे हटाया भी नहीं।''

''पर हुआ क्या? ट्रकों ने रुकना क्यों बंद कर दिया?'' कुमार परेशान हुआ।

''अरे सब डरते हैं। यहाँ रुके तो युवा कांग्रेस वाले पकड़ के नसबंदी करा देंगे।'' शर्मा ने समझाया।

''हमने कितनो की नसबंदी करा दी है? ये अफवाह है। कौन फैला रहा है?'' कुमार ने जानना चाहा।

''अफ़वाह अफ़वाह कुछ नहीं। लोगों के मन में बात बैठ गयी है। युवा कांग्रेस मतलब नसबंदी। पुनिया एक ट्रैक्टर वाले को हैंड बिल पकड़ाने गया तो ट्रैक्टर वाला ट्रैक्टर में रेस दे के भाग गया। पुनिया क्या उसकी नस काट रहा था।'' शर्मा ने अपनी बात कही।

''यह तो गलत बात है। यह तो प्रचार के लिए लगाया गया है। इससे अगर डर फैल रहा है, तो हटाओ साले को। हमें नहीं चाहिए प्रचार केन्द्र। ऐसा कर लाउड स्पीकर खोल के भिजवा दे और टैंट वाले को बोल, बल्ली कनात ले जाए। जित्ता नहाए उत्ता पुन्न।'' कुमार ने फैसला दे दिया।

आस-पास के गाँवों के कुछ लोग आना शुरु हो गए।

''कुमार साहब, राम राम।''

''राम-राम चौधरी साहब, हुकम।''

''कुंवर साब, एक खास काम से आया था। आपने लाज रखनी है।''

''ताऊ जी आप हुकम करें....वैसे मैंने आपको पहचाना नहीं।''

''मेरा छोटा बेटा पीताम्बर आपके साथ पढ़ता है न, उसका युवा कांग्रेस का प्रमाण पत्र बनवाना है।''

''अरे... आपको उसके लिए प्रमाण पत्र की क्या जरूरत पड़ गयी?''

''कुंवर साब आपसे क्या छुपाना। वो लौंडों-लपाड़ों के चक्कर में शाखा जाया करता था। पता चला है अब उनकी तहकीकात हो रही है। उन्हें पकड़-पकड़ के बंद कर रहे हैं। किसी ने बताया युवा कांग्रेस का प्रमाण पत्र ले लो।'' तो बच जाएंगे।

''क्या आप के गांव में या आपके पास कोई इन्क्वारी आयी है?'' कुमार ने पूछा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"न जी...अभी तो न आयी। पर इन दिनों कुछ पता नई चलता। बस आप इतनी मेहरबानी कर दो।"

"मगर वो तो यूथ कांग्रेस में कभी नहीं रहाँ मैंने उससे कहा भी था पर उसने तो साफ मना कर दिया था।"

"यहीं तो गलती हुई। पर कुंवर साब, आपको तो पता है। उसने ऐसा कुछ नहीं किया। कल को गिरफ्तारी हो गयी तो किसकी माँ को माँ कहूँगा। आप मेरा ये काम कर दो....मैं जिन्दगी भर आपका अहसान नहीं भूलूंगा।" वे हाथ जोड़ कर विनीत हो आए।

"ताऊ जी, आप हाथ मत जोड़ो। पर मेरे लिए भी बचने का रास्ता तो छोड़ो। कल को मुझ पर ही बन जाए कि पैसे लेकर कुमार ने झूठे प्रमाण पत्र बनाए हैं।" कुमार ने शंका रखी।

"पैसे तो जी आप जो कहो मैं देने को तैयार हूँ।" उन्होंने कहा।

"ताऊजी मुझे पैसे नहीं चाहिए। इतना गिरा हुआ आदमी मैं नहीं हूँ। एक रास्ता है। युवा कांग्रेस की छः हजार की सदस्यता पर्ची पड़ी हैं। आप पच्चीस रुपये की रसीद बुक पीताम्बर के दस्तखतों की कटवा कर दे दो। मैं कर्मठ कार्यकर्ता का प्रमाण पत्र दे देता हूँ।" कुमार ने रास्ता निकाल लिया।

दूसरे दिन ही वे रसीद बुक कटवा लाए, कुमार ने प्रमाण पत्र दे दिया। रसीद बुक के पच्चीस रुपये वे देने लगे तो कुमार ने बताया कि लाला लोगों से पैसे लेकर मंगाई हैं, अतः मेरा कुछ नहीं लगा। इसलिए पैसे लेने का कोई मतलब नहीं है।

इस तरह कई लोग प्रमाण पत्र ले गए, जबकि कभी किसी, प्रमाणपत्र का कोई प्रयोग नहीं हुआ। बस एक डर था जो चारों ओर धुंध की तरह फैल गया था।

□

कुमार के दुकान खोलते ही शर्मा चाय के कप लेकर आ गया, "आज बड़ी देर कर दी कुमार?"

"देर....काहे की देर? अभी कुल आठ ही तो बजे हैं। रोज यही पांच मिनट आगे या पीछे ही तो आता हूँ। चल छोड़, ये बता सुबह-सुबह ये चमचा गिरी कैसे?"

"कौन-सी चमचागिरी...यार हम तो तुझे बड़ा भाई समझ के सलाह लेने आए हैं। तेरे दिमाग में फितूर घुसा पड़ा है।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"अच्छा जी, हमारे दिमाग में फितूर घुसा है, मुझे बड़ा भाई बता रहा है, ये चमचागिरी नहीं है क्या? मेरी उम्र बीस साल है, तेरी कितनी है?"

"होगी पच्चीस-छब्बीस।"

"होगी का क्या मतलब? तू किस सन में पैदा हुआ था, यह बता?"

"सन छोड़ न यार कुमार, मुझे एक जरूरी बात करनी है। पैदा तो मैं तब हुआ था जब फत्ते की बकरी मरी थी।"

"शाबास....और बकरी उस साल मरी थी जिस साल खूब बारिश हुई थी, है न.... ।"

"अरे हाँ...पर कुमार ये बात तुझे कैसे पता चली।"

"बस चल गयी, किताबों में बहुत कुछ लिखा होता है। हाँ पूछ क्या पूछ रहा था?"

"कल रात मेरी चाचा प्रीतम से बात हुई। चाचा कह रहा है बीस रुपये रोज पे ढाबा किराए पे ले ले। अर्तन-बर्तन....कुर्सी-मेज समेत, तू बता सौदा कैसा है?"

"अरे, ये मुझसे क्या पूछता है? अपने घर पिता से सलाह कर....खुद देख, क्या बचत होगी?"

"अरे कुमार, हमारा तो भाई भी तू और बाप भी तू।"

"माँ-बाप तो बस संग सोए तो मैं पैदा हो गया, होश संभाला तो बाइपास पे धकिया दिया। मेरा क्या, यहाँ तमाम लौंडों का यही किस्सा है। वो छोड़ न, तू अपनी सलाह दे।"

"शर्मा, सबसे पहले ये देख ढाबे पे बिक्री कितनी होती है, उसमें लागत कितनी और बचत कितनी है। उसमें से बीस रुपये किराए के देने के बाद महीने के खर्चे, लड़कों के पैसे, बिजली, सफाई वाले के। मतलब जो जरूरी खर्च हैं, निकलेंगे के नहीं?"

"देख कुमार, बीस-पच्चीस आदमी खाना खा जाएं तो दिन भर की लागत निकल आती हैं। किसी दिन तीस-पैंतिस गाहक लग जाएं तो मोटी बचत है। अभी सरदार, सौ डेढ़ सौ रुपया महीना ही तो देता है।"

"अगर मोटी बचत है तो प्रीतम सिंह तुझे ढाबा किराए पे क्यों दे रहा है?"

"आज कल मंदा है न...तभी तो किराए पे चढ़ा रहा है। तेजी में कौन देता है। मंदी के दिन तो अब बस ये बरसात [illegible] हैं यो जान के और पन्द्रह दिन...हद बीस।"

"अगर तुझे लगता है फायदा होगा तो ले ले...डरता क्यों है? पर प्रीतम सिंह

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
ने और कुछ क्या कहा वो बता। इसका कोई भरोसा नहीं है।''

''वो तो मुझे भी पता है। पूरी बात खोल के कर ली है? बस रोज दूध की मलाई वो लेगा और बिजली का बिल पूरे महीने का मुझे देना होगा।''

''पर मीटर तो एक ही है, सारी दुकानों के लिए और प्रीतम सिंह के घर भी लाइट यहीं से जाती है।''

''उसकी फिकर नईं है। बिजली वाला अपनी जान-पहचान का है। दस रुपये महीना लेता है, बहुत कम की रींडिग लिख के बिल भिजवाता हैं।''

''ले फिर क्या है, फिर तो हो जा आज से शुरु।''

''शुरू तो हो जाऊं, मेरे पास सौ रुपये हैं सारा सामान दो सौ का आएगा। सौ रुपये टूट रहे हैं, कुमार भइया तू मदद कर दे तो बेड़ा पार है।''

शर्मा जमीन पर बैठ गया....कुमार के पैर पकड़ लिये, ''देख मनै मत करियो....मैं पाम न छोडुंगो...ये मेरौ जिन्दगी मौत कौ सवाल है। देख मैं जल्दी वापस कर दूँगौ, जिन्दगी भर तेरौ अहसान नहीं भूलूंगौ।''

''अच्छा पैर छोड़...देखता हूँ। सुबह-सुबह पैसे कहाँ से आए।''

''कोई बात नहीं उस्ताद, संजा को दे देना। माल तो शाम तक को उधार भी मिला जाएगा। पर देख शाम को मिलने जरूर चाहिएं। न तो सारा मामला खराब हो जाएगा।''

''देखता हूँ।''

''न भइया ऐसो मत कर, कुमार सिरफ तेरी वजह से नौकर से ढाबा मालिक बन जाऊंगा, बाइपास पे दो पैसे की इज्जत हो जाएगी।''

''चल ठीक है...पर ध्यान रख ले, पैसे की वापसी हफ्ते भर में हो जानी चाहिए।

ढाबे का नौकर उसी दाबे का मलिक, रौब वाला बन गया। कुमार के पैसे भी वापस कर दिए। अभी महीना भी नहीं गुजरा कि प्रीतम सिंह की शिकायत शुरु। ''तू पूरी मलाई नहीं देता....जो देता है उसमें से मक्खन ही नहीं निकलता।''

''रोज की किलकिल से तंग आकर शर्मा को ढाबा छोड़ना पड़ा। उसी दिन सुखबीर ने चालीस रुपये रोज और मलाई की शर्त पर ढाबा किराए पर ले लिया।''

''शर्मा अपनी ग्रीस की बाल्टी सौ रुपये में बेच चुका था। अब काम नहीं था...ढाबे वालों ने ईर्ष्या से काम पर रखने से मना कर दिया।''

चुन्नी ने आड़े वक्त सहारा दिया सिर्फ रोटी-चाय पर अपनी पंचर लगाने की दुकान पर रख लिया, पूरे तीन सौ साठ अहसान जताकर।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

□

कुमार ने कॉलेज में हलताल का नोटिस बनाया और प्रिंसिपल और पुलिस के साथ ही उपकुलपति को रजिस्ट्री भेज दी। नोटिस में कुल बत्तीस माँगें डाली।

सभी सामान्य माँगें, कि छात्रों के पीने के पानी के घड़े सीढ़ियों के नीचे रखने के बजाय कमरे में रखे जाएं। क्लास रूम की खिड़कियों पर पल्ले नहीं तो कम से कम जाली तो लगे। कमरे में दो पंखे हों, दो ट्यूब लाइट हों, फर्श पर खड़ंजे पर पलस्तर नहीं तो टीप की जाय, कमरे में पचास कुर्सी कम से कम हो हर पीरियड में छात्र कुर्सियां लेकर न भागते फिरें, इत्यादि इत्यादि।

प्रिंसिपल ने सुबह-सुबह पुलिस बुला ली। एस.एच.ओ. ने प्रिंसिपल रूम में छात्र संघर्ष समिति के अध्यक्ष को बुला भेजा। कुमार जब कमरे में गया तो सामने एस.एच.ओ. था।

''आओ कुमार, तुम यहाँ कहाँ?''

''मैं ही छात्र संघर्ष समिति का अध्यक्ष हूँ। हड़ताल का नोटिस मैंने ही भिजवाया था।''

''इस ने अति उठा रखी है, इसे अरेस्ट करो...आपातकाल में हर प्रकार की हड़ताल और अराजकता अपराध है यह जानते हुए भी यह बदमाशी पर उतर आया है।'' प्रिंसिपल ने अपनी आवाज़ को तेज़ करते हुए कहा।

''अरेस्ट आप प्रिंसिपल साहब को करिये। मुझसे सौ रुपये लेकर आज तक न कॉलेज में जमा किए न रसीद दी, मेरे पास लाईब्रेरी कार्ड पर तारीख है। इनके गबन की रिपोर्ट मैं थाने आकर लिखाता हूँ।''

थानेदार कुमार को ऑफिस से बाहर ले आया, ''कुमार देख, आपतकाल लगा है। मेरी जान वैसे ही सांसत में है। देख अपने छात्रों को रोक ले। वे कोई आगजनी या तोड़-फोड़ बिलकुल भी न करें।''

''अंकल, आप चिंता न करें मैं स्वयं सरकारी अधिकारी का बेटा हूँ। आपकी मजबूरी अच्छी तरह समझ सकता हूँ। आप निश्चिंत रहें। छात्र किसी भी प्रकार की आगजनी या तोड़-फोड़ नहीं करेंगे। प्रदर्शन पूर्ण रूप से शान्तिपूर्ण होगा। इसका मैं आपको विश्वास दिला सकता हूँ।''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

''देख ले कुमार....ये मेरी नौकरी का प्रश्न है। अगर ऐसा कुछ करना है तो बता दे...फिर तू तीन-चार दिन बाद करना, तब मैं छुट्टी ले लूंगा।''

कुमार के तेज दिमाग ने तुरंत समझ लिया कि एस.एच.ओ. को खुद अपनी पड़ी है। बस फिर क्या था। उसने कहा।

अंकल फिकर नाट....ये कुमार का वायदा है, बस आप प्रिंसिपल से इतना भर कहते जाएं...छात्रों के मामले में मैं दखल नहीं दूँगा....आप जानों वो जानें।''

''उसकी चिन्ता तू मत कर....वो मैं देख लूंगा।'' कह कर एस.एच.ओ. चला गया।

कुमार ने रिक्शा बुलाकर लाउडस्पीकर लगवाया और जलूस को प्रिंसिपल के घर तक ले गया। छात्रों को नीचे बैठा दिया कि तुम लोग छाती पीटो और मुर्दाबाद के बुलंद नारे लगाओ।

अभी पांच मिनट नहीं हुए कि प्रिंसिपल की पत्नी ने कुमार को बुला भेजा।

''यह सब क्या है...मैं तो तेरे को बड़ा प्रबुद्ध समझती थी। ''

''क्यों आंटी, अपने अधिकार माँगना, बेवकूफी कैसे हो गया?''

''इस गंदे और घटिया तरीके से....पहले इसे रोक फिर मुझसे बात कर, मैं सुनूंगी तेरी बात।''

कुमार ने तीसरी मंजिल से झांका और छात्रों को रुक जाने का इशारा किया। हाँ आण्टी जी, ''आदेश करें।''

''तू क्या चाहता है...?''

''मैंने अपनी माँगे लिख कर दी हैं आप आधी माँगे भी मनवा दे तो मैं आपका आभार मानूंगा।''

''देख कुमार, मैं अपनी ओर से पूरा प्रयास करूंगी, कितना माना जाएगा....मैं तुझसे झूठ नहीं कहूँगी। बस, अभी तो इतना ही कह सकती हूँ।''

भीड़ वापस चल पड़ी। रास्ते में कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति के सचिव की तेल मिल पड़ी। कुमार को विचार सूझ गया, ''यार तुम जोर-जोर से नारे लगाओ। मैं अभी सचिव से मिल कर आता हूँ।'' कुमार मिल में घुस गया।

''चाचा जी, प्रणाम।''

''प्रणाम....कुमार तू आज ये हड़ताल लेकर क्यों चल रहा है? अरे मुझसे कहता, मैं कुछ करता तेरे लिए।''

''चाचा जी...आप अपने हैं तभी तो आया हूँ आपके पास। छात्र बहुत गुस्से में हैं। वो कहते हैं लाला की मिल में आग लगा दो।''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"तेरा सत्यानाश जाय...रोक उन्हें, मैंने तो बैंक से दो लाख का लोन ले के माल भर रक्खा है। मैं बर्बाद हो जाऊंगा...कुछ कर बेटा...तू तो मेरा राजा बेटा है।"

"चाचा जी, आप तो मैनेजमैंट के सचिव हैं....आपके पास लैटर हैड पड़ा होगा। उसमें मैंनेजमैंट की बैठक दिखाकर प्रिंसिपल को सस्पेंड कर दो, लैटर हैड मुझे दो मैं लड़कों को दिखा दूँगा वो चले जाएंगे।"

"अरे, ऐसे कैसे लिखकर दे दूँ...मैंनेजमैंट की बैठक हुई कहाँ है?"

"अरे चाचा जी...उसकी ज़रूरत नहीं है। बस लैटर हैड पर लिखकर दे दो. ..लड़कों को दिखाकर मैं कल आपको वापस कर दूँगा। लड़कों को शान्त करने का और कोई तरीका तो मेरे पास है नहीं....लड़के गुस्से में हैं। आप उनकी आवाज़ें तो सुन ही रहे हैं।"

"मेरा राजा बेटा...मैं लिख देता हूँ...पर ध्यान रखना! ये कागज मुझे कल वापस ज़रूर कर देना। नहीं तो मैंनेजमैंट में मेरी बहुत किरकिरी हो जाएगी।"

"चाचा जी, आप चिन्ता ही मत करो।"

सचिव ने पत्र बना दिया। कुमार ने जेब में डाला और छात्रों से कहा, "बस बहुत हो गया अब घर जाओ। कल कॉलेज में मिलते हैं।"

सचिव की मिल से कुमार सीधा लैक्चरर शर्मा के घर पहुंचा, "गुरुजी ये लो।" कह कर सचिव वाला पत्र उनके हाथ में दे दिया।

"शाबास कुमार... ये हुई न बात...भई मान गए तुझको। अब ऐसा कर, मैं कपड़े बदल लेता हूँ। देवकी नन्दन के घर चलते हैं। वो वाइज़ प्रिंसिपल हैं। उनसे मिल कर आगे का कार्यक्रम बनाते हैं।"

देवकी नन्दन जी को तो बांछें ही खिल गयीं। कार्यक्रम बना कि सुबह-सुबह कुमार तीन-चार लड़कों को साथ जाकर इस पत्र को हैड क्लर्क से रिसीव करा ले। फिर वहीं खड़ा रहे। जब प्रिंसिपल अपनी हाजरी लगा ले, तो वापस चला आए। हाजरी लगाते ही यह पत्र उसे सर्व माना जाएगा। फिर देवकी नन्दन....प्राचार्य की सीट संभाल लेगा।

बिलकुल इसी तरह हुआ भी। सचिव को प्रिंसिपल ने फोन किया तो वह बहुत कलपा, पर अब उसके हाथ में भी कुछ नहीं था।

खूब झमेला हुआ, कानून की सलाहें ली गयी। तय पाया कि पिछली डेट में बैठक दिखाकर इस कार्यवाही को दिखाया जाय। छः माह चुप बैठ कर देखा जाए। छः महीने यदि चार्ज नहीं लगेगा तो कानून है कि सस्पेंशन आदेश निरस्त माना जाएगा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

□

बाइपास पर मातम छा गया। ग्वालियर के पास चम्बल का पुल टूट गया है। लौंग रूट का सारा ट्रैफिक आगरा मथुरा के बजाय अलीगढ़, टूंडला होकर जाएगा।

पहले ही टूटा-फूटा ग्राहक आता था पर यह विपदा सभी भारी है। पर कोई रास्ता तो निकलना ही चाहिए। धर्म भीरुओं को और साधन हीनों को ईश्वर का ही आसरा विश्वसनीय लगता है।

चावला ने पप्पी से कहा यार, ''खाली बैठे-बैठे बोर होते हैं। चलो, वैश्नोदेवी हो आते हैं।''

पप्पी जैसे उधार खाए बैठा था, ''मैं तो पहले ही सोच रहा था पर कोई साथी ही नहीं मिल रहा था और कौन-कौन चल रहा है?''

''ले, और कौन...अभी तो तेरे से पूछा ही है। चल, कुमार से पूछते हैं। वो तो चल ही पड़ेगा, अगर वो चल पड़े तो मज़ा आ जाएगा...इतनी दूर अकेले जाने में डर लगता है...कुमार के साथ और बात है।''

दोनों कुमार के पास पहुँचे बौस वैश्नो देवी हो आएं। ''यहाँ अभी काम तो है नहीं। माँ के दर्शन हो जाएंगे...और पहाड़ पर घूमना भी।''

''चलो...कौन-कौन जा रहा है?''

''अरे, हम भी जाएंगे। नहीं तो तुम्हें भी नहीं जाने देंगे।'' बीच में ही विजय जाट ने अपनी धपंग पेल दी।

''ठीक है....चार यार बहुत हैं। अब ज्यादा भीड़ मत बढ़ाओ, दो-दो सौ रुपये जमा करा दो, आना-जाना, खाना-खर्चा...बराबर-बराबर कुमार ने सलाह दी।''

''अरे, और जाएगा भी कौन, मंदे में किसके पास पैसे रखे हैं। ये तो हम लोग व्यापारी हैं। तो ये लो। सबने पैसे दे दिए।''

''अब जाने की तारीख बताओ।''

''कल....और कब? सबकी राय है?''

दूसरे दिन साढ़े नौ की जनता से एक बजे दिल्ली और दिल्ली से हिल स्टेशन रिटर्न टिकट मिल गए, बत्तीस रुपये प्रति सवारी, जम्मूतवी रेल शाम चार बीस चल कर सुबह छः बजे जम्मू पहुँचेगी।

जब कटरा पहुंचे तो पता चला एक आध धर्मशाला ही है, सरकारी गैस्टहाउस

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
है तो किराया इतना कि जान निकल जाए। विजय हँसता हुआ आया।

"चलो, हमारे संग चलो। हमने जुगाड़ कर दिया है।"

"अरे, तूने क्या जुगाड़ किया, यहाँ तुझे कौन जानता है?" पप्पी ने पूछा।

देख लो, "कर दिया, अब चलो।"

वह एक गली में ले चला। एक दरवाजे में घसा...पीछे की ओर आवाज़ लगा कर बोला..."आ जाओ।"

तीनों पीछे रुक गए, "अबे मरवाएगा क्या...तू तो किसी घर में घुसा जा रहा है।"

"हाँ...घर में ही तो कमरा है...और क्या सड़क पे छोड़ देता तुम्हें?" विजय अकड़ कर बोला।

तब तक मकान मालकिन भी आ गयी, "आ जाओ भक्तो...अपना घर है। जहाँ मर्जी समान रख दो, चटाइयां पड़ी हैं सो जाओ...जब मन करे चढ़ाई पर चले जाना।"

"माता....किराया कितना लगेगा?" चावला ने पूछा। कुमार चुपचाप सारे क्रिया कलाप देखता चल रहा है।

"बेटा, जो श्रद्धा हो दे देना...बाहर अपनी दुकान है। माता का चढ़ावा वहाँ से लेकर जाना बस, और क्या?"

चारों चटाई बिछाकर बैठे और सलाह की अभी तो ग्यारह ही बजे हैं। चढ़ाई शुरुकर देनी चाहिए। चौदह कि.मी. पैदल यात्रा, रास्ता भी कंकड़ों भरा है।

जै माता दी करते यात्रा करते जाते। थक कर चूर हो गए पर देखा, बच्चे, बूढ़े, जवान, स्त्री और पुरुष जा और आ रहे हैं। सबके चेहरों पर मुस्कान और माता के जै कारे हैं। शाम सात बजे दरबार पहुंचे। कम्बल किराए पर लिए...बड़ी-बड़ी धर्मशालाओं,में बड़े-बड़े हाल हैं, जहाँ जगह मिले दरी कम्बल बिछाकर आराम करो।

सुबह-सुबह उठकर स्नान किया तो जैसे सर घूम कर रह गया...बर्फ का पिघला पानी ठंड से शरीर को जमाए दे रहा था। पर दर्शन का विश्वास सब पार करा गया।

दर्शन करके उतराई की। उतराई अपेक्षाकृत आसान है। दोपहर ग्यारह बजे कटरा पहुंचे तो सोचा सीधे जम्मू चला जाए...रघुनाथ मन्दिर आराम से देख सकते हैं। गाड़ी तो रात नौ बजे की है।

तीन बजे तक जम्मू स्टेशन के प्लेट फार्म पर चादर डाल कर बैठ गए। पप्पी के मन में कुछ उमड़-घुमड़ कर रहा है, "यार पहले ध्यान आता तो अमृतसर गुरुद्वारे में मत्था टेकने का प्रोग्राम भी बना लेते।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"तो अब बना ले...अभी क्या गया है?" कुमार ने उसकी बात का समर्थन किया।

विजय उखड़ गया, "कोई भी काम चारों की सलाह से होगा, तुम घर से कह के चले थे। अब साले? तुम आपस में जो मर्जी करे जा रहे हो?"

"अरे विजय...बुरा क्यों मानता है यार? तुमसे अलग क्या कर दिया" कुमार ने विजय को पुचकारा।

ये अमृतसर जाने की बात...ये टिकट बेकार करके दूसरी टिकट का किराया मैं क्यों दूँ...? गुरुद्वारे तुम पंजाबियों को जाना है...मुझे नहीं टेकना मत्था, मैं क्यों फालतू के पैसे खर्चूं?"

"टिकट यही काम आएंगी....बस वाया अमृतसर कराने का अन्तर देना पड़ेगा। जलियां वाला बांग और शीतला मन्दिर भी तो दर्शनीय हैं। अब तो घर से निकल पड़े हैं...रोज़-रोज़ कौन आता है?" कुमार ने बताया।

"तैंने किससे पूछी के टिकट में खाली अन्तर देना पड़ेगा...के अपना कानून चला के हमें बेवकूफ बना रहा है।" विजय अभी उखड़ा हुआ है।

"पप्पी, चावला तुम सामान देखो...हम अभी आते हैं और हाँ अगर आठ-दस रुपये अन्तर से वाया अमृतसर टिकट बनती हो तो बनवा लें न।" तुम्हारी हाँ है ना, कुमार ने पूछ लिया।

"यार, दस-बारह भी लगे तो करा लियो।" दोनों ने हामी भरी।

"चल जाट राम...बुकिंग ऑफिस चल के अभी पता किए लेते हैं।" कुमार चल पड़ा।

"चलो...इसमें क्या है? तेरे घर का कानून हम भी पढ़ लेते हैं।" विजय उत्साह से चल पड़ा।

कुल छः रुपये सवारी अन्तर के साथ टिकट वाया अमृतसर बन गयीं। साथ ही ताकीद कि गाड़ी सामने प्लेटफार्म तीन पर है और पांच मिनट में चलने वाली है।

"कुमार, तू टिकट ले के आ...हम सामान लेकर गाड़ी पर पहुँचते हैं।" विजय कह कर भाग लिया। पप्पी और चावला के पास जाकर चिल्लाया, "जल्दी करो सामान उठाओ परले प्लेटफार्म वाली गाड़ी अमृतसर जाएगी...कुमार आ रहा है। उसका सामान भी उठाओ।"

"अबे, इतनी जल्दी क्यों कर रहा है?" पप्पी और चावला की समझ में कुछ नहीं आया तो चावला ने पूछा।

"अरे, गाड़ी चलने वाली है...बखत हो गया... पहले सामान उठाओ...बाकी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

फिर पूछना।'' उनके सीट सम्भालते तक कुमार टिकट ले के आ गया था। विजय खुश था, ''यार, ये बढ़िया काम हो गया।'' छः रुपये में अमृतसर की घुमाई भी हो जाएगी।

कुमार ने अब उसकी खबर ली, ''क्यों भई जाट राम, पहले तो तू लड़ रहा था...अब नाच रहा है। जब चार यार एक साथ चले हैं तो एक दूसरे का विश्वास तो होना चाहिए न। देख लिया न अकल बड़ी होती है, भैंस नहीं,।''कुमार ने रोब जताया।

''और तुझे लेकर किसलिए आए थे? इसीलिए न के बखत जरूरत काम आएगा।'' विजय बेशर्मी से बोला।

''शाबास...अबे हम तुझे लाए हैं कि तू हमें लाया है?'' चावला ने विरोध किया।

''एकई बात है...तुम लाए मैं लाया...क्यों भाई कुमार?'' विजय अब चुहल पर आ गया था।

सुबह छः बजे अमृतसर स्टेशन क्लाक रूम में सामान रख कर बाहर निकले तो पंजाब के बड़े शहर को देखते ही रह गए। सबसे बड़ा ताज्जुब तो यह कि रिक्शों में स्कूटर का इंजन लगा था। सीधे जलियां वाला बाग पहुंचे।

दीवारों पर, कुंए में...हर ओर गोलियों के निशान देख...चारों बतियाते रहे..देश...देश भक्ति....अमर शहीदों...और लाला लाजपत राय को याद कर करके अग्रेजों को लानत मलानत करके पहुंचे स्वर्ण मन्दिर गुरुद्वारे।

भव्य और खूबसूरत भवन, साथ ही आस्था के साथ दर्शन करने वालों का हुजूम। प्रसाद लेकर सिरों पर रूमाल बांध मत्था टेका तो चारों को ऐसा लगा जैसे बड़े तीर्थ पर आए हैं।

विजय वापसी पर चहकता था, ''यार सरदारों में बड़ी श्रद्धा होती है। बड़े-बड़े घरों के औरत-मर्द पोचा-झाड़ू लगा रहे थे, जूते साफ कर रहे थे, बर्तन माँझ रहे थे। भई, मजा आ गया इतनी श्रद्धा देखकर।''

''अबे जाट राम, तू भी अमृत छक लेता...हम पंजाबियों के घरों में तो गुरु नानक को फोटो और जपुजी का पाठ होता ही है। हमारे घरों के सदस्य तो गुरुद्वारें भी जाते ही हैं। ये खाली सरदारों की आस्था का प्रश्न थोड़ी है। सारे पंजाबियों का है। भले सिख हो या मोना...तूने देखा नहीं ?'' वहाँ कितने मोने थे। पप्पी बता रहा था।

''स्वर्ण मन्दिर के दरवाजे देखे...कितने बड़े और सुन्दर हैं।'' चावला ने कहाँ ''इन दरवाजों का भी एक किस्सा है।'' कुमार ने बताया, ''जब मोहम्मद गौरी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
सोमनाथ मन्दिर के दरवाज़ों की सुन्दरता पर मोहित होकर उतार कर अपने साथ ले गया तो सिखों की सेना लड़कर वापस ले आयी थी। पर सोमनाथ मंदिर के पंडितों ने स्वीकार करने से मना कर दिया। अब ये मलेच्छ हो गए हैं। वही ये दरवाजे हैं जो अब हर मंदिर साहब की शोभा बढ़ा रहे हैं।''

गाड़ी जालन्धर में रुकी तो पप्पी और चावला प्लेट फार्म पर उतर गए। जब लौटे तो उनके हाथों में उबले अण्डों के दोने थे। दोनों अण्डे खाते हुए आ रहे थे। यह देखकर विजय ने टोक दिया।

''अबे बिलाड़ी (ब्लडी), तुमने तो माता के दरबार में कंजक न बैठाई, के घर जा के जिमाएँगे। अभी कंजक जिमाए बगैर अण्डे कैसे खा रहे हो?''

दोनों के हाथों से दोने छूट गए। मुंह के कौर भी उन्होंने उगल दिए, ''जै माता राणी भुल बख्शीं...असां तेरे लाल। माई, असां भुल्लणहार तू बख्शणहार।'' दोनों के चेहरों पर गहरा पश्चाताप का भाव था।

□

शर्मा ने धीरे से ट्रक को पेड़ के नीचे लगाया और उतर के कुमार के पास आया।

''यार कुमार, बीस रुपये दे दे और साफ्ट बोल्ट और काटर पत्ती बोल्ट का पैंतिस रुपये का बिल बना दे, पन्द्रह तेरे।''

''अबे शर्मा, तू तो पूरा ड्राइवर बन गया बे।''

''काय का ड्रैवर, मरा पड़ा हूँ। तू बीस रुपये दे दे न।'' शर्मा पिछवाड़े पर हाथ रखे करहाता सा बोला।

''क्या हुआ...चोट लगी हे क्या?''

''अरे न यार, ड्रैवरी सीखने की बिल्टा से कही थी तो साले ने टैक्स लगाया।''

''ड्राइवरी सिखाने में उसने टैक्स काय का लगाया?''

''अरे, साले ने पी के पेंदी ठोकी...तू बीस रुपये दे न, बहुत दर्द हो रहा है। दर्द की गोली लूंगा और पऊआ पी के सोऊंगा।''

''अरे....ऐसी बात, तूने उसे मना क्यों नहीं किया?''

''मना करने से क्या होता है, ये तो दस्तूर है। वो साला खुद पेंदी ठुकवा के ड्रैवर बना है। अब बिना टैक्स लगाए किसी को स्टेरिंग पे नईं बैठने देता है।''

''तो मत बनता ड्राइवर...किसी और से सीख लेता।''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"कुमार, कहने को कछु कहे जाओ पर एक बात लिख के रख लो। सारी दुनियां साली चोदन-भोजन के फेर में है भले मानौ, मत मानौ। जा दिन तुमपै पड़ी साले तुम भी पेंदी ठुकवा रहे होगे। पर तुम्हारी किस्मत अच्छी है जो माँ बाप के संग इमली के पत्ते के डंड पेल रहे हो।"

"शर्मा, ऐसा कुछ नहीं है। यह तो आदमी-आदमी के ऊपर निर्भर करता है।"

"टिण्डा है आदमी-आदमी के ऊपर, साले यहाँ बाइपास में जितने लौंडे हैं, चाहे ढाबे के या मिस्त्राट के सब पे यई बीत रही है।"

"अरे नहीं यार, ऐसा थोड़े न होता है।"

"लगाएगा शर्त...ये जो सामने बैठी हैं...वो छोटी वाली। साली...उस दिन मेरे पे गुर्रायी थी। तू सौ रुपये की गारंटी ले। जिस दिन उसे जरूरत होगी आ लेगी, देख लियो। इनके लिया। सौ रुपये बहुत ज्यादा होते हैं।"

"कैसे...कैसे...पूरी बात बताइयो, कुमार जिज्ञासु हो उठा।"

"अरे ऐसे, के उसे सौ का नोट दिखा के कहना पड़ेगा....जिस दिन चाहिए हो, आ जइयो, तेरे लिए नोट अलग से पड़ा है। बस जब पांच-चार दिन इन्हें कुछ न मिला तो आ जाएगी पर सौ का नोट पहले लेगी, उसे पता है यहाँ किसी पे पैसे नहीं होते।"

"अरे !"

"अरे क्या....भूख बड़ी भैन... चीज है। अच्छे-अच्छों को लैन पे टीप देती है। सारे ड्रैवर जाते हैं लाचियों में आइल पलटी करने।"

"लाचियों में मतलब?"

"अरे, रंडी बाजी करने...एक बगल से...देख ले कौन-कौन हैं, एक भी बचा हुआ हो, तो बता दे?"

□

लंगड़ा मोहन मिस्त्री, ग्राहक के साथ आया, "कुमार एम्बेसेडर का वाटरबाड़ी बैरिंग है?"

"हाँ...है।"

"कितने का?"

"एक सौ पांच का।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"और वाटर बाडी सील?"

"चार रुपये।"

"दे दे....इनकी वाटर बाडी लीक है। ये कह रहे थे अगर बैरिंग मिलेगा तो खुलवाऊंगा, नहीं तो नहीं।"

कुमार ने वाटर बाड़ी बैरिंग की डिब्बी उठाई तो पाया खाली है। सारा खाना देख मारा शायद बैरिंग डिब्बी से निकल गया हो। आस-पास के खाने देख मारे, पर बैंरिग दिखा ही नहीं।

कुमार परेशान, "बैरिंग कहाँ गया? सिर्फ एक बैरिंग लाता हूँ, बिकता है तो दूसरा लाता हूँ। अभी पन्द्रह दिन पहले ही तो लाया था। कहाँ गया, किसने चोरी किया? पर ग्राहक को जवाब तो देना है।"

"नहीं है भाई, बैरिंग नहीं है।"

"यहाँ किसी और दुकान पर मिलेगा?"

"नहीं भई...यहाँ कार का सामान कम बिकता है। बस एक बैरिंग मैं ही ला कर रखता हूँ।"

मोहन लंगड़े ने कहा, "कुमार, शहर के गुप्ता प्रेट्रोल पंप पे भी है एम्बेसेडर की बैरिंग और सील, वहाँ से लाकर दे दे।"

"अरे नहीं मोहन, वो लोग नहीं रखते। उनके यहाँ बिकने का मतलब ही नहीं है। कुमार ने विश्वास से कहाँ"

"मैंने अपनी आंखों से देखा है। वो अपनी कार के लिए लाए थे, जब वाटर बाडी खोली तो पैकिंग लीक थी, बैरिंग ठीक था। वो उनके पास पड़ा है।"

कुमार गुप्ता पैट्रोल पंप पहुचा तो वहाँ बैरिंग और सील थी। कुमार ने पूछा, "कितने का?"

"हम बेचते तो सत्तर का हैं तुम जितने का लाते हो दे देना।" कह कर गुप्ता ने बैरिंग और सील कुमार को दे दी।

एक सौ उन्नीस वसूल करने के बाद कुमार सोचता रहा, "यह किस्सा क्या है? खाली डिब्बी मेरी दुकान में, बिना डिब्बी का बैरिंग पैट्रोल पंप वाले के पास और इसकी जानकारी इस साले लगड़े को है।"

दिमाग के घोड़े दौड़ाए तो याद आया... ये लंगड़ा पिछले हफ्ते वहीं बैरिंग वाले खाने के पास बैठा था। हो न हो इसी ने चुराकर पैट्रोल पंप वाले को दिया है। ये सीधे-सीधे तो मानेगा नहीं, उसे दम देना पड़ेगा।

वाटर बाडी फिट करके लंगड़ा आया और हाथ फैलाकर बोला, "मेरा कमीशन।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कुमार ने जूता उतारकर दिखाया, "बोल कितनी। हरामी? मुझे बेवकूफ समझता है। साले उस दिन बैरिंग के खाने के पास ही तू बैठा था न, जब मैं पेशाब करने गया तो तूने बैरिंग जेब में रखा और डिब्बी यहीं रख गया।"

"मेरा बैरिंग तो मुझे मिल गया, उस साले पैट्रोल पंप वाले को बताता हूँ। आने दे उसे पैसे लेने।"

गुप्ता तीन दिन बाद आया, "कुमार तेरे नाम एक कलम पड़ी है।"

"कौन-सी कलम...गुप्ता जी, वो मेरी दुकान से लंगड़े से बैरिंग चोरी कराने की?"

"कुमार, तू क्या कह रहा है? हमने विश्वास करके तुझे बैरिंग उधार दिया अब तू यों कह रहा है?"

"साले, चोरी का माल खरीदते हो, शर्म नहीं आती, कुमार ने डांटा?"

"कुमार, जबान संभाल के बात करियो, गुप्ता की आवाज में खिसियाहट थी।" वजन नहीं।

कुमार ने सारी बात का अंदाजा लगा लिया कि उसका अंदाजा ठीक था। मोहन ने ही इसे बैरिंग यहाँ से उठाकर दिया। वह विश्वास से बोला, "बुला साले चोर लंगड़े को...अभी बात साफ हुई जाती है।"

गुप्ता जाकर मोहन को ले भी आया, "ये ले मोहन आ गया...अब बता क्या कह रहा था?"

"मोहन, ये गुप्ता तुझे भर के लाया होगा...कुमार के सामने गलती मत मानियो मैं निपट लूंगा, ठीक है न।"

गुप्ता बीच में बोला, "जबरदस्ती उससे क्यों हाँ करा रहा है?"

"अबे, चोरी का माल खरीदने वाले, साले सुन ले...एक मिनट में दूध का दूध, पानी का पानी किए देता हूँ।"

"देख मोहन, बात नम्बर एक, मेरा बैरिंग मुझे मिल गया, बिक भी गया मुझे प्रौफिट भी मिल गया, इसलिए मैं झगड़ा यही खतम करता हूँ।"

"अब अगर बहस में पड़ना है तो सुन...खाली डिब्बी मेरे यहाँ, बिना डिब्बी बैरिंग गुप्ता के यहाँ और पिछले हफ्ते तू दुकान में बैरिंग के खाने के पास बैठा था। तुझे ही मालूम था पेट्रोल पंप पे बैरिंग और सील है।"

"अगली बात ये कि ये गुप्ता साला अपनी कार के लिए बैरिंग सील लाया था, ये तूने ही बताया। ये कहता है हम सत्तर का बेचते हैं, तू जितने का लाता है उतने दे दियो। इसको तो बैरिंग का रेट भी नहीं मालूम, अस्सी का बैरिंग और ढाई की सील दिल्ली से आती हैं।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"अब बात नम्बर दो, मैं पुलिस में रिपोर्ट दे देता हूँ वो फैसला करेंगे...ठीक है न। और बाइपास भर में सबको कह भी देता हूँ। फिर देखता हूँ, तू बाइपास पे कैसे काम करता है।"

"नहीं तो गल्ती मान, सब माफ़, बात यहीं पर खत्म, मेरी जबान का तुझे मालूम है, पत्थर की लकीर है।"

मोहन, कुमार के पांव पड़ गया, "कुमार माफ कर दे, बैंरिग सील उठा के मैं तीस रुपये में गिरवी रख आया था कि मैं ही बिकवा दूँगा, फिर पैसे आधे-आधे कर लेंगे।"

कुमार ने कहा, "मैंने तो पहले ही माफ कर दिया, मुझे मेरे बैरिंग के पैसे मिल गए...बात खत्म और गुप्ता जी तुमने सुन लिया न।"

"ये कह रहा है न, तीस रुपये में गिरवी रख आया था।"

"ला मेरे तीस रुपये दे।" गुप्ता ने कुमार को कहा।

"हाँ गुप्ता जी, तीस रुपये में मोहन तेरे यहाँ गिरवी रख के आया था। उसका माल उसको दे दे। वो तुझे तीस रुपये दे देगा और मोहन सुन रहा है न, जब तक तुझे तेरा माल न मिले, "इसे तीस रुपये मत दियो।" कुमार ने हंसते हुए कहा।

"ये अजीब धींगा मुश्ती है...बैंरिग तो तू ले आया? अब उसे कहाँ से दूँ।" गुप्ता, कुमार से बोला।

"मैं तो तेरे यहाँ से अपना बैरिंग लाया जो चोरी हुआ था। इसमें कौन-सा गलत काम कर दिया? वैसे तुझे सलाह दूँ...तीस रुपये तेरा चोरी का माल खरीदने का दंड है। मैं मोहन के साथ हूँ, जैसे पुलिस सरकारी गवाह के साथ होती है। अब अपनी साईकिल उठा और पम्प पे जा। कहीं वहाँ से कोई तेरा माल पार न कर दे।" कुमार ने हंसकर कहा।

गुप्ता चला गया पर कुमार के दिमाग को विश्राम नहीं है... उस दिन दुकान की दीवार कैसे गिर गयी थी। बारिश तो जरूर हुई थी और दीवार बेशक चार इंच की है, भले ही गारे की है पर पानी तो उस पर पड़ा ही नहीं।

जिस तरफ की दीवार गिरी उस ओर तो प्रीतम सिंह का ढाबा है। उसके आदमी वहीं बैठते हैं, सामान वहीं पड़ा होता है फिर दीवार दुकान के अन्दर की ओर गिरी वह भी सिर्फ पिछली ओर से...पूरी दीवार क्यों नहीं गिरी थी?

कुमार परेशान हो गया, "कौन बताएगा सच? क्या वास्तव में दीवार अपने आप गिरी या इसमें कोई भेद है। सोचने पर नतीजे पर पहुंचा कि रमेश उन दिनों प्रीतम सिंह का ढाबा चला रहा था अब वो पप्पू के ढाबे पर है। बस वही बता सकता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कुमार, रमेश के पास गया और पूछ लिया, "रमेश एक बात सच-सच बता? उस दिन मेरी दुकान की दीवार किसने गिराई थी?"

"दीवार गिराई थी क्लच प्लेट ने।" रमेश ने व्यंग्य से कहा।

"रमेश साफ-साफ बता।" कुमार ने ज़ोर दिया।

"ले, तू समझना ही नहीं चाहता तो मैं क्या कर सकता हूँ। उस दिन बारिश हुई, ट्रक फंस गया मिट्टी में...जोर लगा तो क्लच प्लेट फुंक गयी। अब चक्कर तो जाना था। दीवार गिरी तो क्लच प्लेट मिल गयी। तेरे को भी रात को नहीं जगाना पड़ा, उसे भी पैसे नहीं देने पड़े, ट्रक का चक्कर भी लग गया। बात खतम...क्यों अब दिमाग खराब करता है?" रमेश बड़ी सहजता से बोला।

"सच बताने के लिए धन्यवाद।" कहकर कुमार चला आया। सोचता रहा प्रीतम सिंह से कहने से बात नहीं बनेगी, न वो मानेगा न वसूली होगी, उल्टे आंखों की शर्म भी जाती रहेगी।

हार का और बेचारगी का अहसास कुमार को झिंझोड़ने लगा। इस प्रीतम सिंह के लिए मैंने इतना किया और मुझे यह सिला मिला। क्लच प्लेट भी गयी और दीवार बनवाने के पैसे भी देने पड़े।

जब बेबसी का अहसास भारी होने लगा तो रास्ता निकाला कि सरदार के हिसाब में हर बार दस-बीस रुपये का सामान फालतू लिख दो...इसे सीधे नसीहत तो नहीं दे सकते पर अपने नुकसान की वसूली ब्याज समेत की जा सकती है।

□

"पापा जी, मैं चाहता हूँ लॉ कॉलेज में दाखिला ले लूं।" कुमार ने पिता जी से सलाह माँगी।

"बस बेटा, ग्रेजुएट तो हो गया, अब प्राइवेट एम.ए. कर ले। अगर तेरा मन और आगे पढ़ने का ही है तो।"

"पापा जी, शर्मा सर ने सलाह दी है, यूथ कांग्रेस का भविष्य अच्छा है। मुझे एम.एल.ए. का टिकट छाता तहसील से मिल जाने की पूरी उम्मीद है।"

"ओ बच्चे, तू इन राजनीति के धुरन्दरों को नहीं जानता। ये तुझे बेवकूफ बनाएंगे और कुछ नहीं होगा। तुझे झांसा दिए रखेंगे कि ये तुझे सपोर्ट करेंगे। ऐन वक्त पर बैक आउट कर जाएंगे।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

''नहीं पापा जी, यहाँ सिचुएशन ही डिफरेंट है। जातीय समीकरण इतने गहरे हैं कि उनके पास मेरे अलावा कोई विकल्प नहीं है।''

''यह तुझसे किसने कह दिया? तू एम.एल.ए. का टिकट लेना इतना आसान समझता है क्या? बेटा, ये राजनीतिज्ञ हम जैसे लोगों को पास नहीं फटकने देते, तू कहता है जातीय समीकरण?'

''मेरी कांग्रेस अध्यक्ष और अग्रवाल तथा पालीवाल तीनों से बात हो चुकी है। वास्तव में इन तीनों में आपसी तनातनी है। तीनों एक दूसरे की बखिया उधेड़ने में लगे हुए हैं। एक मैं ही ऐसी गोटी हूँ, जिसे तीनों अपना भी समझते हैं और विश्वास भी करते हैं। या यों भी कह सकते हैं मोहरा बनाकर इस्तेमाल करना चाहते हैं। पर दिक्कत यह है कि हर आदमी ने मुझसे शर्त रखी है कि एम.एल.ए. बनने के बाद में उसके ही हिसाब से चलूंगा। मैं सोचता हूँ इसका फायदा उठाया जाए। बाकी समय आने पर देखेंगे ऊंट किस करवट बैठता है।''

''मैंने शर्मा जी से भी सारी ऊंच-नीच समझ ली है। उन्होंने कहा है कि यदि लॉ कर लूं तो मंत्री बनने के चांस बहुत ज्यादा है।''

''वो कैसे?''

''वो इस तरह कि एक तो आज तक छाता तहसील से जाट या ठाकुर के अतिरिक्त कोई जीता ही नहीं। यह पहली बार होगा कि इनसे अलग कोई जीतेगा, वो भी कांग्रेस की टिकट पर।''

''पर तू लॉ करेगा कैसे, एडमीशन और पढ़ने का वक्त कब निकालेगा?''

''पापा जी, लॉ कॉलेज मथुरा में है। वहाँ सुबह का कॉलेज है छः से नौ, तीस तक।'' रोज़ आना जाना कर लूंगा।

''रोज़ कैसे आएगा-जाएगा, वहाँ से दस बजे चलकर यहाँ ग्यारह बजे थका-माँदा आएगा, तो दुकान पर कब बैठेगा?''

''पापा जी, वो परेशानी तो देखनी पड़ेगी। जनता गाड़ी दस-दस पर यहाँ आ जाती है। सीधे दुकान पर चला जाऊंगा। बस दो घंटे का ही तो नुकसान होगा.. .पर यह भी देखो कि लॉ ग्रेजुएट हो जाऊंगा, फिर तो वकालत भी कर सकता हूँ।''

''बेटा, तू रहने ही दे...दुकान का बहुत हर्जा होगा...सारा घर तो उसी दुकान के भरोसे चल रहा है। नहीं...नहीं यह रिस्क तो बिलकुल भी नहीं लिया जा सकता।''

''पापा जी, मैं कोशिश करके देख लेता हूँ। अगर नहीं हो सका तो छोड़ दूँगा और क्या?''

''बेटा, मेरी ओर से तो साफ मनाही है। आगे तू खुद मुख्त्यार है। जैसे ठीक लगे वैसे ही कर।''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अगले दिन कुमार ने लॉ कॉलेज में जाकर दाखिला ले लिया। अठारह तारीख से क्लासें शुरु होंगी। मथुरा यूथ कांग्रेस के दफ़्तर गया तो पता चला जिला कार्य कारिणी के अट्ठारह लड़कों ने इस साल लॉ में दाखिला लिया है।

अठारह तारीख को सुबह खद्दर के कुर्ते पायजामे में जब चप्पल चटकाता कुमार कॉलेज पहुंचा तो सीनियर छात्रों ने लॉबी में ही रोक लिया। कुमार ने देखा ऊपर पहली मंजिल पर यूथ कांग्रेस के लड़के खड़े थे। रैगिंग करने वाले लड़कों ने रैगिंग के लिए रोका था, वे शुरु हो गए।

"नेता जी, फर्स्ट इयर के हैं क्या?"

"जी, मैंने इसी साल दाखिला लिया है।"

"अच्छा...अच्छा....आप कहाँ के मंत्री हैं?"

"जी, मैं कोसी से आया हूँ। कोसी में मेरे पिता जी रेलवे स्टेशन मास्टर हैं।"

"अच्छा, तेरा बाप रेलवाई का बाबू है।"

....

"अरे, जवाब नहीं दिया...फिर तो खूब रिश्वत लेता होगा?"

....

"इस का भी कोई जवाब नहीं देता। अपने आप को ज्यादा तीस मार खां समझता है क्या?"

"बेचारा अपने बाप के बारे कुछ भी कहते डरता है....पितृ भक्त बालक है।" उनमें से एक सीनियर बोला।

तब तक ऊपर खड़े यूथ कांग्रेस के मित्रों ने देख लिया कि कुमार की रैगिंग हो रही है। इधर से रैगिंग वालों का अगला प्रश्न निकल चुका था।

"तुम कितने भाई हो?"

कुमार जितने भी बताता उसने कहना था, अगर ज्यादा होते तो मेरा क्या कर लेते? कुमार ने एक झापड़ प्रश्न करने वाले के गाल पर जड़ दिया। इस अनपेक्षित वार से वो संभल नहीं सका और फर्श पर गिर गया।

इधर उसके साथियों में से एक ने चाकू निकाल लिया, उधर ऊपर से यूथ कांग्रेस वाले लड़के धड़ाधड़ सीढ़ियां उतर आए।

"कुमार बौस....क्या हुआ?"

"अरे, ये बताएगा...मुझसे पूछ रहा था हम कितने भाई हैं? उठ खड़ा हो....ये बता तेरे बाप के लिए छोटे को भेजूं के बड़े को? तेरे लिए तो मैं ही काफी हूँ।"

पल भर में सबको पता चल गया कुमार यूथ कांग्रेस ग्रुप से है। बात आई

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गई हो गयी। जब चलने लगे तो कुमार ने उस छात्र को बताया, "पता चल गया न कितने भाई है?"

"जी.... ।"

"कितने.... ?"

....

"अरे तीन, तुझे कहा न, तेरे बाप के लिए बड़े को भेजूं के छोटे को। यानि एक मैं, एक बड़ा और एक छोटा, कुल तीन।"

यूथ कांग्रेस अध्यक्ष भी खूब हंसा, साथ ही तय किया गया कि कॉलेज में रैगिंग नहीं होगी इस आशय का एक नोटिस भी नोटिस बोर्ड पर लगा दिया गया।

□

संसद चुनावों की घोषणा होते ही सारे माहौल में तबदीली आ गयी। जाटों के चालीस गांव हैं, उनकी पंचायत हुई है, कांग्रेस को वोट नहीं देना।

राजा जितेन्द्र सिंह ठाकुर को जिला मथुरा का कांग्रेस से संसद का टिकट मिला है।

नगर कांग्रेस अध्यक्ष तथा और कार्यकर्त्ताओं ने साफ़ मना कर दिया। जाटों के गांवों में प्रचार के लिए नहीं जाया जा सकता है। उन्होंने कहा है कि वे कांग्रेस की जीप भी गांव में नहीं घुसने देंगे।

जितेन्द्र सिंह परेशान हैं... एक बार जाना तो पड़ेगा, बिना गए तो हेठी होगी कि वोट माँगने की हिम्मत ही नहीं पड़ी। साथ में कोसी का कोई तो कार्यकर्ता साथ में हो नहीं तो कहा जाएगा कि कोई साथ नहीं दे रहा।

कुमार ने कहा, "अगर छोटे मुँह बड़ी बात न हो तो मेरी सलाह है कि मैं आपके साथ चलता हूँ। उस गांव में सबसे पहले चलते हैं जहाँ का प्रधान मेरी जान-पहचान का है। उस पर मैंने कुछ अहसान भी किया है।"

"वहाँ चल कर जायजा ले लेते हैं, फिर जैसा होगा कार्यक्रम बना लेंगे।"

जीप जब तुलसी वाला पहुंची तो प्रधान की बैठक का पता पूछने के लिए रुकते ही जीप के पास भीड़ उमड़ पड़ी और तिरंगा झंडा उतार लिया गया।

वहाँ से प्रधान की बैठक के बाहर जीप रोकी तो प्रधान बाहर आया, जितेन्द्र और कुमार को देख अन्दर चलने को कहा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कुमार ने कहा, "ताऊ जी, हम तो आपसे मिलने आए और आपके छोरों ने यह इज्जत की कि जीप से झंडा ही उतार लिया। आप कह रहे हो चरण अन्दर रखो। हम जीप से नीचे तब उतरेंगे जब जीप पर झंडा लग जाएगा। वरना यहीं से बिना पानी पिए चले जाएंगे।"

प्रधान ने आवाज लगाई, "रे किसने उतारा झंडा? झंडा वापस लगाओ...ये गांव के मेहमान हैं।"

जिस गति से झंडा उतारा गया था उसी गति से लग भी गया। कुमार ने जितेन्द्र से कहा, "आओ राजा साहब।" और जीप से उतर पड़ा।

अन्दर गांव के काफी लोग एकत्र हो चुके थे। पर उत्तर मिल... इस बार क्षमा कर दें...हम यहाँ पंचायत के फैसले से नहीं हट सकते।...फिर सबके लिए गुड़ की चाय आयी।

कुमार स्वाद लेकर चाय पीते समय सोच रहा था कि यह चाय राजा साहब के गले कैसे उतर रही होगी? यहाँ न वोट मिलना है न बर्तन ही राजा साहब के मयार के हैं।

वापसी पर जितेन्द्र ने पूछा, "अब?"

"अब क्या? अब आपको कहीं जाने की जरूरत नहीं है क्योंकि आप मजे से कह सकते हैं कि पंचायत के फैसले से आप अवगत हो चुके थे। अतः सारा जोर शहर और कस्बों पर लगाइये, साथ ही कहते रहिए यहाँ की पंचायत के फैसले की हम भी कद्र करते हैं।"

जितेन्द्र चले तो गए पर चिंता उनके चेहरे पर थी। परन्तु जब परिणाम आया तो आश्चर्यजनक बात यह कि वे मात्र सोलह सौ वोटों से हारे थे। इस माहौल में, जहाँ कांग्रेस को कुल दो सीट मिलीं पूरे भारत में।

□

महा शिवरात्रि आ गयी, पर बाइपास को इन त्योहारों से कुछ नहीं लेना होता या इस तरह कहें कि होली के अलावा यहाँ कोई त्योहार ही नहीं होता।

आठ दस लड़के मिले, "चलो भंग छानें।" विजय उनका सरगना है, "कुमार एक रूपया दे, विजय उनके साथ हैं।

"रुपया काय को?" कुमार ने पूछा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"अरे, आज महाशिवरात्रि है...भंग छनेगी, ग्यारह रुपये हो गए। अब तू दे दे।" विजय उत्साह में है।

"अरे भंग...भंग का नशा तो गंदा नशा है। कहते भी तो हैं, भंग माँगे रोटिया।, गांजा माँगे घी। शराब माँगे जूतिया। गर्ज पड़े तो पी, सो भइया मेरी कोई गर्ज नहीं है...मुझे माफ करो।" कुमार ने साफ़-साफ़ कहाँ

"गर्ज है, नईं है, से हमें कुछ नहीं लेना-देना। बस भंग छनेगी...तुझे नशा बुरा लगता है तो कम पी लियो।" चुन्नी उनके साथ है।

"अरे, कम-ज्यादा क्या....मुझे पीनी ही नहीं है।" कुमार ने विरोध जताया।

"भाई, रुपया देना है दे, नहीं देना तो अपने पास रखा। भंग घुटेगी और सब को पीनी पड़ेगी। जो नईं मानैगा उसे लम्बा डाल के जबरदस्ती पिलाई जाएगी।" विजय अपनी कहता है।

"ये लो रुपया, पैसे देने से एतराज़ नहीं है, "पर भंग नहीं पीऊंगा।" कुमार ने जान छुड़ाई।

पर जान कहां छूटती। घंटे भर में मजलिस बैठ गयी। कुमार को भंग पीनी पड़ी। पर नशा तो सब को चढ़ने लगा। कुमार ने कहा, "यार, सब हंसते ही जा रहे हैं। भंग चढ़ गयी, दुकाने बंद करो और खाना खाकर सो जाओ।"

कुमार जब साइकिल लेकर घर की ओर चला तो लगा पीछे से कोई पुकार रहा है। कुमार रुका...फिर चल पड़ा। पीछे से फिर आवाज़ लगी...इसी तरह चार-पांच बार हुआ और कुमार घर पर साइकिल खड़ी करके सिर झटक कर नशे से मुक्ति का रास्ता ढूंढता रहा।

तभी गरीब ने पास आकर कहा, "कुमार, आपने अच्छा मज़ाक किया। मैं आवाजें देता, आप रुक जाते। जब तक मैं पहुँचता आप साइकिल चला देते।

"हाँ...बोल क्या बात है? मुझे घर पर ज़रूरी काम है।"

"तीन बजे गांधी पार्क में कांग्रेस की बैठक है? आपने बोलना है। रजिस्टर में दस्तखत कर दो।"

दस्तखत करके कुमार घर में घुसा, खूब सारा पानी पिया फिर गले में उंगली डालकर उलटी कर दी।

खाना खाकर सोने चला, "मम्मी जी, पौने तीन बजे जगा देना, गांधी पार्क बैठक में जाना है।"

"अच्छा बेटा।" कहकर माँ काम में लगी रही।

गांधी पार्क जब पहुंचा तो उसने वहाँ क्या बोला उसे कुछ याद नहीं है, पर दूसरे दिन अखबार में पढ़ा कि युवा कांग्रेस के नगर अध्यक्ष श्री कुमार का कहना है कि।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यूं तो महात्मा गांधी और विनोबा भावे के पश्चात् देश के नेताओं में अगर कोई अच्छा नाम है तो वह है जय प्रकाश नारायण का। परन्तु जय प्रकाश नारायण बुज़ुर्ग हो चुके हैं...वे बैखलाए हुए हैं इसलिये उन्होंने कहा है कि सेना आज्ञा पालन से मना कर दे....देश को बाग डोर अपने हाथ में ले ले।

भाइयो....हम देश प्रेमी हैं। देश हमारे लिए माँ है। बेशक सैनिक भी हमारे भाई हैं... भारतीय हैं और देश प्रेमी भी, परन्तु उनके पास बन्दूक है, संगीन है। हम कैसे अपनी माँ को संगीनों के साए में घेर कर रख सकते हैं। हमारा देश विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। हम लोक तन्त्र में आस्था और विश्वास रखते हैं।

बेशक लोकतंत्र में भी कुछ कमियां होती हैं, पर उसकी खासियत बहुत ज्यादा हैं। दूसरे, क्या हम अपने पड़ोसी देश से सबक नहीं सीख सकते, जहाँ सेना के शासन से लोकतन्त्र का कितना नुकसान हुआ है। अतः जय प्रकाश नारायण गलत कहते हैं, उनकी बातों पर बिलकुल ध्यान न दें।

इसके बाद तो लम्बे समय तक कुमार की प्रशंसा भी होती रही और धाक तो शहर भर में जमी ही।

□

कुमार ने दुकान खोली तो शर्मा को इन्तज़ार करते पाया।

"कुमार, यार कहाँ चला गया था, "गाड़ी मिस्त्री के खड़ी है जो सामान चाहिए हो दे देना। अभी लाला आएगा तो पेमेंट हो जाएगी, मैं जरा घर हो आऊं।"

"घर, वाह बेटा, तेरा भी घर हो गया।"

"देख ले, ये है नोटों की बाजीगरी जब से ड्रैवरी की तनखा से घर पे पैसे देता हूँ। माँ-बापू भी इन्तज़ार करते हैं और बहन-भाई भी और तो और पड़ोसी भी शर्माजी करके बात करते हैं।"

"तू तो बाप को गाली देता था, के पैदा करके हमें बाइपास पे छोड़ दिया।" कुमार ने उलहाना दिया।

"कुमार तब की बात और थी अब की और है। अब तो कलकत्ता का चक्कर लगा के आया हूँ। दो जोड़ी धोती कुर्ता पिता जी के लिए, चार धोती अम्मा की...बाकी सब के लियां कपड़ा लत्ता भी।" शर्मा गर्व से बोला।

"पर तू तो कहता था के कभी घर नहीं जाऊंगा।" कुमार ने याद दिलाया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

''भइया, वो दिन गुजर गए। वो कहें हैं न, बारह साल बाद घूरे के दिन भी पलटी हो जायं। पहले तो यहीं बाइपास पे सोना-खाना-पीना। भरी ठंडी में भी भट्टी के नीचे चिपक के सोयौ करतौ।'' शर्मा पिछले दिनों की याद कर उदासी को पोंछते हुए बोला।

''चल, फिर क्या है? अब तो तेरे मजे हैं। अब तो तेरा घर हो गया।'' कुमार ने उत्साह दिखाया।

''हाँ बौस, अब तो मेरी शादी की भी बात चल रही है। पर कोई ठीक नहीं बैठ पा रही। एक तो साला ड्रैवरी का धंधा बदनाम, ऊपर से बाइपास का ठप्पा।''

''चल, तुझे लम्बे समय बाद घर मिल गया, यही कुछ कम है क्या''

''अच्छा बौस चलूं...मिस्त्री को जो कुछ सामान चहीतौ होय, सोई सामान दै दियौं।'' शर्मा को घर जाने की जल्दी है।

''रोहतास ने बोरी में से नेशनल का थ्री इन वन निकाला और काउंटर पर रख दिया। रोहतास आठवी कक्षा तक कुमार का सहपाठी था। वह कंजर जाति से संबंध रखता था। क्षेत्र में कहावत मशहूर है। मैना, गूजर, कंजर, कुत्ता, बिल्ली, बंदर, ये छः न होते हम तान चदरिया सोते।

''कुमार, जरा प्लग लगाइयो तुझे बढ़िया गाने सुनाऊं।''

कुमार ने प्लग लगा कर स्विच आन कर दिया तो रोहतास ने एक डिब्बे से एल.पी. रिकार्ड निकाले, कम से कम पचास रिकार्ड तो होंगे। कुमार भौचक्का रह गया, इतना मंहगा थ्री इन वन इसके पास कैसे आया।

''अबे रोहतास....साले तू कहाँ से ले आया ये तो कम से कम तीन हजार का होगा।''

'तीन का ही है और ये पचास रिकार्ड भी तो...तू क्या हमें योई समझ रहा था। क्यों लार टपक आयी क्या...मन कर रहा है तो तू रख ले। तू भी क्या याद रखेगा।''

''तू इसे बेचने के लिए लाया है क्या।''

''अगर खरीददार मिल जाए तो बेच भी दूँगा। ऐसा कर तू इसे अपने पास रख ले...मजे से बजा...कोशिश करियो अगर ये बिक जाए तो। जितने पैसे मिलेंगे आधे-आधे कर लेंगे।''

कुमार दुविधा में पड़ गया...'इतना कीमती थ्री इन वन....कितने में बिकेगा?

चुन्नी दौड़ता हुआ आया।'' कुमार यहाँ अइयों एक गाहक है उसे एक्सल लेना है। न्यू मॉडल का, मेरी दुकान में खड़ा है। वो पंचर लगवा रहा है।''

कुमार चुन्नी के साथ हो लिया। ''कुमार, ये कंजरों का लौंडा क्या लाया है। ले मत लियो...साले फंस जाएगा।''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"अबे बाबू जगजीवन राम रक्षा मंत्री के घर चोरी हुई थी। वह यहाँ के कंजरों की कारिस्तानी थी। अब सुनने में आया है के सी.आई. डी. की रेड पड़ने वाली है। इसलिए सामान इधर-उधर किया जा रहा है।" चुन्नी एक सांस में बोल गया।

कुमार दुकान पर लौटा तो रोहतास बैठा था। एक दो गाने सुने, चाय पी। रोहतास बोला, "कुमार तेरा मन है तो ले ले...पैसे की चिन्ता मत कर जो मन हो दे दे...भले पांच सौ रूपये दे दे।"

"रोहतास....क्यों इधर उधर की फेंक रहा है। ये वही माल है न बाबू जगजीवन राम जी घर से पार किया था।"

"और क्या, न तो हमारे फैक्ट्री लग रही है?"

"अच्छा ये बता, तू साथ गया था।"

"और क्या"।

"तुझे डर नहीं लगा, रक्षामंत्री के घर घुसना...अगर पकड़े जाते तो।"

"पकड़े जाते तो पुलिस तबियत से तोड़ती...सात साल की जेल होती और हाथ पांव तोड़ के सरिये डले होते।"

"तो फिर कहीं नौकरी ही क्यों नहीं कर लेते।"

"कौन देगा हमें नौकरी, चल तू लगवा दे....सारा मोहल्ला करने को तैयार है। चौकीदार, पल्लेदार, चपरासी कुछ भी लगवा दे। अगर किसी के एक पैसे की भी चोरी हो जाए तो तेरा जूत और हमारा सर"।

"कभी लाला लोगों से या मिल वालों से बात भी की है या यों ही अपनी मारे जा रहा है।"

"हज्जारों बार कह ली, पर भइया कोई भी सुन के नहीं देता...देखेंगे...देखते हैं कह के बात सुलटा देते हैं।"

"चल छोड़ न...वहाँ की बता जब तुम जगजीवन राम जी के घर चोरी करने गए।"

"अरे वो तो हममें आपस में ही शर्त लग गयी थी के चोरी करो तो बड़े आदमी के घर। बस फिर तय हो गया कि बाबू जगजीवन राम जी के घर चलो...रक्षा मंत्री हैं।"

वहाँ से जब आने लगे तो मेरे मन में आयी बाबूजी के सिरहाने की घड़ी उठा लूं। बौस जाज की घड़ी थी, मैं चुपचाप गया और पहले अलार्म के बटन पे हाथ रखा। सुबह के चार बज रहे थे और सवा चार का अलार्म घड़ी में लगा था।"

"सुना है, सी.आई.डी की रेड पड़ने वाली है।"

"ये रेड वेड तो पड़ती रहती हैं। जो होगा देखा जाएगा। अब बात भी पुरानी हो गयी।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"पर यार ये चोरी का धंधा तो तुम्हे छोड़ देना चाहिए।"

"छोड़ तो पता नहीं क्या-क्या देना चाहिए। पर जिस पे बीतती है उसे ज्यादा पता होता है। साली ये भी कोई जिन्दगी है। जब देखों पुलिस अपने रिकार्ड पूरे करने को हमारे लड़के उठा के बंद कर देती है। नये साल पे बंदकर देती है। इधर बीबी के पास सोने जाते हैं उधर से पुलिस की दबिश पड़ती है आवाज आती है चीपड़ आई रियो थांगले। बस भागना पड़ जाता है।

"तो तुम लोग इसका विरोध क्यों नहीं करते।"

किससे विरोध करें...कौन सुनेगा हमारी। रोज घर छोड़ के भागना पड़ता है। ये तो नेता लोग हैं जो पन्द्रह अगस्त, छब्बीस जनवरी और दो अक्टूबर को हमें बुलाते हैं। अपने जलूस में भीड़ बढ़ाने को। बदले में थानेदार के कह देते हैं तीन दिन कोई दबिश नहीं देनी। या फिर इल्कशन दिनों में छूट मिलती है। भइया हमारी तो जिन्दगी ऐसे ही घिस-घिस के निकलेगी। ये बता ये थ्री इन वन लेना है क्या।"

"नहीं यार, एक तो मेरे पास पैसे ही नहीं है, अगर होते भी चोरी का माल लेकर मैं कोई टैंशन नहीं पालूंगा।"

तेरी मर्जी, रोहतास अपना सामान लेकर चल गया। कुमार सोच में गोते लगाने लगा। ये लोग कितनी बेबस जिन्दगी गुजार रहे हैं। इससे निकलना भी चाहते हैं पर कोई निकलने ही नहीं देता न पुलिस न ही समाज।

□

देवी दयाल ने रात की ड्यूटी से आते ही कुमार को कहा, "बेटा, दुकान जरा रुक के जाना।"

"ठीक है पापा जी...कोई खास बात?" कुमार पिता जी के लहजे से थोड़ा चिन्तित हुआ।

वर्दी उतार कर कमीज़-पायजामा पहनकर देवी दयाल ने कुमार को कहा, "ज़रा माँ को भी बुलाता ला बेटा।"

"पापा जी, कोई परेशानी की बात है क्या?"

"हाँ बेटा, है भी और नहीं भी।"

"यह क्या पहेली हुई? परेशानी है भी।" और नहीं भी सरला ने बात सुनी तो कहा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"बात ऐसी है सरला, कल जब सुभाष भुसावल से रिफ्रेशर कोर्स के बाद पठान कोट मेल से आ रहा था तो बतरा भी झांसी से उसी डिब्बे में चढ़ा, आगरा के लिए। उसने सुभाष को देखा तो बंसल से पूछा यह किसका लड़का है? बंसल ने उसे बता दिया। बतरा ने उससे कहा...इसकी शादी की बात देवी दयाल से चला। मेरी लड़की एम.ए. है, बी.एड कर रहीं है, वही दयाल बाग आगरा से।"

अभी सुबह होडल से बंसल का फोन आया था। देवीदयाल, सुभाष की शादी करने का विचार है क्या, अब तो वो बर सर-ए- रोजगार भी हो गया।

मैंने भी मज़ाक किया, तू बनिया मैं पंजाबी...तू अपनी लड़की पंजाबियों में देने को तैयार है। वो बोला तुम साले पंजाबियों में दहेज का लफड़ा नहीं है, मेरी लड़की होती तो दे भी देता। वैसे बतरा अपनी लड़की के लिए कह रहा था। वो दयाल बाग में एम.ए. करके बी.एड. कर रही है।

मैंने भी हंस के कह दिया, बतरा तो मुझे भी जानता है। उसका भाई रामलाल वर्धा में मेरे साथ ही तो पोस्टेड था। कुमार वहीं तो पैदा हुआ। हम ग्राउंड फ्लोर पर थे वो पहली मंजिल पर। बतरा को बोल वो खुद बात करे। वैसे लड़की का मामला है वरना मैं ही उसे फोन कर देता।"

"चलो, ये तो आपने अच्छा किया, अब करना क्या है?" सरला ने बेजारी से पूछा।

"इसीलिए तुझे बुलाया है। पहले तो ये बता, सुदेश की शादी पहले करनी है कि सुभाष की?"

"जिसके लिए पहले मेल मिल जाए, उसी की कर दो... आगे-पीछे करनी तो है ही। सुदेश भी तो दयाल बाग से बी.एड. कर रही है। शादी की उमर तो उसकी भी हो गयी है।" सरला जैसे पहले से जवाब सोचकर बैठी थी।

"आगे, पीछे तो करनी है, खर्च के पैसे कहाँ से आएंगे, ये सोच रहा था। कुमार, तूने क्या इन्तज़ाम कर रखा है?"

"पापा जी, मैंने क्या इन्तजाम करना है और क्या सलाह देनी है? मैं तो बहुत छोटा हूँ।"

"बेटा, बड़ा कोई उम्र से नहीं होता, कर्म से होता है। तूने इतने बड़े-बड़े काम किए हैं। घर को संभाल रखा है...और बड़े क्या करते हैं? बस यही सब ही न। घर की गेहूँ, कपड़ा, सिलाई, बहनों को फीस, सारा कुछ तो तू ही देख रहा है। मेरी तन्खा तो महीने के खर्च में ही चली जाती है।"

"पापा जी, सुभाष और मैंने बैंक में अकाउण्ट खोला था। पांच सौ रुपये महीना मैं जमा कराता हूँ, अढ़ाई सौ सुभाष। इस तरह बैंक में कोई सत्तरह हजार रुपये होंगे।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"सत्तरह हजार में तो एक शादी भी नहीं निपटेगी।" देवीदयाल ने गहरा सांस लिया।

"पापा जी, हो जाएगा...करेंगे तो सब हो जाएगा।"

"कहाँ से हो जाएगा? दो साल में तो कुल सत्तरह हजार जुड़े हैं।"

"पापा जी, मेरी पांच छः कमेटी हैं, उठा लूंगा तो अठारह, बीस हजार तो वहाँ से आ जाएगा, कुछ राशन, कपड़े और टैंट वाले से उधार कर लेंगे...हमें किसने मना करना है?"

"अकेली जान के दम पे कितना उधार लेगा तू? ले भी लेगा तो उतारेगा कैसे. ....यह भी सोचा है क्या?"

"तो फिर ऐसा करो, सुभाष की शादी पहले कर दो। उसमें खर्च भी कम आएगा और सुदेश की शादी छः-आठ माह तक रोक लें। वैसे भी उसके लिए अभी लड़का कहाँ मिला है? अभी अगर रुक गए और लड़का साल डेढ़ साल न मिला तो उस वक्त भी तो यही परेशानी झेलनी पड़ेगी।"

"कुमार ठीक कहता है। मेरे आधे जेवर बहूं के लिए ले लो, आधे सुदेश के लिए रख दो। बाकी बारात का, बस और बैंड का खर्च तो थोड़ा-सा ही है। वरी भर के लिए रुपयों के इन्तजाम से काम चल जाएगा।" सरला ने समाधान दे दिया।

"तो फिर बतरा का फोन आए, तो क्या कहूँ?"

"लो, अब क्या कहना है...लड़की देखने के लिए उनसे दिन पूछ लेना और क्या? वैसे सुदेश ही उसके बारे में बता देगी...उसके साथ ही तो पढ़ती है।" सरला घर कामों के लिए उठ ली।

"कहाँ जा रही है...बतरा का रैस्ट बुधवार का होता है, वो उसी दिन के लिए कहेगा। तो इस बुधवार का कहूँ कि अगले हफ़्ते का?"

"शुभ काम में देर क्यों करनी है? इसी बुधवार को रख लेना।" कहकर सरला चली गयी।

सुदेश ने बताया कि लड़की अच्छी है यहाँ उसकी सहेली भी बन गयी है....आप भले हाँ कर देना।

बुधवार को आगरा गए तो सुभाष ने साथ जाने से साफ मना कर दिया, "मुझे लड़की देखने नहीं जाना। कुमार देख आएगा, जैसा फैसला करेगा मुझे मंजूर होगा। फिर सुदेश ने भी तो बताया है कि आप बेशक हाँ कर देना। इससे ज्यादा आमने सामने बैठ के मैं लड़की के बारे में क्या जान लूंगा...पढ़ी-लिखी है....घर परिवार आपका जाना हुआ है...शादी में यही सब ही तो देखना होता है।"

शादी वाले दिन ही सुदेश को देखने वाले, आगरा ही आ गए। उन्हें मैनपुरी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
से आना था। लड़का बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में लैक्चरर था। देखने-दिखाने के बाद अठारह जून की शादी की तारीख तय हुई तो घर भर में हड़बड़ी मच गयी। शादी-विवाह, मकान और बीमारी बड़े काम होते हैं। कुछ पता नहीं चलता कब कहाँ कितना खर्च होगा। फिर भी लगभग सबके निर्वाह हो ही जाते हैं।

यह निर्वाह कुमार को गहरी टीस दे गया था। अभी अभी तो सारी कमेटियां उठाई थीं। अब इतनी जल्दी पैसे का इन्तजाम कहाँ से होगा। अगर दुकान की सारी बिक्री भी लगा दूँ तो दस हजार नहीं होते। फिर जो जरूरी सामान खत्म होगा उसका इन्तजाम कैसे होगा।

दिल्ली के दुकानदारों की देन दारी बाकी है। गेहूँ अगर सीजन में नहीं ली तो फिर महंगी हो जाएगी। कपड़े वाले, सिलाई वाले, राशन वाले के तगादे बढ़ रहे हैं। कुमार का सिर घूम गया। ट्यूशन चल रही हैं। दो माह निकल गए पर समस्या अपनी जगह पर कायम है।

एक दिन ट्यूशन में श्यामा ने ही पूछा कुमार क्या परेशानी है। तुम ठीक से पढ़ा नहीं पा रहे।

अरे...कुछ नहीं श्यामा, ऐसा कुछ नहीं है। बस यही रोज के झमेले और काम के बोझ का मारा मैं बेचारा, ढूंढता हूँ कहीं से मिल जाए शर्बत सिंकारा। कुमार ने बात को बदलना चाहाँ

नहीं कुमार कुछ तो गम्भीर है। वरना मैंने तुम्हें ऐसा कभी नहीं देखा।

अरे भाई कैसा नहीं देखा।...मैं वही हूँ कुमार...अपने राम तो सावन हरे न हाड़ों सूखे...सदा एक से रहते हैं।

क्या कुमार...तुमने हमें कभी अपना नहीं समझा। तुमने कभी सोचा भी है कि हम तुम्हारा कितना ध्यान रखते हैं। अपनी परेशानी तो बताओ शायद हम ही तुम्हारी समस्या का समाधान कर दें।

नहीं श्यामा ऐसा कुछ नहीं है। मेरी समस्या घरेलु किस्म की है। उसका समाधान भी घर से ही निकलेगा, कुमार संकोच से बोला।

कुमार एक बात हमारी भी ध्यान से सुन लो खुशी बांटने से दुगनी होती है और दुख बांटने से आधे। तुम्हारी जो भी परेशानी है मुझे बताओ तो सही। शायद कोई हल निकल आए।

कुमार पिघल गया, उसकी आंखों में आंसू तैर आए। श्यामा तुम कहती तो ठीक हो पर मेरी समस्या का हल तुम्हारे पास नहीं है, यह मैं जानता हूँ।

दूसरा क्या कर सकता है या उसकी बिसात कितनी है या कोई किस सीमा तक जाकर तुम्हारी मदद कर सकता है। इसका अन्दाजा भला तुम कैसे लगा सकते हो।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इस तरह लगा सकता हूँ कि मेरी दुकान में कुल बीस हजार का माल है। सात हजार की देन दारियां हैं। बहिन की शादी के लिए छः सात तोले सोने और कम से कम दस हजार मुझे अभी और चाहिए बोलो तुम कर सकोगी। कह देना बहुत आसान है, जिस पर बीतती है वही ज्यादा अच्छी तरह जानता है।

सोना तो तुम्हारी मम्मी के पास भी होगा। पिता जी की भी आमदनी है।

हाँ है न, जो बहू को चढ़ा दिया, अब उससे उतरवाना कितना अच्छा लगेगा। अभी तो विवाह को छः महीने भी नहीं हुए।

बस इतना ही सोना। मेरी मम्मी के पास तो डेढ़ किलो सोना होगा। उनकी तो एक साड़ी में ही तीन सौ ग्राम सोने के तार लगे हैं।

अरे बाप रे इतना सोना। यहाँ साले तोले भर को तरसें और वहाँ किलो के हिसाब से। ठीक है भाई...गरीब-गरीब ही रहेगा और अमीर अमीर। ऐसी की तैसी इस समाज की।

कुमार समाज को गाली मत दे, यह बता अगर मैं तेरी समस्या हल कर दूँ तू मेरे लिए तो क्या करेगा।

सच....क्या यह संभव है।

क्यों नहीं है संभव, वेयर देयर इज विल देयर इज वे। तुम सिर्फ यह बताओ तुम्हारी समस्या का समाधान करने पर मुझे क्या मिलेगा।

श्यामा अगर मेरी समस्या का हल हो जाए तो उम्र भर तुम्हारा अहसान नहीं भूलूंगा। तुम जो कहोगी करूंगा, कुमार ने श्यामा के दोनों हाथों को अपने हाथों में ले लिया।

कुमार मैंने अगर कहा है तो खूब सोच समझकर ही कहा है, दो चार दिन में तुम्हारी समस्या का समाधान हो जाएगा। पर अपना वचन याद रखना। तुमने कहा है न जो कहूँगी करोगे।

श्यामा, अपनी बात से पीछे हटने वाला कुमार नहीं है, कह कर देखना, जान माँगोगी तो जान मिलेगी। कुमार भावावेश में बोला।

लो कुमार तुम भी कहाँ से कहाँ पहुंच जाते हो जान का मैंने क्या करना है। मैं ऐसा कोई भी काम नहीं कहूँगी जो तुम्हारी पहुंच से बाहर हो या तुम न कर सकते हो।

कुमार हर परीक्षा में खरा उतरता है पर इसका फैसला तो समय ही करेगा। बस किसी तरह मेरा यह काम हो जाए, भगवान की कसम मुझे न दिन को चैन है न रात को आराम।

तीसरे दिन ही श्यामा दस तोले की सोने की चेन और दस हजार की एक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
गड्डी ले आयी। ले कुमार...तेरी समस्या खत्म, अब तो सारे काम हो जाएंगे।

कुमार देखता रहा गया। कहाँ से लायी श्यामा, सच सच बता।

कहाँ से क्या, घर से और कहाँ से।

अगर किसी को पता चल गया तो, खुद भी मरेगी मुझे भी मरवाएगी।

कहीं कुछ नहीं होगा। बड़े बरतन में से यदि खुरचन निकल जाए तो बर्तन को भी पता नहीं चलता।

कुमार सोच में पड़ गया। इतना रुपया लूं कि न लूं। एक बार मन में आया मना कर दूँ। फिर सोचा मेरी सारी परेशानियों का हल इन्हीं से है। बस कुमार ने सभी कुछ जेब के हवाले किया। भावावेश में श्यामा को गले लगा लिया। धन्यवाद श्यामा, उसकी आंखे गीली हो गयी।

शायद, श्यामा को इसी पल की प्रतीक्षा थी। उसके चुम्बनों की बैछार ने कुमार को उत्तेजित कर दिया। श्यामा ने कुमार का समर्पण पाकर आभार व्यक्त किया। उसने तो जैसे कोई बड़ी निधि ही पा ली थी।

कुमार दुकान पर आकर ग्लानि में डूबता चला गया। क्या श्यामा ने मुझे पाने के लिए ही मेरी इतनी सहायता की। क्या फर्क है इन माँगने वालियों में, शर्मा को ड्राइवर बनने के लिए टैक्स देना पड़ा। मैंने भी क्या टैक्स भरा है, अभी कितना और भरना पड़ेगा।

क्या ज़िन्दगी हर कदम पर बाइपास ही माँगती है। सौदों और समझौतों की बिसात बिछी पड़ी है। समय के पांसे अपनी चालें चले जा रहे हैं। इन कुटिल चालों के पीछे भी हमारे जैसे लोग ही हैं। कितना मुशकिल है जिंदगी की चालों को समझना।

कुमार ने जेब में हाथ डालकर नोटो की गड्डी और चेन को सहलाया। कहीं कोई अहसास नहीं हुअ। कहते हैं धन की गर्मी बोलती है। पर यह तो सिर्फ ठंडा है...बर्फ सा ठंडा।

महीने पन्द्रह दिन में श्यामा इन्तजाम कर ही लेती है। बंधुआ मजदूर सा कुमार सोचता है।

क्यों फंसा।

मोहब्बत में।

तो रोता क्यों है।

फिर जाना पड़ेगा।

अबे तो, मत जा न।

वायदा तोड़ना तो मेरी फितरत में ही नहीं है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तो फिर जा भाड़ में। साले तुम्हें कोई नहीं समझा सकता।

पर इसका हल भी श्यामा ही दे जाती है, कुमार मेरी सगाई तय हो गयी है। आगरा में तराजू बांट के एक व्यापारी हैं, उनके बेटे से।

शादी कब की है

बस दो माह बाद।

सौदा कितने में तय हुआ।

सात लाख में।

फिर तो श्यामा, बधाई। बहुत बहुत बधाई।

कुमार, मुझे याद रखेगा न।

हाँ....।

मेरी शादी में आएगा।

हाँ....।

मुझे दुल्हन सजी हुई देखेगा।

हाँ....।

तेरे दिल में कुछ हलचल होगी।

हाँ....।

क्या हाँ....हाँ....लगा रही है। सीधा सीधा कुछ क्यों नहीं बोलता।

क्या बोलूं, मैं बस चाहता हूँ तुम जहाँ रहो खुश और आबाद रहो। इससे अधिक मैं क्या कह सकता हूँ।

अगर तुम ऐसा सोचते हो तो मेरा जीवन ही सफल है। इतने प्यार के सहारे तो कोई भी हँस के जीवन बिता लेगी।

"क्या, इतने भर से पूरा जीवन बिताया जा सकता है।"

"हाँ, क्यों नहीं बिताया जा सकता।"

"तुम मुझसे विवाह भी तो कर सकती हो। हमेशा के लिए मेरी होकर, तब तुम ज्यादा ज्यादा सुखी नहीं हो जाती?"

"कुमार, प्यार सदा से कुर्बानी ही माँगता आया है। क्योंकि समाज की अपनी रीति है और प्रेम की अपनी।"

"श्यामा, तुम ज्यादा बड़ी-बड़ी बातें नहीं कर रहीं क्या?"

"तुम ऐसा कह सकते हो, पर प्रेम अपना मार्ग स्वयं चुनता है और यह व्यक्ति-व्यक्ति की सोच और भावना पर निर्भर करता है कि कौन किन परिस्थितियों में क्या करेगा।

"पर श्यामा, तुम यह सब कैसे कर पायीं, यह मेरी समझ से बाहर है। इसके

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
पीछे जरूर कोई बड़ा कारण होना चाहिए। क्या तुम एक पुरूष को झुकाना चाहती थीं।

"हाँ भी और नहीं भी।"

"मतलब।"

'मतलब यह कि बचपन से घर में देखती आ रही हूँ कि लड़कियों-स्त्रियों पर इतनी पाबंदी लगी है कि दम घुटता है। मर्द खुद भले जो करते फिरें, भले घर की सफाई वाली, गली की सफाई वाली को फंसाते फिरें। पर लड़की...उस पर पाबंदी ही पाबंदी।"

"तुम स्वयं नहीं देखते, कोई लड़की घर से अकेली निकल ही नहीं सकती। उसके साथ मर्द का होना जरूरी है। भले ही वह चार साल का बच्चा क्यों न हो पर तुम हो कि उसके साथ जाना पड़ेगा। मुझे तो हँसी आती है। वह घरवालों का बाडी गार्ड भला किसी मुश्किल में क्या करेगा उल्टे उसे और सम्भालना पड़ता है।"

"यह तो प्रायः सभी घरों में हो रहा है। तुम्हारे साथ कुछ नया तो नहीं हुआ।"

"तुम्हें पता है तुम्हें पाने के लिए मुझे कितने पापड़ बेलने पड़े। पहले किटटू को मित्र बनाया फिर उसे अपना राजदार बनाया, रोज-रोज गिफ्ट दिए, ट्यूशन शुरू हुई तो मैंने अपनी ओर से कितनी कोशिशें की पर तुमने मेरी ओर ध्यान ही नहीं दिया।

"ध्यान कहाँ से देता, जो आदमी दिमाग में उलझनों की डोरों को सुलझाने में लगा हो और डोरें सुलझने की बजाय और उलझती जाती हों। वहाँ व्यक्ति भला दूसरी ओर कैसे सोच सकता है।"

"यही तो, एक तो घर का आक्रोश उस पर तुम्हारी बेरूखी, इस सब ने मुझे पागल कर रखा था। घर वाले पाबंदी लगाते हैं कहीं लड़की का किसी से चक्कर न हो जाए। जबकि यह लड़की का अपना निजि अधिकार है। वह किस से संबंध रखे या किस से न रखे। पर नहीं उसे कोई नहीं पूछता, उसे आदेश दिया जाता है। तुम्हारा संबंध फलां से तय कर दिया है और लड़की को वह स्वीकार करना ही पड़ता है।"

"कितनी मजेदार बात है मसला लड़की का है नियन्त्रित होगा परिवार द्वारा वह भी पुरुष के आदेश पर। बस मैं यह सब नहीं सह सकती थी इसलिए मैंने अपनी इच्छा से तुमसे संबंध बनाया।"

"यह संबंध पक्का भी तो किया जा सकता था।"

हाँ...किया जा सकता था पर तब मैं तुम्हारा बहुत बड़ा अहित कर देती, जो मैं कभी नहीं चाह सकती थी।

"लो कैसी बात करती हो श्यामा, इसमें भला मेरा क्या अहित हो जाना था।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तो सुनो, मेरी बुआ ने भी प्रेम किया था और घरवालों के समझाने पर भी अड़ गयी थी कि वो शादी करेंगी तो सिर्फ सुरेश से नहीं तो आजीवन कुंवारी रहेंगी। जानना चाहते हो तब क्या हुआ।''

''हाँ बताओ भाई।''

''पिताजी ने भाड़े के आदमी को शेरगढ़ से बुलवाया। कुल पांच हजार रूपये लेकर उसने सुरेश का खून कर दिया। शव से आँखें तक निकला लीं। लाश को बरहाना गांव के पास ले जाकर फेंक दिया। यह तो तुमने अखबारों में भी पढ़ा होगा। बताओ आज तक क्या हुआ। क्या कातिल पकड़ा गया, और जिसने पैसे देकर कत्ल कराया उसका क्या हुआ। बुआ की शादी कर दी अब वो अपने घर में है।''

''जरूरी तो नहीं जो तब हुआ, अब भी वही होना था।''

''क्यों जरूरी नहीं, तुम पैसे के दंभ में जीने वालों की मानसिकता नहीं जानते कुमार। ये पैसे के बूते पर मनमानी करते हैं। अब तुम ही बताओं मैंने तुम्हें चाहा और पर भी लिया भले हमेशा के लिए नहीं पर जितना पा लिया अपने अन्दर उससे संतुष्ट तो हूँ कि मैं अपने मन की कर सकी।''

''तुमने कभी यह सोचने की कोशिश भी की कि तुम्हारे इस व्यवहार से मुझ पर क्या बीतेगी।'

'कुमार अधिक पैसा कई बार बहुत दुखदायी हो उठता है। मैंने अपने उसी पैसे से तुम्हारी जरूरत भी पूरी कर दी साथ ही अपनी इच्छा भी...अब मुझे कहीं कोई मलाल नहीं है। घर वाले जहाँ चाहें मेरी शादी कर दें, होना तो वहीं है जो अन्य लड़कियों के साथ होता है। शादी करे, चूल्हा चौका करे, बच्चे पैदा करे, जेवर-साड़ी बनवाओं और मस्त रहो। पर अब मैं यह सब अपने मन की कर लेने के बाद ही करूंगी...कम से कम मुझे अन्दर से संतोष तो होगा।''

''मेरा प्रश्न यह नहीं था, मैं जानना चाहता हूँ तुमने मेरे बारे में सोचा भी नहीं कि मुझ पर क्या बीतेगी।''

''पहली बात तो यह कि तुम्हारा भला सोच कर ही तो मैंने संबंध को सीमित रखा, दूसरे तुम्हारी इतनी बड़ी जरूरत मिन्टों में पूरी कर दी। तीसरे, तुम यह भी तो सोचों कि लड़के जो सरे आम लड़कियों के साथ करते फिर रहे हैं उसका क्या। क्या उन्होंने कभी सोचा लड़की पर क्या गुजरेगी। बस एक तुम पर क्या बीता कि तुम तो बावेला ही मचाए जा रहे हो।''

''श्यामा मैंने कोई बावेला नहीं किया। जो महसूस किया वही तुमसे पूछ रहा हूँ।''

''तो जाकर पुरुष समाज से पूछो, न कि मुझसे। मेरा इरादा तुम्हारे प्रति सिर्फ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
प्रेम का था। न धोखे का न ही चालबाजी का, अगर तुम्हारी समझ में नहीं आता तो समझने की कोशिश करो। अपने पुरूष समाज को समझाओं मैं सिर्फ इतना कह सकती हूँ कि मुझे तुमसे प्यार है और रहेगा।''

''श्यामा तुम बात को समझ ही नहीं रही हो।''

''कहीं तुम्हारा पुरुष दंभ तो आहत नहीं हो गया कुमार, तुम सोच रहे हो एक छोकरी एक पुरुष को डिक्टेट कर गयी। यही अगर तुम करते हो मर्दानगी होती, मैंने किया तो गुनाह हो गया।''

''नहीं श्यामा, इतनी छोटी सोच मेरी नहीं है।'' कहकर कुमार चल पड़ा।

□

सुबह छः बजे ही चुन्नी कुमार के घर पहुँच गया, ''नेता जी, जल्दी चलो वहाँ बाइपास पे पमाड़ा हो गया है।''

''क्या पमाड़ा हो गया, जो तू बुलाने आ गया?'' कुमार ने प्रश्न किया।

''रात बारह बजे से बाइपास पे जाम लगा है।''

''बाइपास पर कैसा जाम...किसने लगाया?'' कुमार ने पूछा।

''रात चुंगी पे पुलिस वाले ने किसी ड्रैवर को चांटा मार दिया। ड्रैवर लीडर था उसने सड़क पे ट्रक टेढ़ा कर के अड़ा दिया। उसके देखा-देखी और ड्रैवर भी अड़ गए। मुझे तो तब पता चला जब अपनी दुकान के आगे तक जाम हो गया, उस तरफ तो कोटबन तक जाम है।'' चुन्नी को जितना पता है उतना उसने कुमार को बताया।

''ठींक है, अभी नाश्ता करके आता हूँ। तू चल के देख, हाँ एक बात बता, पुलिस आयी क्या?''

''पुलिस तो रात को ही आ गयी थी। एक पी.ए.सी. का ट्रक मथुरा से आया है। एस.पी. और डी.एम.भी आने वाले हैं। पर ड्रैवरों का कहना है ट्रांसपोर्ट मिनिस्टर खुद आएगा तो हड़ताल खोलेंगे। अब जनता पार्टी का राज है अपने राज में भी अगर पुलिस जुल्म करेगी तो बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।'' चुन्नी अपनी रौ में कहे जा रहा है।

''चुन्नी, तू चल मैं दस मिनट में आता हूँ, और देख कुछ लड़कों को लगा दे ढाबे से बाल्टी, जग, गिलास लेकर जाम की जगह पर पानी सेवा करवा दें। गर्मी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
के दिन हैं, लोग-बाग परेशान हो रहे होंगे।''

चुन्नी चला गया। कुमार जब मौके पर पहुंचा तो एस.पी. और डी.एम.आ चुके थे। भीड़ को चीर कुमार सबसे आगे पहुंचा तो उसके खद्दर के कपड़ों को देख कर एस.पी. ने रोक दिया।

''यहाँ कहाँ घुसे आ रहे हैं, नेतागिरी करने?'' साथ ही हाथ से कुमार को पीछे करने की कोशिश की।

कुमार जब तक स्थिति को समझता तब तक चुन्नी ने इशारा किया और मिस्त्री और ग्रीस वाले लड़कों ने अपने हाथों में लिए तेल ग्रीस वाले काले कपड़े एस. पी. की ओर उछाल दिए। साथ ही नारे भी, जो नेता जी से टकराएगा चूर-चूर हो जाएगा।''

कुमार ने हाथ ऊपर करके इशारा किया, ''खामोश, सब चुप हो जाओ। यह समय बहस और लड़ाई का नहीं है।'' फिर एस.पी. की ओर मुखातिब हुआ।

''सर....मैं कुमार, अध्यक्ष युवा कांग्रेस, मैं नेतागिरि करने नहीं, आपकी सहायता के लिए आया हूँ। अगर आपको मेरी जरूरत नहीं है, तो ठीक है मैं चला जाता हूँ।''

''सौरी मिस्टर कुमार...मुझे आपकी जरूरत है। इनमें से कोई भी मेरी बात सुनने को तैयार नहीं है। आप जितनी जल्दी हो सके जाम खुलवा दें। पीछे ढेरों बसें और कारें हैं...बच्चों और महिलाओं का गर्मी से बुरा हाल है।'' एस.पी. ने अपनी परेशानी बताई।

''आप चिन्ता न करें। महिलाओं और बच्चों की परेशानी का सोच कर ही मैं यहाँ आया हूँ, वरना नेतागिरी जमाने का शौक मुझे नहीं है।'' कुमार ने एस.पी को आश्वस्त किया।

कुमार उस ड्राइवर की ओर चल पड़ा, ''हाँ भाई बता, सारा वाकया साहब के सामने बता, हुआ क्या था?

''साहब को क्या बताना है। साहब लोग सब जानते हैं। सारा भ्रष्टाचार इनका फैलाया हुआ है। हर नाके पे पुलिस वाले गाड़ियां रोकते हैं....तेरी बैक लाइट नहीं जलती...माल ओवर लोड है....दिखा क्या लदा है? खामखा की मगज मारी। ये आर.टी.ओ. का काम है के पुलिस का?''

''आप बताओ नेता जी...एक ड्रैवर जालन्धर से माल ले के चला गोहाटी का, रास्ते में नाके ही नाके, कितना पैसा इनको ड्रैवर दे....उधर मालिक को भी हिसाब देना होता है।''

इधर इनको पैसे दे दे कर थक जाओ, इनका पेट ही नहीं भर के देता। रात

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
को जब हमें रोका तो हमारे सात ट्रक थे। मैंने दो रुपये इसे दिए...और ड्रैवरों को भी कहा...दे दो यार दो-दो रुपये।

ये माँ-भैन की गाली निकालने लगा...दो रुपये क्या भीख देता है....मैं गाड़िया। बंद करूंगा।

हमने हाथ जोड़े... साब जी हमने क्या अफीम लादी हुई है जो गाड़िया। बंद करोगे...दो रुपये भी इस वास्ते दे रहे हैं के फजीहज में टैम खराब न हो।

ये तो बाऊ, गंदी-गंदी गालियां देने लगा...अब जो कहना है थाने चल के बोलना। मैंने भी कह दिया, ये खड़ी हैं गाड़ियां ले जा थाने। बस इसने तो मेरे मुंह पे थप्पड़ ही मार दिया। मैं वर्दी का लिहाज कर गया नहीं तो इसी के ऊपर से गाड़ी निकाल देनी थी।''

''इतनी बेज्जती के बाद गुस्सा तो आना था। मैंने गाड़ी आड़ी करके लगा दी कि अब यहाँ जाम लगेगा। इतनी देर में तो जी बीस-पच्चीस गाड़ियां इन्तजार कर रहीं थीं। उन्होंने भी कहा हमारा जनता का राज है....हम पुलिस के नौकर हैं कि पुलिस हमारी नौकर है।''

उसके बाद तो जी इसने थाने फोनकर के और बंदे बुला लिए। वो बंदे आए तो कहते हैं जाम खोल नहीं तो तेरा यहीं पे एन्काउण्टर कर देंगे। बस जी सारे ड्रैवर भड़क गए...आया वड्डा एन्काउण्टर वाला, अब ये जाम तो मिनिस्टर के आने पे ही खुलना है।'' वह ड्राइवर तेज-तेज बोलकर हाँफने लगा था।

''जाम तो मिनिस्टर नहीं, प्राइम मिनिस्टर के आने पर खोलना। पर इनसानियत तो मत भूलो, पीछे कारों-बसों में बच्चे-औरतें हैं। इतनी गर्मी है, प्यास से मर रहे हैं। इस वक्त दस बज रहे हैं, नाश्ते पानी के बिना कैसे होगा? यहाँ तो पास में ढाबा भी नहीं है।'' कुमार ने ड्राइवरों के ग्रुप को कहा।

''ये बात तो ठीक है। औरतों-बच्चों का क्या कसूर...मेरे ट्रक में तो बकरियां लदी हैं। गर्मी से दो बकरियां मर गयी।'' एक ड्राइवर बोला।

कुमार ने उस ड्राइवर की बात लपक ली, ''यही तो मैं भी कह रहा हूँ। आगे वाले ट्रक को थोड़ा सीधा करो और साइड से कारों और बसों को जाने दो। ट्रकों के कारण झगड़ा है। ट्रकों का जाम लगने दो। जब तक कोई फैसला नहीं हो जाता, एस.पी. तो आ ही चुके हैं।''

''ओ बाऊ, तू बड़ा नेता है...हैं...जे हमने कारों-बसों को जाने दिया तो फिर हमारी कौन सुनेगा, जाम का मतलब जाम बस...हमें और कुछ नहीं कहना।'' ड्राइवरों का नेता बोला।

''आप चाहते क्या हो? अगर आप चार दिन भी खड़े रहो तो मिनिस्टर यहाँ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नहीं आने का। वो वेल्ला बैठा है क्या, जो चल देगा दिल्ली छोड़ के। अगर ऐसा होने लगा तो हर जगह हर आदमी ही बात बे-बात जाम लगा के बैठ जाएगा। ये एस. पी. और डी.एम. सरकार की तरफ से ही आए हैं। इनका काम है लॉ एण्ड आर्डर मैंनटेंन करना।'' कुमार थोड़ा तल्ख हुआ।

''न यही लॉ आर्डर करते हैं। इनके कारिंदे जगह-जगह नाके पे वसूली करते हैं।'' एक ड्राइवर गुस्से से बोला।

''अरे भई...एक पुलिस वाले ने गलती की...आपने जाम लगा के उसकी शिकायत कर दी। शिकायत सुनने एस.पी. और डी.एम. मौके पर मौजूद हैं। जिसने गलती की है उसके खिलाफ विभाग कार्यवाही करेगा, उसे सजा मिलेगी।'' कुमार ने ड्राइवरों को आश्वस्त करना चाहाँ

''कोई कार्यवाही नहीं होगी...सब कहने की बाते हैं।'' कोई ड्राइवर भीड़ में से बोला।

कुमार ने एस.पी. से अलग से कुछ बात की। एस.पी. आगे आया और बोला, ''जिस सिपाही ने गलती की है, उसने गैर कानूनी काम किया है...पुलिस की छवि को खराब किया है उसे अभी से सस्पेंड किया जाता है।''

इतन सुनते ही ड्राइवर अपने-अपने ट्रकों की ओर दौड़ पड़े। ड्राइवरों का नेता कहता रह गया... सिर्फ सस्पेंड करने से बात नहीं बनती उसे हथकड़ी लगा के थाने ले जाओ।

एस.पी. इस पर अपनी कोई प्रतिक्रिया देता, सभी ड्राइवर अपनी गाड़ियों की ओर भाग लिए। वहाँ पर हॉर्न और गाड़ी निकालने का शोर फैल गया। अब कहाँ जाम और कैसा जाम।

□

''कुमार, एक सलाह दे यार।'' शर्मा ने आते ही बात शुरु कर दी।

''अब क्या नया कर लाया...शर्मा?'' कुमार ने पूछा।

''एक छोरी है यार, मेरी वा ते अट्टी-सट्टी हो गयी है। वाके माँ-बापन ते बात हो गयी है।'' शर्मा एकदम पास आकर धीम-धीम कुमार से बोला।

''जब सारी खिचड़ी पका ही चुका है तो घी डाल और खिचड़ी खा। पर देख गर्म खिचड़ी से कहीं तेरा मुंह न जल जाय।'' कुमार ने हंसकर कहा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"इसी मारे तो तेरे से सलाह लेने आया हूँ।"

"अच्छा बैठ और पूरा किस्सा बता...चावल कहाँ से आए...दाल कौन लाया, हांडी मिट्टी की है या एलम्यूनियम या पीतल की, कहीं बीरबल वाली खिचड़ी तो नहीं।" कुमार ने रस लेते हुए कहाँ

"ये सुसरा बीरबल कहाँ से घुस आया। यार कुमार, मजाक छोड़ पूरी बात सुना।" शर्मा ने बेज़ारी से कहा।

"चल सुना...अब मैं चुपचाप सुनूंगा।" कुमार ने शर्मा को आश्वस्त करते हुए कहा।

"पिछले चक्कर पे गुहाटी गया था, लाला की दाल का लदान ले के। वहाँ साला बंगाल में गाड़ी का गुल्ला टूट गया। आस-पास न आदमी न आदमी की जात। मैंने शहर जा के सेठ को फोन कर दिया और मिस्त्री को भी ले आया।

अब तुम तौ जानौ, पहले गुल्ला खुलैगा...शहर जाएगा, खराद-बराद हो के, तब जा के कहीं फिट होगा, चार-पांच दिन तो लगने ही लगने हैं। ट्रक पे रहना भी जरूरी...अब खावे की परेसानी। न वहाँ ढाबा... न कोई दुकान...दोनों बगल कूं घूम के, देख के आए तो वहाँ मीलभर पीछे एक झोपड़ी बनी भई ही, सड़क के किनारे।

मैं वहाँ चलौ गयौ के वे रोटी खवा दें तो बाजे बज जायं। वहाँ पे कोई गरीब से बंगाली हैं। मैंने कहीं, तो बोले हमपै का यहाँ रासन धरौ है। पोखरा ते मच्छी पकर लामैं...कछु मोटो चावल होय सो रांध के खामै।"

"वहाँ परिवार में कुल कितने आदमी थे?" कुमार ने जिज्ञासा से पूछा।

"अरे, दो तो वो लोग-लुगाई है, एक छोरी ही और दो छोरा। छोरी ठीक सी ही...मैंने ध्यान ते देखी, अगर याए नहवा-धुवा के ढंग के कपड़ा पहरा दो तो गजब ढावैगी।" शर्मा की आंखों में आशिकी की चमक कौंधने लगी।

"अच्छा सारा किस्सा यहाँ, के वहाँ पर तेरे मन-माफ़िक लड़की थी और तेरे पास तीन-चार दिन थे जुगाड़ फिट करने के लिए।" कुमार ने हंसते हुए कहा।

"धरम ते, तोते झूठ ना बोलूंगो...पहलम पट्ट तो मेरे मन में बिलकुल युई बात आई। पर तू आगे की तौ सुन, बीच में बोल बोल के जिच्च मत कर। देख यार, मैंने कही है न, सब कछु सच्च-सच्च बताऊंगो।" शर्मा थोड़ा अधीर हो उठा।

"चल ठीक है।" कुमार ने मुस्करा कर कहा।

"हाँ तौ, छोरी देखते खैम मैंने कहीं, अरे रासन की कछु कमी न है शहर ते ला के पटक दुंगो, पर रांध के खवा तो देओ। तुम भी खाओं हम भी खामैं....और मौज है जाएगी।" शर्मा बोला।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"अच्छा...और वो बंगाली तेरी भाषा खूब मजे से समझ रहे थे और जवाब भी दे रहे थे?" कुमार ने व्यंग्य किया।

"न...भाषा तो उनकी हमारी समझ में न आवै और हमारी भाषा वो न समझैं। पर इसारे और हाँ हूँ करकै जुगाड़ करनौ पड़ौ...सो हमनेऊ कर लियौ।"

"चल ठीक है...आगे चल।"

"तो शहर ते चावल-दाल घी नौन ला कै पटक दियौ। हम दो और पांच वे...मजे ते तीन बख्त जीमौ करते। एक दिनां मौको देख के मैंने छोरी ते कही, मेरी दुलहन बनैगी?" वो शर्मा के भीतर भाग गयी।

"रुक शर्मा...यही बात बहुत ज़रूरी है। तूने उसे कैसे कहा कि तू मेरी दुल्हन बनेगी?"

"लै, यामै का है? मैंने अंगूठा के साथ बारी और बीच वारी ऊंगली ते इसारौ कियौ। जैसे जनानी घूंघट करैं।"

"न यों नहीं, कर के बता।"

"यार कुमार, तोय सुननी है तो सुन, न तौ रहन दै।"

"तुझे सलाह लेनी है कि नहीं...मैं किसी वजह से पूछ रहा हूँ। "

शर्मा ने कर के दिखाया और बोला, "बौस वो शर्मा के भागी तौ हम समझ गए के छोरी हसीं तौ फंसी, शर्माई तो जेब में आयी। बस जी, इमने उसके माँ-बापन कूं दाना डाला। उनते हमने कहीं, यहाँ चलता रोड है एक ढाबा खोल लो....खूब चलेगा।"

वो बोले, यहाँ पैसा कौन पे धरे हैं। "भट्टी कहाँ ते अवैगी, भांडे-बासन हमपै अपने खावे कूं भी न हैं।"

हमनै कही, "अपनी छोरी कौ ब्याह हमते कर देओ...ढाबौ हम खुलवा दिगें।"

वे बोले, "ढाबौ खुलवा देओ, जा दिना ढाबौ, खुलैगौ हम छोरी को लगन तेरे संग कर दिंगे।"

"अबे शर्मा....तू तो साले पूरा चिड़ीमार है...एक दिन में ही फुल तीर मार लिया।" कुमार ने प्रशंसा से शर्मा को देखते हुए कहा।

"अरे, एक दिन में कहाँ...चार दिन हम वहाँ रहे, तुझे बताया तो है।" शर्मा झल्ला कर बोला।

"अच्छा चल ठीक है...लड़की से अलग से भी कुछ बातचीत की?" कुमार ने शर्मा को आंख मारते हुए पूछा।

"हाँ यार...सो हम ड्रैवर हैं...गाड़ी स्टार्ट करना, क्लच दबाना रोज का काम

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
है बस गेयर डाल के रेस देना बाकी है....फिर तो गाड़ी सीधी कोसी बाइपास पे आ के रुकेगी।'' शर्मा उत्साह से बोला।

''अब तुझे इसमें मेरी सलाह की क्या ज़रूरत है? सारी कहानी तेरी खुद फिट-फाट की हुई है या गेयर भी मैं ही डालूंगा।'' कुमार ने दिल्लगी की।

''यार, तेरी भाभी लगती है...कम से कम इतना तो सोच। सलाह यों चाहिए के वहाँ ढाबा खुलने का जुगाड़ करना है। ढाबे में पांच-छः हजार रुपये लग जाएंगे, फिर उनके लिए कपड़ा-लत्ता भी ले के जाने पड़ेंगे। उनके पास तो बस छोरी-छोरी ही है।''

''वो सलाह भी मुझे मालूम है...ज्यादा बन मत सीधे-सीधे बोल नोटों के जुगाड़ में है। मेरी भी सुन ले। मेरे पास फूटी धेली भी नहीं है। नई कमेटी अब कोई डलेगी नहीं...पहले से पांच चल रही हैं। इसके अलावा कोई बात है तो बता....नहीं तो भाई जै राम जी की।'' कुमार एक दम से तल्ख हो उठा।

''या में ऐसी ऐंठवे की क्या बात है? तेरी आधी बात ठीक है, आधी गलत। पैसा तो चाहिएं....पर तुम से नहीं। जहाँ से चाहिए, वहीं की सलाह चाहिए....वाके बारे कछु बता।'' शर्मा थोड़े चिन्तित स्वर में बोला।

बौस बात ऐसी है, ध्यान से सुन और किसी को खबर नई होनी चाहिए। मैं तेल का टैंकर लेकर जा रहा हूँ। लाला से पहले से कह दी है अनसोर (इन्श्योर) करा ले।

आगे मुगलसराय या पटना में दस-बीस हजार लीटर तेल बेच दऊं और बंगाल में जाके गाड़ी पलटा दऊं। बस बौस, एक झटका में काम हो लेगा। शर्मा ने कहकर लम्बा सांस लिया।

''और इंश्योरेंस वालों ने कहीं से पता लगा लिया तो बेटा तू जेल में और तेरी वो चैंचरी रेल में, ये भी सोच के रख लेना।'' कुमार ने गम्भीरता से कहा।

''अरे यार, ट्रक ड्रैवर अनसोर गाड़ी में ऐसे खूब कर लेते हैं। कैऊ बार हुआ है। पर आज तक कोई पकड़ा नहीं गया।''

''भले न पकड़ा गया हो, पर गलत काम आखिर में गलत काम ही है। उड़ती चिड़िया सबने देखी है, ''फंसती कोई नहीं देखता।'' कुमार का लहज़ा दार्शनिक हो गया।

''देख यार कुमार, करना तो पड़ेगा....न तो छोरी गयी हाथ से।''

''गयी तो गयी....तेरा बाप देख तो रहा है तेरे लिए लड़की, तेरे को क्यों अपने आप करने की जल्दी पड़ी है?''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"कहता है अपने से करने की....बाप के बस की होती तो कब की हो लेती शादी। तीन साल से सारे पैसे घर में ले ले के भी उसे मेरे लिए छोरी नईं मिलती। अरे कुमार, तू नई समझैगा...बुड्ढ़ा भौत हरामी है। उसे पता है जा दिना शर्मा की शादी हो गयी, इसकी तनखा बहुरिया के हाथ में होगी। सो वो लप्पू-झप्पू करके टैम पास कर रा है।"

"ओए शर्मा के बच्चे, बाप को हरामी कहते तुझे शरम नहीं आती?"

"जब बाप को हरामी पन करते शरम नईं आती तो हमैं कहते क्यों आएगी? या मारै तो हम अपने आप ते अपना जुगाड़ कर के आए हैं।"

चल अब जो होगी देखी जाएगी....हमपै और कोई रस्ता भी तो नईं है। कहकर शर्मा चल पड़ा।

☐

गिर्राज के ढाबे पर दो कारें रुकीं, भोला की नज़र पड़ी और कारों से उतरी एक सवारी को वह पहचान गया। सीधा भागा....चढ़ती-उतरती सांसों के बीच बोला, "कुमार. ..महमूद आया है।"

"कौन महमूद?"

"अरे महमूद...अपना महमूद....पिक्चर वाला यार....वो देख सामने गिर्राज के ढाबे पर?"

"सामने....कहाँ....तुझे कोई मुगालता लगा है। कहाँ है वहाँ महमूद?"

"वो तो रहा, वो जो पान के खोके के बगल वाली चारपाई पे बैठा है। अरे बौस...मैं उसे कार से उतरते ही पहचान गया....और तुझे बताने भागा...चल न यार, मुझे महमूद से हाथ मिलाना है।"

"अबे...हाथ मिलाना है तो चला जा, जाके मिला ले हाथ...वो तुझे मना थोड़े करेगा।"

"यार...हिम्मत नहीं पड़ती...मैं पढ़ा-लिखा नहीं हूँ न....बात नहीं कर सकता। कुमार प्लीज....चल न यार मैं तेरे पांव पड़ता हूँ। जल्दी कर, नहीं तो वो लोग चाय पीकर चले जाएंगे।" भोला कुमार के पैरों में झुक गया।

"अच्छा चल..." भोला लपकता चला, साथ ही बोलता गया...."कुमार,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भूलना नहीं मैंने उससे हाथ मिलाना है।''

कुमार मुस्कराया, ''इतना क्यों उत्तेजित हो रहा है? चल तेरा हाथ उससे मिलवाता हूँ।''

''बौस, वो मुझसे हाथ मिलाएगा न।''

''अरे वो क्या, उसका बाप भी तुझसे हाथ मिलाएगा....आखिर तू कुमार के साथ चल रहा है। और तुझे क्यों लगता है महमूद से हाथ मिलाना बहुत बड़ी बात है?''

''ले कहता है महमूद से हाथ मिलाना बड़ी बात है। अरे, बड़ी बात नहीं तो क्या है? पूरे बाइपास पे किसी ने भी फिल्म एक्टर से आज तक हाथ नहीं मिलाया।''

''बस...इतनी-सी बात, वो भी हमारे तुम्हारे जैसा इनसान है...आ जा।''

''महमूद जी नमस्ते....मैं कुमार....सामने मेरी दुकान है, कुमार मोटर्स... ।''

''नमस्ते....सलावाले कुम....गुड मोर्निंग...आओ बैठो।''

''यह भोला है...साथ वाली पेंक्चर की दुकान इसी की है। इसी ने आपको पहचान कर मुझे बताया...यह आपसे हाथ मिलाना चाहता है।''

''ओ हथ क्या जी गले मिलाओ...आओ...क्या नाम बताया?'' महमूद चारपाई से उठ खड़ा हुआ, और भोला की ओर अपना हाथ बढ़ाया।

भोला...भोला ने हाथ थाम लिया उसका पूरा शरीर मुस्करा रहा था। तब तक महमूद ने उसे गले लगा लिया। भोला की खुशी संभाले नहीं संभलती, वह गिर्राज को बोला, ''इन सबको चाय-परांठे मेरी तरफ से...चाय कड़क नब्बे की स्पीड की. ..दुद...मिट्ठा रोक के पत्ती ठोक के ।''

''क्या...क्या बोला, जरा एक बार फिर बोलना।'' महमूद बोला।

''वो आप लोगों के लिए चाय-परांठे के लिये कहा है।'' भोला थोड़ा संकुचित होकर बोला।

तब तक बाइपास के प्रायः सारे लड़के वहाँ जमा हो गए थे और भोला को ईर्ष्या भरी नजरों से देख रहे थे।

''अरे, वो चाय-परांठे की कोई बात नहीं सरदार जी, तुसी साडे नाल खाओ, बादशाहो। मैं तो जी ये पूछ रा हूँ के ''रोक के ठोक के'' तुमने क्या बोला, एक बार फिर बोल के दिखाओ।'' महमूद अपने फिल्मी अंदाज में बोला।

''वो....दुद मिट्ठा रोक के...पत्ती ठोक के। ये स्पेशल चाय के लिए कहते हैं।''

''हाँ...दुद मिट्ठा रोक के....पत्ती ठोक के..क्यों भाई सरदार जी, ठीक है न।''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भोला शर्माया, "जी....।"

कारें चली गयी...भोला बाइपास पर महीनों इतराता फिरा कि उसने महमूद से हाथ मिलाया है।

□

यूथ कांग्रेस जिला कार्यकारिणी की बैठक खत्म होते ही कुमार ने देखा, अभी साढ़े ग्यारह हैं, एक बजे की पैसिंजर मिल जाएगी। एक घण्टा तो पूरा है। क्यों न तनेजा अंकल के घर चला जाए। वो ग्वालियर से ट्रांसफर हो कर मथुरा आ गये थे। कुमार ने पास के निकलते रिक्शे को रोका, "सत्ताइस क्वाटर्स चलेगा क्या?"

"चलो बाऊजी।"

रोड पर ही कुमार उतर कर तनेजा अंकल के घर जाने वाली पगडंडी पर हो लिया।

कुमार ने दरवाजे की सांकल खटखटाई तो एक सुन्दर-सी लड़की ने दरवाज़ा खोला। उसने गुलाबी रंग का सूट पहना हुआ था...सुराहीदार गर्दन पर बड़ी-बड़ी आँखों में प्रश्न वाचक चिह्न लिए वह कुमार को निहार रही थी। 'जी'...कह कर वह दरवाजे के पल्ले पकड़े खड़ी थी।

"तनेजा अंकल हैं?"

"जी....वो तो ड्यूटी पर गए हैं....आप कौन?"

"आंटी होंगी घर में?"

"जी हैं...।" तभी अन्दर से आवाज आयी, "कौन है हंसो?"

"मम्मी, कोई आपको पूछ रहे हैं।"

"अन्दर बुला ले बेटा...." आण्टी साड़ी के पल्लू से हाथ पोंछती हुई रसोई से निकलीं और द्वार की ओर देखा।

"आण्टी नमस्ते।" कुमार अन्दर प्रवेश कर गया और आण्टी तक पहुंचकर पैर छुए।

"आण्टी पहचाना...?"

"कुमार...है न, पुत्तर तेरे को पहचानने के लिए भी मुझे किसी से पूछना पड़ना है क्या?"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"आजा...बेटा इधर बैठ। आज तेरा दिल आण्टी से मिलने का कैसे कर आया?" हंसो बेटा पानी दे और चाय बना ले।

"आण्टी, आज युवा कांग्रेस की बैठक जल्दी निबट गयी। अब पैसिंजर एक घण्टे बाद है, तो सोचा आप से मिलता चलूं।"

"चल, ये तो अच्छा ही हुआ के तेरी बैठक जल्दी निबट गयी, नहीं तो हमें मथुरा आए साल भर हो गया...तू आया ही नहीं। सरला कैसी है?"

"जी, मम्मी ठीक हैं, आपको याद करती हैं। वो आपकी बहुत सारी बातें बताती हैं।"

"हंसो बेटा, चाय यहाँ रख...ये कुमार है...देवी दयाल जी का लड़का। ग्वालियर में हमारा घर बिलकुल आसपास था, लगती दीवार के साथ।"

"नमस्ते, हंसो ने कुमार को नमस्ते करते हुए कहा।" "आपकी तो दुकान है न...मोटरपार्ट्स की?"

"बेटा...दुकान तो है ही, ये यूथ कांग्रेस का भी नेता है।"

"हाँ मम्मी जी, वो तो मुझे भी पता है...पापा जी उस दिन आपकी ही बात कर रहे थे।" हंसो कुमार से मुखातिब हुई।

"क्यों भई, मेरी बात अचानक...ऐसी क्या खास बात थी।?"

"वो पापा जी कह रहे थे, देवीदयाल के लड़के कुमार ने घर को उठा लिया है। सारे काम अकेला करता है, हम रेलवे वालों के बच्चे कहाँ इतने आगे निकल पाते हैं।" हंसों ने हंसकर बताया।

"और क्या...रोज तो ट्रांसफर हो जाता है। नयी जगह जाओ वहाँ डर-डर के रहो...सारे नये और अनजान लोग। फिर बाहर की ड्यूटी...नाइट ड्यूटी पिता का कंट्रोल ही नहीं होता बच्चों पर....माँ की वैसे भी सुनता कौन है?"

"कुमार, सरला ने तुझे बताया, ग्वालियर में तू दो साल का था और हंसो एक साल की, ये जब भी तेरे सामने आती तू इसके बाल खीचता था। ये रो-रो के सारा घर सिर पे उठा लेती थी। दो-तीन बार ऐसे हुआ तो ये तुझे देखते ही डर जाती थी और तू रोता था कि तुझे इसके बाल खींचने हैं।"

"हाँ आण्टी जी...मम्मी ने मुझे बताया था। उन्होंने तो यह भी बताया कि जब यह मेरे साथ-साथ स्कूल जाती थी तो ये मेरा लंच बाक्स खोलकर सारा खाना खा जाती थी...अपने लंच बाक्स को खोलती भी नहीं थी।"

"हाँ...हाँ...अब तो ये खाना भी ध्यान से नहीं खाती...देख न कितनी सूखी सड़ी है...एक दम कमजोर।"

"हंसो, तुम किस क्लास में हो?"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"एम.ए. फाइनल में ...यहीं के. आर. कॉलेज में।"

"यहाँ कोई परेशानी तो नहीं, ग्वालियर में तो अंकल हमारे ट्रांसफर के बाद भी दुबारा पहुंच गए थे। यहाँ न्या-नया नहीं लगता।?"

"हाँ, लगता तो है...एक तो आपके यूथ कांग्रेस वालों ने यहाँ भी खूब गुंडा गर्दी मचा रखी है। वो लवानिया अंकल का लड़का है न, वो तो बस कुछ मत पूछो....रोज कुछ न कुछ बोलेगा।"

"अरे वो करेला...उसकी ऐसी तैसी...तू चिन्ता मतकर, वो कल से तेरी तरफ देखेगा भी नहीं। मैं समझा दूँगा उसे।"

"नहीं...नहीं....आप उसे कुछ मत कहना...वो पूरा गुंडा है। उसे पता चला कि मैंने आपसे कहा है तो और ज्यादा बदतमीज़ी करेगा।"

"हंसो, तू डर मत। अभी इतनी हिम्मत किसी की नहीं है। उसका ऐसा इन्तज़ाम करूंगा कि वो याद रखेगा।"

"आप सुनाओ, आप की नेतागिरी कैसी चल रही है?" हंसो ने अपनी चोटी को सर का खम देकर आगे किया और उसमें बंधे लाल रिबन से खेलने लगी। कुमार उसे खेलते हुए ग़ौर से देखता रहा तो उसने पूछ ही लिया।

"ऐसे क्या देख रहे हैं?"

कुमार थोड़ा सतर्क हुआ और बोला, "देख रहा हूँ एकदम बचपन में मैं तुम्हारे बाल खींचता था तो तुम रोती थी। अब तो पूरी चोटी है...खींचने में भी आसानी होगी। तब मैं देखूंगा कि तुम रोती हुई कैसी लगती हो?"

"हाय....मम्मी जी, देखो मेरी चोटी खींच के ये खुश होंगे, कितने निर्दयी हैं।"

"चल पागल...ऐसे नहीं बोलते। बचपन में कोई समझ थोड़ी होती है। सारे बच्चे ऐसे ही करते हैं।" आण्टी ने हंसो को डांट दिया।

कुमार ने मन में खलबली मच गयी। अपने मन के भावों को छुपाता हुआ वह उठ खड़ा हुआ, "आण्टी चलूं...पैसिंजर का समय हो गया है।"

"बैठ न बेटा, इतने लम्बे समय बाद मिला है...रोटी खा के जाना। चार बजे अपने अंकल से भी मिल लेना, वो बहुत खुश होंगे।"

"आण्टी....मुझे कोसी जाकर दुकान भी खोलनी है।" कुमार ने आण्टी के पैर छुए और चल दिया।

हंसो दरवाजे तक साथ आयी। कुमार ने उसे नमस्ते कहा तो वह शोखी से बोली, "लो, चोटी नहीं खींचोगे?" और चोटी आगे कर दी।

"नहीं...मैं इतना निर्दयी तो नहीं बनना चाहूँगा....हंसो के लिए तो किसी भी कीमत पर नहीं। हाँ, बचपन की भूल के लिए क्षमा ज़रूर मांगूगा।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"अच्छा जी...अब बनने भी लगे। बातें बनाना तो कोई आप से सीखे।"

"सच...हंसो तेरी कसम।" कुमार का स्वर भीग गया। वह मुड़कर बिना पीछे देखे स्टेशन की ओर चल दिया।

□

"कुमार...अभी तेरे पास कमला पण्डत्यानी आएगी भगवान सिंह का स्वर मीठा था। ये जो सामने खेत पड़े हैं न, जहाँ से हो के तू कॉलेज जाता है और गिर्रांज ढाबे के पीछे, सब उसी के हैं।"

"हुआ करें, मैंने उसमें क्या करना है?"

"करना तो किसी ने कुछ नहीं है....जरा उससे पटा के मीठी-मीठी बात करियो...वो सामने सड़क सहारे प्लाट काटने की बात कर रही थी।"

"चाचा ज़रूर कर रही होगी, उसे पैसे की जरूरत होगी तो अपने खेत ही बेचेगी। उसे बेच लेने दे, हमें क्या करना है?"

"हर बात में तू योंई कह देता है, हमें क्या करना है?" तुझे नई करना तो क्या, हमें तो करना है। मैंने उससे कही थी तू कुमार को पटा, अगर वो तेरा प्लाट ले लेगा तो उसकी देखा देखी सारे बाइपास को लोग प्लाट ले लेंगे।"

"चाचा, मैंने तुझसे कब कहा, मैंने प्लाट लेना है?"

"ओह...फो...ओफ....ओ भगवान सिंह ने माथे पर हाथ मारा।" मैंने उसे कब कहा कि तूने प्लाट लेना है। वो तो मैंने कमला से कहा कि तू कुमार को पटा। अरे प्लाट तो मेरे को लेना है। वो तीन हजार रुपये माँग रही है, सौ गज के प्लाट के।

"मेरी समझ में नहीं आता इसमें परेशानी क्या है? प्लाट वो बेच रही है...रेट उसने बता दिया है। तुम्हें प्लाट लेना है तो मैंने क्या करना है? मुझे यह समझाओ, बाकी इन झमेलों से मेरा कुछ लेना-देना नहीं है।"

"वैसे तो सारे हिन्दुस्तान के झमेलों में तेरा लेना-देना होता है। एक भगवान सिंह के झमेलों में तेरा कुछ लेना-देना नहीं है। ठीक है बेटा...तेरा कुछ लेना-देना नहीं है तो।"

"अरे चाचा, तू हर बात को उल्टा क्यों लेता है? मैं सिर्फ यह पूछ रहा हूँ इसमें मुझे क्या करना है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"यही तो मैं भी बक रहा हूँ। मैंने प्लाट लेना है, तू कमला को ये समझा के किस्तों पे प्लाट दे...सौ रुपये महीने की किस्त करा दे। बस और क्या करना है?"

"मगर ये होगा कैसे?"

"ये सब कैसे करना है? ये तू जान। अरे देख वो कमला आ रही है। मेरी कोई बात मत करियो के मैंने तुमसे कुछ बात की है।"

"कमला मौसी राम-राम, आज भाणजे की कैसे याद आयी?"

"कुमार, तेरे पास काम से आयी हूँ...भगवान सिंह ने तुझे बताया नहीं?"

"नहीं, चाचा तो अपनी गाड़ी का रोना रोने आया था...इसपे और कोई काम तो है नहीं।"

"अरे कमला, मैं तो भूल ही गया...बिलकुल दिमाग से निकल गयी। ले अब करले, मैं भी यही खड़ा हूँ।"

"छोटू, मौसी के लिए चाय बना जरा बढ़िया-सी...दूध में पत्ती डाल दे।" कुमार ने ढाबे वाले को आवाज़ दी।

"एक बात बता कुमार, तू सबको मौसी और चाचा ही क्यों बनाता है?" कमला ने आराम से कुर्सी संभाल ली।

"वो यों मौसी, के मेरी पिता जी की सात साली हैं और मैं यह गिनती सत्तर तक पहुँचाना चाहता हूँ।"

"हैं....हैं....कुमार तू बड़ो खराब है।" कमला ने प्यार से कहा।

"ले...मौसी का रिश्ता तो बहुत प्यारा होता है। हमारी भाषा में तो कहते भी है जैसे माँ वैसे मासी।"

"तभी तो बेटा, तेरे पास आयी हूँ। देख, वो सामने जो खेत हैं और ये ढाबे के पीछे, सब अपने ही हैं। मैं सोच रही थी सामने वाले खेत में से तेरे को एक प्लाट दे दूँ।"

"मौसी नेकी और पूछ-पूछ...फौरन दे दे। बोल कब चलूं बैनामा कराने।"

"बैनामे को तो तू कभी चल ले, पर मैं तो कह रही थी कि लबे सड़क सौ गज का प्लाट तू ले ले। तेरी दुकान भी बन जाएगी और पीछे मकान भी। देख, तेरे से ज्यादा पैसे थोड़े लेने हैं। तू तीन हजार दे दे और बैनामा करा ले।"

"चाची, यहाँ तीन हजार तक एक साथ किस पे रखे हैं? अगर तू सौ रुपये महीने की किस्त कर दे, तो कुछ सोचूं।"

"बेटा, बात ऐसी है के तुझे प्लाट लैना नईं है। अरे मैं तो मर जाऊंगी, तू और तेरे बच्चे जिन्दगी भर याद रखेंगे के मौसी तेरी जिन्दगी बना के मरी।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"मौसी, मरें तेरे दुश्मन...तू क्यों मेरे बाप की एक साली कम करने पे तुली है?"

"तो क्या मैं सदा मदा बैठी रहूँगी। तू नेता है तेरी खूब चलती है। तू समझ ही नई रा, तेरे को लबे सड़क प्लाट, पीछे के प्लाटों के रेट में दे रही हूँ। क्योंकि तेरी देखा देखी और भी लोग प्लाट लेने आ लेंगे। न तो लबे सड़क का प्लाट छः हजार से एक दमड़ी भी कम न दूँ। तू न माने तो पूछ ले भगवान सिंह से, क्यों भगवान सिंह तू बोलता क्यों नहीं है? तेरे मुंह में क्या घुंघनी भरी हैं?"

"हाँ कुमार, कमला सही कह रही है...बेटा मैंने भी प्लाट की बात करी थी। तो इसने पीछे का प्लाट तीन हजार का बताया है। रेट तो ठीक कह रही है पर मुझ पे एक मुश्त तीन हजार नई है, नई तो मैं खड़े-खड़े ले लेता प्लाट।"

"चाचा, तीन हजार तो मेरे पास भी नहीं है। अभी-अभी तो शादियों से निबट के चुका हूँ। तभी तो मैंने मौसी से कही है सौ रुपये महीने की किस्त कर ले।"

"सुन रे भगवान सिंह...सुन रे कुमार अभी मेरे घर में चून है। जा दिन नई होगा उस दिनां सौ क्या, पचास रुपये महीने की किस्त पे भी प्लाट बेचूंगी। तुम्हारे भाग में ई जमीन लताड़ना नई लिखा तो मैं बोल के क्या कर लूंगी?" कमला उठ पड़ी।

□

"हाय कुमार...कैसा है?" बिजेंद्र आते ही चहका।

"मज़े में, तू सुना, सिकन्दरा बाद से कब आया?" कुमार ने पूछा।

"दो दिन हो गए...भाई की शादी है अट्ठाईस तारीख की, तो सोचा कुमार से मिल आऊं और कार्ड भी दे आऊं। अब फटाफट तैयारी कर ले। पीतम्बर, सुनील, राम गोपाल भी चल रहे हैं।"

"ले इसमें क्या है, हम भी चल पड़ेंगे। बारात कितने बजे चलेगी और जाना कहाँ है?"

"कार्ड किस लिए दिया है, सारी जानकारी उसमें है। बारात जाएगी दीघौट।"

"दीघौट...बामनी खेड़े के पास?"

"अरे, तू जानता है दीघौट?"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"ले, मेरी पांचवी बोर्ड की परीक्षा का सैण्टर दीघौट ही तो था, जब पिता जी बामनी खेड़ा में थे।"

"ले फिर क्या है? अपनी फटफटिया सर्विस करा लेना, कहीं ऐसा न हो रास्ते में टांग उठा के खड़ी हो जाए।"

"उसकी चिन्ता तू क्यों करता है? कुल पैतीस कि.मी. ही तो है। चलना कितने बजे है?"

"देख, बारात तो जाएगी ढाई-तीन बजे, तीन टैक्टर-ट्राली हैं। दो जीप और पांच सात मोटर साइकिल। निकलेगी तो यहाँ बाइपास से ही तू तैयार रहना, मैं आ जाऊंगा और सुना यहाँ नया क्या किया?"

"लॉ में दाखिला लिया है।"

"ये ठीक रहेगा तेरे लिए...इस मामले में तो तू पहले से ही होशियार है।"

"वो तो ठीक है, पर ये सलाह शर्मा जीने दी थी।"

"कौन शर्मा...अरे वो अपना प्रोफेसर?"

"हाँ...वही।"

"क्या कह रहा था?"

"कह रहा था यहाँ जातीय समीकरण बहुत टेढ़े हैं। अगर तू एम.एल.ए. का टिकट युवा कांग्रेस कोटे से ले ले तो मिनिस्टर बन सकता है। कांग्रेस में मथुरा जिले का प्रतिनिधित्व नाम भर का है।"

"बौस...शर्मा कह तो ठीक रहा है। टिकट का क्या जुगाड़ है, इसका पता किया?"

"हाँ...मेरी कांग्रेस अध्यक्ष बलबीर से बात हुई। वो भी टिकट चाहता है पर कह रहा था बनिया-ब्राह्मण तो दलित को किसी कीमत पर नहीं आने देंगे। उल्टे अगर टिकट मिल भी गया तो भितरघात से भी नहीं चूकेंगे।"

"अगर ऐसी बात है तो बेटा...तेरी तो छुट्टी हो गयी समझ ले।"

"नहीं, ऐसी बात नहीं है। बलबीर ने कहा है कि मैं अलग-अलग अग्रवाल और पालीवाल से मिल लूं और उनसे कहूँ कि अगर वो मेरा समर्थन करें तो मैं उसका आदमी बन के काम करूंगा। उनकी भी आपस में लगती है। अग्रवाल नहीं चाहता कि बलबीर या पालीवाल को टिकट मिले। साथ ही पालीवाल सपने में भी पसंद नहीं करेगा कि बलबीर या अग्रवाल को टिकट मिले।"

"मैंने तो तेरे को पहले ही बता दिया है कि उन दोनों को टिकट नहीं मिलना चाहिए। अब तू बता तेरे अलावा बचा कौन? फिर तुझे पंजाबियों और युवकों का

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
भी समर्थन मिलेगा, मैं तुझे सारे दलित वोट दिलवाऊंगा। इसी तरह पालीवाल और अग्रवाल भी तेरा समर्थन करेंगे तो वोटों का समीकरण तेरे पक्ष में आसानी से आ जाएगा। उधर जाट और ठाकुरों के वोट कटना निश्चित है। क्योंकि उनके भी प्रतिनिधि किसी न किसी पार्टी का टिकट लेकर अड़ेंगे।''

बिजेन्द्र ने सिर खुजाया, ''ये सही है....बिल्लियों की लड़ाई में बन्दर की मौज लगेगी, वैसे तेरा जिला अध्यक्ष क्या कहता है?''

''उसने भला क्या कहना है? वो तो जिले की छः सीटों में से तीन युवा कांग्रेस के लिए माँग रहा है। इधर कोसी के कांग्रेस वाले अपनी गर्ज पे मेरे नाम का ही प्रस्ताव करने पर राजी हैं। वैसे कांग्रेस जिला अध्यक्ष तक यह बात पहुंच गयी है।''

''पिछली बार यहाँ से एम.पी. कौन लड़ा था? जरा उसका भी देख और बात करके रख, उसका भी रसूख यहाँ क्षेत्र में होगा।''

''अरे, वो तो ठाकुर जितेन्द्र सिंह हैं। उनके पिछले इलेक्शन में भी मैंने बहुत काम किया था। जब मथुरा गया तो उनकी कोठी पर गया था। उन्होंने स्वयं कहा था, कुमार, अपनी तैयारी रख मैं तेरे साथ हूँ। कोई भी बात हो मुझे बताना। उसने यह बात ऐसे समय में बिना सोचे-समझे तो नहीं कही होगी।''

''हाँ...यार इसका मतलब् है, जल्दी ही हमारा यार लखनऊ में दारुलशफा में बैठा होगा। बधाई...भाई अग्रिम बधाई।''

''धन्यवाद..पर तू सुना तेरी मिलट्री की ट्रेनिंग का क्या रहा।''

''वो तो कब की पूरी हो ली। बस अब पोस्टिंग का इन्तज़ार हो रहा है। वहीं हैदराबाद से प्राइवेट एम.ए. का फार्म भरा है। रविवार-रविवार को कैम्पस जाता हूँ, मजे करता हूँ।''

''वहाँ की कोई खांस बात?''

''वहाँ यार भाषा की प्रोब्लम है। वो लोग हिन्दी तो बोल हीं नहीं सकते, अपनी गिट-पिट करते हैं। अरे सुन, तुझे मजेदार बात बताऊं। वहाँ हमारी कक्षा की लड़कियों ने मेरा नाम पूछा तो उनसे मुंह से बिजेन्द्र निकल के नहीं दिया। मैंने उन्हें बताया मेरा निक नेम भी है, जीजा जी। अब वो जब देखो जीजा जी कहकर पुकारती रहती हैं।''

''और तू खुश होता है कि वो मेरी सालियां बन गयीं। साले लानत है तुझ पर। तुम जैसे बिना साली के जीजा होते हैं जो भाषा की घृणा को लोगों के मन से कम करने की बजाय बढ़ाते हैं।''

''बस....बस...अपनी नेतागिरी मुझ पे मत झाड़। मैं चलूं, अभी बहुत काम पड़े हैं।'' बिजेन्द्र अपना थैला सम्भाल कर चलता बना।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

□

शर्मा ने ट्रक खड़ा किया और कंडक्टर से कहा, ''रात भर गाड़ी चला के अब चार-छः घण्टा यहाँ सो के चलेंगे...तू फटा-फट तेल, पानी, हवा चैक कर।'' वह सीधा सतेन्द्र के ढाबे पर पहुंचा...

''चल भाई, दही-पराठा लगा दे...नाश्ता करके सोऊंगा...शाम को निकलना है।''

''आओ पण्डित जी...बैठो। ओए छोटू...मंजी अन्दर पा दे। उस्ताद जी ने अराम करना ऐ। होर सुणाओ पण्डित जी...'' सतेन्द्र शर्मा के तिलक को देखकर शुरु से ही उसे पण्डित जी कह कर बुलाता है।

''बस ठीक है...खुदा गारत करे मोटर बनाने वालों को, घर से बेघर कर दिया मोटर चलाने वालों को। हमने तो चौबीसों घंटे सफर में ही रहना है। किस्मत में यही लिखा के लाये हैं।''

''कहते तो ठीक हो उस्ताद जी, पर मेरे को कुछ बताओ? यहाँ गलत जगह ढाबा डाल लिया। गाहक ही नहीं लगता, बस दो-चार ट्रक रुक जाएं, तो रुक जाएं। छः महीने हो गाए, सारा पैसा मिट्टी हो गया।''

''हो गया के, तूने कर लिया...जब तुझे ढाबा खोलना था तो किसी चलते बाइपास पे खोलता। यहाँ जंगल में कहाँ आ मरा?''

''उस्ताद जी, कहते तो तुम ठीक हो, पर मैंने सोचा यहाँ कोई ढाबा नहीं है। पंजाबी ट्रक ज्यादा आते हैं तो बिक्री भी ज्यादा होगी। पंजाबी लोग तो खाने के शौकीन होते हैं। यहाँ तो बस चावल ही खाने में मिलता है।''

''बात तो तूने ठीक सोची। पर तेरे ग्रह उल्टे पड़ गए...यहाँ तो रात को ट्रकों का सफर होता है...न जाते टैम, न आते टैम कोई रुकता है। ड्रैवर लोगों ने तो खाने के टैम ही रुकना होता है।''

''तो उस्ताद जी, अब लागत लगा के पछता रहा हूँ। ये बताओ मेरे दिन कैसे सुधरेंगे?''

''दिन तो सुधर जाएंगे पर तेरे को कुछ जुगत करनी होगी।'' शर्मा के दिमाग में आइडिया घूम गया था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"जुगत क्या करूंगा, वहाँ पंजाब से दार जी के फोन आ रहे हैं। घर वापस आ जा। आप बताओ, सारा मिट्टी कर के किस मूं से वापस घर जाऊं?"

"ओह..हो... तो ये बात है, तू माँ-बाप का मन किलसा के यहाँ आया है। तूने सोचा नई, माँ-बाप की आत्मा किलसती है तो तुम्हें सुख कैसे मिलेगा?"

"ओ... न उस्ताद जी, ऐसे न कहो। मेरे को कोई तरकीब बताओ, माँ-बाप का मन मुझे क्यों किलसाना है?"

"तो सुन, तेरे पास जितना आटा पड़ा हैं गूंथ ले...दाल...सब्जी भी बना ले और गुरु का लंगर लगा दे। देखना शाम तक कोई अपने से आ के कहेगा...ओ सरदार जी ढाबा बेचना है तो मेरे को दे दो?"

"उस्ताद जी, ये हो जाएगा ना...पक्की बात, कभी इससे भी जाऊं...आजकल वैसे भी टोटा चल रहा है।"

"अरे पक्की, एक दम सोलह आने पक्की...न हो तो बर्तन...भांडे मेरे ट्रक के टूल में डाल दियो...हजार रुपये मैं तेरे को दे दूँगा।"

"बस हजार रुपये, दो-दो सौ रुपये के तो सटील के पतीले हैं। प्लेट, कटोरी, गिलास, चम्मच का तीस का सैट है, आप भी कमाल करते हो।"

"अरे, इसमें कमाल की क्या बात है। मैं ड्रैवरी छोड़ के क्या ढाबा चलाऊंगा? मैंने क्या करना है सामान का....मैंने तो बस तुझे टोटका बताया है। वहाँ कोसी बाइपास पे एक पण्डत ने ढाबे वाले को बताई थी, मैंने तेरे को बता दी। ये तो टोटका है, उसका चल गया था तेरा भी चल जाएगा। न चले तो हमने तो एक हजार में गारंटी ली है। हमें क्या करना है? माननी है मानो, न तो हम तो सोने जा रहे हैं?

शर्मा भीतर चारपाई पे जाकर लेट तो गया, पर नींद कोसों परे थी। बंगाल की लड़की...उसका ढाबा....दुल्हन बनना....सब कुछ उसे बेचैन किए दे रहा था। हे भगवान। इस साले सरदार को सदबुद्धि दे...ये ढाबा बंद कर दे। जै भगवती कन्या को दे हमसा पति और हमें कर लखपती। जो आज जुगाड़ बन गया, तो ब्याह के बाद सीधा तेरे मन्दिर आऊंगा पूरे एक किलो पेड़े चढ़ाऊंगा।

चार बजे उठा तो आवाज लगाई, "चाय बना दे यार....अब चलें।"

"उस्ताद जी, चाय कहाँ है? तुम तो कह के सोए थे, राशन का लंगर लगा दे। लंगर खतम करके मैंने भांडे, समान बोरी में डाल रखा है। मंजियां भी पावे खोल के लपेट दी हैं। अभी तक तो वाहे गुरु ने किसी को नहीं भेजा।" सतेन्द्र ने शर्मा को स्थिति ब्यान कर दी।

"गाहक नईं आया, तो डाल दे मेरे टूल बाक्स में, ओए बिल्टा...ये समान लाद

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
ले, "शर्मा ने कंडक्टर को आवाज लगाई। ले गिन ले पूरे हजार रुपये। आज अपनी जबान के पीछे हजार रुपये की चपत लग गई।" शर्मा ऊपर से बोला, अन्दर से तो वह भगवती को पेड़े चढ़ा रहा था।

"पण्डित जी, किसी का भला करा है न, देखना रब वी तुम्हारा भला करेगा। अब अगले टेशन तक तो मेरे को अपने ट्रक में ले के चलोगे न। कल तो मैंने जलन्धर पोंच जाना है।"

"ओ फिकर नौट...बैठ जा...यारों के लिए तो हम बचपन से बर्बाद होते आए है।" शर्मा की आवाज में खुशी और ज़िन्दा दिली नाच रही थी।

सतेन्द्र को उतारकर शर्मा ने अपना ट्रक सीधे अपने पड़ाव पर जा के रोका और लम्बा हॉर्न देकर सोतों को जगा दिया।

"लो खोलो ढाबा...उतारो सारा माल...फुल ढाबे का इतजाम और टंडीरा...बस भट्टी बननी है। मैं दाल खाली करके कल लौटूंगा, तुम मेरे लगन का जुगाड़ कर के रखना।" शर्मा पूरी अकड़ और अधिकार के साथ बोला।

उस परिवार में खुशी और सुख की लहर गहन अंधेरे में भी देखी जा सकती थी। वे अविश्वास से शर्मा, सामान और एक-दूसरे को देखते ही रह गए।

शर्मा दाल उतरवा कर लौटा तो दोपहर हो रही थी। वहाँ झोपड़ी पर पतंगी कागज की पन्नियां लटक रही थीं। आठ-दस स्त्री पुरुष वहाँ थे। मुंह से हूल ध्वनि कर और शंख बजा कर विवाह की साधारण रस्में कर के विदाई हो गयी।

□

कुमार घर लौट आया, पर हंसो का चोटी आगे कर, खींचने का प्रस्ताव आंखों के सामने उभरता चला गया।

"क्या हंसो को मुझसे प्यार है या फिर यह सहज पारिवारिक सदस्यों में किए जाने वाली ठिठोली भर है।"

"नहीं साधारण ठिठोली तो नहीं है, कहीं कुछ न कुछ कोमल-कोमल-सा मुझे भी बेचैन किए दे रहा है। क्या इसी को प्यार कहते हैं?"

कितनी मासूम-सी लग रही थी हंसो...मुझे चाहिए था...मज़ाक में ही सही उसकी चोटी अवश्य पकड़नी चाहिए थी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक बार फिर जाऊं, उससे मिल के उसके दिल का हाल तो पूछ कर देखूं. ..इसमें क्या बुराई है?

नहीं यार...ऐसा भी कहीं होता है क्या? वो तेरे बारे में क्या सोचेगी...उंगली पकड़ के पहुंचा पकड़ रहा है।

भले जो सोचे। मुझे उसके मन की थाह ज़रूर लेनी चाहिए, नहीं तो मन की ये बेचैनी कभी समाप्त नहीं होगी।

फिर सोचा कि घर पर मिलना तो ठीक नहीं होगा। उसके कॉलेज जाने के समय में ही मिल लूंगा...जैसे अचानक मुलाकात हो गयी हो।"

हंसों ने जब देखा, कुमार मोटर साइकिल लिए चौराहे पर खड़ा है तो पूछ लिया, "मेरे घर जा रहे थे क्या?"

"हाँ, जा तो रहा था, पर अब तुम मिल गयी हो तो घर जाने जरूरत ही नहीं बची..." कहकर कुमार मुस्कराया।

"अच्छा जी...कह तो ऐसे रहे हैं जैसे कोसी से चलकर मुझसे ही मिलने आये हैं।"

"क्यों, ऐसा नहीं हो सकता क्या...मैं हंसों से ही मिलने के लिए नहीं आ सकता क्या?"

"आ भी सकते हैं नहीं भी...तुम लड़कों के बारे में कुछ भी कहा नहीं जा सकता।"

"मुझे दुनिया जहान के लड़कों से कुछ लेना-देना नहीं है। मैं तो सिर्फ अपनी बात कर रहा था।"

अचानक हंसो का प्रश्न उभरा, "कुमार, आपकी कोई गर्ल फ्रेंड है?"

"हाँ है न...पर तूने क्यों पूछा, तुझे उससे मिलना हो तो मिलवा सकता हूँ?"

"न, कुछ नहीं वैसे ही पूछा, वो बहुत लक्की है।" हंसो की उदासी उसकी बातों में उतर आयी थी।

"हाँ, लक्की तो है ही, तभी तो ग्वालियर से मथुरा आ गयी और अपनी चोटी खींचने के लिए ज़िद करती है।"

"आपको पता है आप क्या कह रहे हैं? हर वक्त मज़ाक के मूड में रहने वाले भी इन बातों को मतलब जानते हैं।" हंसो की आखों में आंसू झिलमिला उठे।

"हंसो...मैं बिना सोचे-समझे कुछ नहीं कहता, करता...। जो कह दिया वह लास्ट और फाइनल होता है। इसका प्रमाण भी तुम्हें बहुत जल्दी मिल जाएगा।" कुमार ने कॉलेज के गेट पर हंसो को उतारा और वापस चल दिया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"प्रथम दृष्टया प्रेम..." स्वयं से कह कर कुमार मुस्कराया....सोच अपना कार्य तेज़ी-से करने लगी।

आंखों में ऐसा कुछ समा गया था कि कुमार को बेचैन किए हुए था। खाने-पीने...सोने-जागने का सारा क्रम बिगड़ गया। जिसका असर कुमार की सेहत पर पड़ा। उस पर टाइफाइड ने आकर घेर लिया। हर क्षण सोच-सोचकर कुमार उक्ता गया। फिर अपने पिता जी से ही सीधे बात कर ली।

"पापा जी...मुझे हंसो से शादी करनी है।"

"तेरा...कुछ प्यार-व्यार का चक्कर है क्या।"

"नहीं पापा जी, ऐसा तो कुछ नहीं है। मैं एक दिन उनके घर गया था...मुझे वो अच्छी लगी...इसलिए आपसे कह दिया।"

"बेटा, तू अब पूरी तरह से खुदमुख्त्यार हो गया है। अपनी शादी के फैसले भी अब तू खुद करेगा?" देवी दयाल क्रोधित हो उठे।

"पापा जी, मैंने सिर्फ आपको अपनी पसंद बताई है। मैं कसम खा के कहता हूँ कि मेरा कोई प्रेम का चक्कर नहीं है। आप खुद देखो, सुबह सीधा कॉलेज और दस बजे वापसी। कब और कहाँ घूमूंगा और आवारागर्दी करूंगा। महीने दो महीने में यूथ कांग्रेस की बैठक में जाता हूँ, वो भी रविवार को।"

"मुझे तू सफाइयां तो दे मत कुमार, अब तेरे लिए तनेजा के पांव तो जाकर पकड़ने से रहा।"

कुमार रो पड़ा...मैंने कहा है क्या, आप तनेजा अंकल के पांव पकड़ो। आप, जैसे ठीक लगे, उनसे बात कर लो। इतना भर ही तो कहा है।"

"देख कुमार, रिश्ता अगर तनेजा की ओर से आएगा तो मुझे कोई ऐतराज नहीं है...मैं हाँ कर दूँगा। पर लड़के वाला होकर लड़की वालों के पास गिड़गिड़ाने तो कभी नहीं जाऊंगा।"

"पापा जी...अभी भी यदि लड़की वाला लड़के वाला की ऐंठ रखने और सोचने का समय है तो...आप भी नोटकर लो, मैं हंसो से कोर्ट मैरिज कर लूंगा। रोक लेना जिसने रोकना है।"

"बेटा, वो तो और भी अच्छा होगा, तू ऐसा कर, कोर्ट मैरिज ही कर ला... मुझे हंसों मंजूर है...पर तनेजा के आगे झुकना मुझे मंजूर नहीं है।"

"पापा जी, तनेजा अंकल आपके दोस्त हैं...आप लोग एक साथ रहे भी हैं। अब सिर्फ लड़के वाला होने के दंभ के कारण अपने बेटे की खुशी को भी दरकिनार करने पर आमादा है।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"देख बेटा...तू इसे दंभ कह...ज़िद कह या जो मर्जी कह, तेरी मर्ज़ी, पर इस शादी के लिए तनेजा को ही मुझसे कहना पड़ेगा। यह मेरा अन्तिम फैसला है।"

□

दोपहर दो बजे ही बिजेन्द्र आ गया, "कुमार तैयार है न?"

"ओह...यस...रेडी, चलें क्या?"

"हाँ...बस...अभी चलते हैं, एक आध ट्राली आ लेने दे।"

पहली ट्राली के साथ ही, कुमार और बिजेन्द्र भी चल पड़े। पौने घंटे में दीघौट पहुंच चुके थे। जनमासे में शर्बत, पकौड़े और मिष्ठान से स्वागत हुआ।

"चल, गांव देखकर आते हैं। सुनील बोला।"

"चलो रे...तफरी कर आए। बिजेन्द्र बोला। आठ-दस लड़के चल पड़े।"

"चलो रे या घर में घुस लेओ...या घर में कोई मर्द मानस न हैं।" राम गोपाल जोर से बोलता है।

अन्दर से लौटती आवाज आती है, "हम्बै...घुस लेऔ....और ये कौन बैठो है? तुम्हारौ फूफा लठैत।" सामने चारपाई पर बैठा बुर्जुग अपनी लाठी जमीन पर फटकारते हुए कहता है।

"चलो रे चलो, कोई और घर देखो।" सुनील कहता है। बाकी लड़के ज़ोर से हंसते हैं।

कुमार, बिजेन्द्र से पूछता है। ये क्या बेहूदगी है? क्यों किसी के घर घुस रहे थे और उस बुजुर्ग ने क्या कहा था?"

"अरे कुछ नहीं, ये तो बस मजाक था, कि इस घर में घुस लो, पुरुष नहीं हैं सिर्फ स्त्रियां हैं। बस, अन्दर से जो सुन रहा था, उसने गुस्से से जवाब भी दिया। तूने सुना नहीं उसने क्या कहा था?"

"सुना था, वो कह रहा था...तुम्हारा फूफा लठैत। पर इसका क्या मतलब, कुमार, ने पूछा।"

"अरे, वो गाली दे रहा था...फूफा मतलब तुम्हारे बाप की बहिन उसके घर में है...स्त्री और पत्नी रूप में।" "

पर फूफा तो रिश्ता है यार।" कुमार उतना नहीं जानता था।

"अरे, गांवों में इसी तरह चलता है। सीधे सीधे माँ, बहिन, बेटी की गाली

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उनके अंगो के नामों और क्रिया विशेषणों के साथ। मामा भी गाली हैं मतलब तेरी बहिन मेरे बाप के पास, जैसे साला गाली है। अभी देखता चल, इसीलिए तो तुझे लेकर आया था। गांव के मौज मेले भी देख, मेरे शहरी टट्टू।''

तब तक झंडू ने आवाज लगाई, ''अरे, आ जाओ...रे ये छोरी कब ते तुम्हारे इन्तजार में है।'' सामने मकान की छत पर पन्द्रह बीस हर उम्र की लड़कियां थीं।

बिजेन्द्र लपक के पहुंचा, ''अरी, रास्ता तौ बताओ तुम तक आवै कौ...हम या गाम ते अनजान हैं।''

''अपने रस्ते चले चलौ...चुपचाप छोरीन नै देख के राल मत टपकाऔ।'' ऊपर से किसी लड़की की आवाज लगाई।

सुनील जल्दी से बोला, ''हाय मर जाऊ गुड़ खा के, आवाज इतनी मीठी है तो छोरी कितनी मीठी होयगी। रस्तो न पतौ तो या दीवाल तेई चढ़ जाऊं।'' सुनील दीवार पर चढ़ने की कोशिश करने लगा। जबकि उस दीवार से किसी भी कीमत पर छत तक नहीं पहुंचा जा सकता था।

ऊपर से लड़की ने जवाब दिया, ''दारी के ऊपर मत अइयौ, न तो ऊपर ते मूत दऊंगी।''

''मूत दै...हम धार पकड़ के चढ़ जांगे।'' सुनील अपने दीवार चढ़ने के प्रयास में लगा रहा तो ऊपर से एक दो लड़कियों ने थूकना शुरु कर दिया। जो सीधा सुनील के चेहरे पर पड़ा रहा था।

इसी तरह अश्लील फिकरों के साथ गांव की घुमाई हुई। सायं पांच बजे कुंए पर चल पड़े, अब सिर्फ पांच अंतरंग मित्र ही थे।

बिजेन्द्र ने कुमार से कहा, ''सामने पण्डितों का कुंआ है। वहाँ अगर कोई बैठा हो तो राम-राम करियो और पूछियो, यहाँ कोई बामहनों का कुआं, है। हम गूर्जरों की बारात में आए हैं...हम शर्मा हैं। अगर गोत पूछे तो बताना गौण ब्राह्मण हैं। कहकर वह जोर से हंसा।

''अरे, जब हमें पता है ब्राह्मणों का कुआं है, तो पूछने की क्या ज़रूरत है और हममें से तो कोई भी ब्राह्मण नहीं है।''

ब्राह्मण नहीं है तभी तो नाटक करना पड़ेगा। उसे पता चल गया कि हम गूर्जर है, तो लाठी चल जाएंगीं।

''तो रहने दो न यार, हमें क्या ज़रूरत है जाने की। कुमार ने कहा।

''अबे, मैं मिलेट्री की वाइट रम लाया हूँ। यहीं दिशा जंगल जाकर आराम से मुंह हाथ धोकर फ्रेश होंगे, फिर चलेंगे बारात में।'' बिजेन्द्र ने समझाया।

''यार कोई झमेला न हो जाए...मुझे इनसे डर लगता है।'' कुमार ने कहा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"तभी तो तुझे आगे कर रहे हैं।" तू शकल से ही उच्चकुल का ब्राह्मण लगता है। बिजेन्द्र ने कहकहा लगाया।

"थोड़ी-सी देर में कुंए पर पहुंचे तो वहाँ एक बुजुर्ग थे। 'ताऊ राम-राम'... प्रायः सभी ने कहा।

"राम....राम बेटा....।"

"ताऊ, इस गांव में कोई ब्राह्मणों का कुआं है क्या? दरअसल हम लोग गूर्जरों की बारात में आये हैं। सोचा थोड़ा फ्रेश हो लें।"

"अच्छा...अच्छा...तुम ब्राह्मण हो..सही जगह पे आये हो, खूब मौज करौ। अब मैं तो घर कूं चलूं।" कहकर वो बुजुर्ग अपनी लाठी लेकर चल दिये।

"सुबह विदा के साथ हमारी मोटर साइकिल चली तो हम बारात से काफी पहले ही गांव पहुंच गए। हमें देखते ही वहाँ गोबर पाथती स्त्रियों ने पूछा बारात कहा है?"

"अभी पीछे है...हम तो मोटर साइकिल तेज चलाकर जल्दी आ गए।" कुमार ने कहाँ

उन्हें सड़क से गांव की राह पर ही नहीं उतरने दिया गया। साथ ही गालिया।...लिंग धारियो भागो....बिना योनि गांव में नहीं आने दिया जाएगा, (उन्होंने देसी नामों का प्रयोग किया था)।

कुमार को जिज्ञासा है अपनी माएं भी इस तरह गालियां दे रही हैं, तो बिजेन्द्र ने बताया।

"बारात गयी थी बहूँ लाने, बहूँ के बिना बारात वापस आ जाए या कुछ लोग वापस आ जाएं तो गांव भर के लिए अपशकुन होता है इसलिए हमें भगा दिया गया।"

□

सर्दिया। शुरु हो गयीं तो गन्ने का लदान भी शुरु हो गया। गांवों से चीनी मिल, छाता तक ट्रैक्टर ट्राली, लोकल ट्रक सभी की पौ बारह हैं। जितने चक्कर लगा सकते हो लगाओ, काम की कमी नहीं।

सरदार प्रीतम सिंह बदहवास-सा दौड़ा आया। कुमार, तेरी मोटर साइकिल में पेट्रोल है?"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
''है...चाचा, टंकी फुल, क्या करना है?''

''जरा दुकान बढ़ाकर, मेरे साथ छाता चल।'' प्रीतम सिंह की आवाज जैसे किसी गहरे गड्ढ़े से निकल कर आ रही थी।

''चाचा...हुआ क्या?''

''बस, जे ही मत पूछ, दुकान में ताला लगा और मोटर साइकिल स्टार्ट कर, रस्ते में सब बताता हूँ।''

''ये ले चाचा...ताले में कितनी देर लगती है...और बैठ पीछे, हाँ...अब बता क्या हुआ? कुमार ने मोटर साइकिल को रेस देते हुए पूछा।''

''ओ जार (यार) दिलबाग से एक्सीडेंट हो गया।''

''कहाँ...कितना नुकसान हुआ ट्रक का?''

''नुकसान तो कुछ नहीं हुआ, एक्सीडेंट छाता में हुआ है। चमारों के मोहल्ले के पास।''

''चाचा...कैसी बातें करता है, एक्सीडेंट भी हुआ और नुकसान भी नहीं हुआ। फिर हड़बड़ी में भागा भी जा रहा है, घबराया हुआ भी है। हुआ क्या, बस यही नहीं बता रहा।''

''ओ यार...चमारों का बच्चा ट्रक के नीचे आ के मर गया।''

''मर गया...चमारों का बच्चा....चाचा, क्या कह रहा है?'' कुमार से मोटर साइकिल में ब्रेक लग गए।

''घबरा गया न तू भी....इसलिए तुझे नहीं बता रहा था। अब मोटर साइकिल आराम से चला, कहीं तू भी एक्सीडेंट मत मार दियो। तुझे सारी बात समझाता हूँ।''

''ओ चाचा, एक बच्चा जान से गया और तू इतनी सरलता से कैसे ले सकता है?''

''जिसने जाना था, चला गया, उसके पीछे क्या दस और जाएंगे?''

''कितनी उम्र थी बच्चे की?''

''आठ-दस साल।''

''दिलबाग कहाँ है...पुलिस ने उसे अरेस्ट कर लिया क्या।?''

''नईं यार, दिलबाग वहाँ से भाग गया, किसी दुकान से फोन किया है। ट्रक वहीं खड़ा है, पुलिस आ गयी है। वहाँ मोहल्ला इकट्ठा हो गया है। कहीं गुस्से में ट्रक को आग न लगा दें या दिलबाग को पहचान कर मार पीट न कर डालें।''

''चाचा, जब पुलिस आ गयी है तो वो अपने आप संभाल लेगी। लॉ एण्ड आर्डर बनाए रखना उसका काम है।''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"ओ...नेता जी, जे लॉ एण्ड आडर की भैण को....तेरे को इस वास्ते ले के जा रहा हूँ, के वहाँ जा के पुलिस से मिल के बच्चे के रिश्तेदारों को समझाना है। ले दे के मामला रफा दफा करना है। पुलिस केस बिलकुल नईं बनने देना।"

"चाचा, जिसका जिगर का टुकड़ा गया वो ले दे के क्या मानेगा, उल्टा हमसे लड़ने आ जाएगा।"

"ऐसा कुछ नहीं होगा। तू एक काम कर अपनी जबान बंद कर थोड़ी देर वास्ते। मेरी कुछ बातें पल्ले बांध के चल, सब ठीक हो जाएगा।"

"बोल...चाचा।"

"देख, वहाँ पहुंच कर सीधा पुलिस का जो बड़ा अफसर हो, चाहे हवलदार चाहे ए.एस.आई., से हाथ मिला के मिलइयो, उसे बताइयो मैं जूथ कांग्रेस का प्रधान हूँ। फिर पूछियो क्या बात है...क्या हुआ...कैसे हुआ...? वो कुछ बोले उसे बोलने दियो, बीच में न टोकियो न बोलियो। जब वो सारी बकवास कर चुके तो पूछियो लड़के का बाप कौन है?

जैसे ही वो सामने आए, उसे पड़ जाइयो। कहिओ, सरकार की सुनते नईं हो. ..बच्चे पैदा किए जाते हो...काम-धाम कुछ करते नईं हो। तुम लोग बच्चों को ट्रक-ट्राली से गन्ना खींचने से मना क्यों नहीं करते? एक गन्ने के लिए मासूम बच्चों को भेज देते हो। तुम्हें शर्म आनी चाहिए और ये बच्चे बनाने की फैक्ट्री बन्द करो।"

"उससे पूछ भी लियो...तेरे कितने बच्चे हैं? दो या दो से ज्यादा बताए तो फौरन कहिओ, चल नसबंदी करा।"

"चाचा, एक आदमी का बच्चा मर गया...उसका बाप बेचारा गम में डूबा होगा। उसे नसबंदी के लिए कैसे कह दूँ?"

"अबे उल्लू के पट्ठे, तेरे को जे नईं कह रहा के वहीं से उसे पकड़ के हस्पताल ले जा के कटवा दे। खाली उसे धमकाना है। नसबंदी की सुन के वो घबरा जाएगा उसे अपनी पड़ जाएगी, फिर वो तेरी सारी बात मानता जाएगा।"

जब वो थोड़ा नरम पड़े तो तू भी नरम पड़ जाइयो, उसके कंधे पे हाथ जरूर रखियो और कहियो...उस बच्चे का तुम्हारे घर से बस इतना ही लेना-देना था। पिछले जनम के जितने दाने बाकी थे, खाने आया था, दाने पूरे करके चला गया। चलो अब बच्चे का संस्कार करो...बेचारे की मौत के बाद मिट्टी तो खराब मत करो...चलो अब बाप वाला धरम पूरा करो। फिर धीरे से उसके कान में कह दियो, ट्रक का मालिक सरदार आया हुआ है मैं तेरे को उससे अच्छे पैसे दिलवाता हूँ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बाकी मैं तो साथ ही हूँ। जैसा होगा उस टैम फैसला कर लेंगे। जितनी बातें बताई हैं भूलियो मत...बस, इसी तरह की बात करेगा तो बात बन जाएगी। जे हमारे रोज के काम हैं। कहीं न कहीं रोज कोई मरा पड़ा होता है।''

घटना स्थल पर बड़ा करुण दृश्य था। सड़क पर ही बच्चे की लाश पड़ी थी खून बहकर सड़क और मिट्‌टी पर रुका हुआ था। लाश को किसी फटी गंदी चुनरी से ढका हुआ था।

लाश के पास पांच-सात औरतें रो रही थीं। एक औरत छाती पीट कर, मेरौ लाल...मेरौ बाबू कह कर रो रही थी। शायद वह बच्चे की माँ थी।

सैकड़ों लोग इधर-उधर बातें कर रहे थे। अधनंगे बच्चे, आदमी, औरतें इधर उधर छितरे हुए थे। एक हवलदार, एक सिपाही के साथ वहाँ चारपाई पर बैठा था।

कुमार सीधे हवलदार के पास गया और हाथ मिलाया...प्रीतम सिंह के कहे अनुसार बोलता चला गया...सारी की सारी बातें वैसे ही घटित होती चली गयीं जैसा कि सरदार, कुमार को रास्ते में कह कर लाया था।

बीच-बीच में बच्चे की माँ का करुणा भरा स्वर उभरता, ''उठ रे लाला, तेरे लिया बाजरे की खीचरी बनाऊं'' फिर वह पछाड़े खाने लगती और औरतें उसे संभालने में लग जातीं।

ले देकर सौदा पन्द्रह सौ रुपये में तय पाया गया। बच्चे का संस्कार कर दिया तो सरदार ने पन्द्रह सौ रुपये लड़के के पिता को थमा दिए।

सरदार ने कुमार से कहा, ''वापसी पे अगली चुंगी पे दिलबाग खड़ा है उसे लेता जाइयो। मैं ट्रक मिल में लेकर जा रहा हूँ।'' कह कर वह ड्राइवर सीट पर जा बैठा।

पुलिस वाला दौड़ता आया, ''सरदार जी, मेरा हिस्सा।''

''ओए, तेरा कौन-सा हिस्सा? तेरे सामने तो पन्द्रह-सौ में बात हुई। पन्द्रह सौ मैंने गिन के दे दिए, अब जो लेना है उससे ले। मैं गरीब ट्रक वाला किस-किस को दूँ...कहाँ से दूँ...मैं पहले ही कर्जे में डूबा पड़ा हूँ।''

सरदार ट्रक लेकर चल गया। कुमार ने मोटर साइकिल चुंगी के पास रोकी तो...दिलबाग न जाने कहाँ से आकर पीछे बैठ गया। आते ही बोला, ''कितने में सौदा हुआ?''

''पन्द्रह सौ...'' कुमार धीरे से बोला।

''चल कोई नईं...केस तो नईं बना ना। साले, बच्चे पैदा करके सड़कों पे छोड़ देते हैं मरने के लिए, भुगतना हमें पड़ता है।''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

□

बारिश बहुत जोरों से पड़ रही थी जैसे आसमान फट कर ही रहेगा। बाइपास पर एक दम मरी पड़ गयी...सब अपनी अपनी दुकानों में सीमित होकर रह गए।

भीगता हुआ शर्मा कुमार मोटर्स में दाखिल हुआ। साथ ही अपने पीछे आवाज लगाई, "आजा...आजा...चिन्ता मत कर ये अपना भाई है।"

कुमार ने देखा, एक पतली-सी आबनूसी रंग वाली लड़की पूरी भीगती हुई चली आ रही थी। उसके पूरे शरीर से पानी चुआं रहा था। कुमार ने थोड़ा शंकित नजरों से शर्मा को देखा तो वो मुस्कराया।

"अरे, चिन्ता की कोई बात ना है...तेरी भाभी है, विदा करा के लाया हूँ।" शर्मा ने ट्रक सफाई वाली धोती दुकान से उठा के उसे दी..., ले, पौंछ ले।"

कुमार ने अपनेपन से कहा, अरे तू तो पूरी भीगती हुई आ रही है?"

"भीगी हुई..." वह बोली। साथ ही उसने दांत निपोर दिये। धोती लेकर शरीर का पानी सोखने लगी।

कुमार ने लड़की का जायजा लिया...बाइस-चौबीस वर्ष की लड़की होगी... गरीबी और बेबसी जैसे उसके चेहरे पर चिपकी पड़ी थी। एक नज़र में उसे कोई भी भिखारिन समझने की भूल सहज ही कर सकता था।

बस नयी धोती ब्लाउज और कलाइयों में साखा-पोला के साथ कांच की चूड़िया। ऐसी प्रतीत हो रही थी जैसे किसी बुत को पहना दी गयी हैं।

"अरे...शर्मा...ये है वो छोरी जिसकी तू बात कर रहा था?" कुमार के मुंह से बेसाख्ता निकला।

"हां...यार अभी तो बताया, तेरी भाभी है, और कैसे बताऊं?"

"अबे, तो तुझे इतने झमेले और नौटंकी के बाद यही मिली थी ब्याह करने को।"

"देख यार कुमार, तू बापन वाली बात तो कर मत...क्या कमी है इसमें? इसमें क्या नई है जो लुगाईन में होना चाहिए...भरी-पूरी छोरी है यार।"

कुमार को अपनी बेवकूफी का अहसास हुआ। यह तो शर्मा का व्यक्तिगत मसला है नितान्त व्यक्तिगत मसला। कुमार ने सोचा, शायद किसी ने ऐसे जोड़े को देखकर ही कहा होगा दिल लगा गधी से तो परी क्या चीज़ है? पर कुमार अपनी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
पूरी सोच को दबाकर शर्मा से बोला, "अरे तो इसे सीधे घर ले जाता, यहाँ क्यों ले आया?"

"देख कुमार...यहाँ यों ले आया के जब मैं इसे बिदा करा के ला रहा था तो रास्ते में देखा ट्रकों की पूरी कानवाय लुटी पड़ी हैं। मैंने भी लाला को फोन कर दिया। लाला तेरे भाड़े के सात हजार बदमाशों ने लूट लिये हैं। अब यहाँ रिपोर्ट लिखाने के लिए रुकूं के आ जाऊं। लाल ने कही और एक दिन खराब करेगा....आ ज़ा।"

"अरे...शर्मा, तू साले घाट-घाट का पानी पीकर जरा ज्यादा ही सियाना नहीं हो गया?"

"यार कुमार सुन....मैं नहीं चाहता, लाला को पता चले मैं ब्याह कर के आया हूँ। वैसे तो वो शक नहीं करेगा...गाड़ी लुटने की खबर अखबार में भी छपी है। अखबार मैं संग ले आया हूँ। गाड़ी में कोयला लदा है। इसे टाल पे खलने को छोड़ के घर जाऊंगा। तब तक इसे यहीं बैठा के रख।"

शर्मा जब अपनी बहू को घर छोड़ के लौटा तो नया झमेला कुमार को आ बताया।

"घर में जाते खैम नया पमाड़ा खड़ा हो गया। हमारे मइया बाप अड़ गए, पता नईं कौन जात-कुजात को उठा लाया। हम बामहन हैं...ऐसे मरे-गिरे न हैं, ये या घर में नईं रह सकती।"

"अरे...जात कुजात की बात कहाँ से ले जाए।"

"कुमार, वो छोड़। हमारे माँ-बाप तो चाहवै ही न हे के मेरी सादी हो...बिनकूं जो पैसा मोते मिलैं रुक जायेंगे। मोय पतै ही, मैंनेऊ कह दई...के तुम पक्के बाह्मण हो ना।"

"वो बोले...जा में कछु शक है का?"

हमने कहीं...तो मैं ऊ पक्कौं बाह्मण हूँ।

बिननै कहीं...तू हमारो बेटा है सो तू पक्कौ बाह्मण है।

बस हमने दांव मार दियौ...तो ई हमारी घरवारी है...हम लगन पढ़ा के लाए है। अब हमारे संग सोय कै ये ऊ पक्की बाह्मणी है गयी है।

पिता जी ने नैक देर ऐन-टैन करी तो हमने पांच हजार रुपइया निकार कै बाप के मौह पै मारे...लेओ तुम्हारे समधी ने दिये हैं।

नोट देख कै तो पिता जी लपक कै परे...सबरो बाहमन पनो घुस गयौ। मैंने ऊपर ते कह दयी....तुम्हैं हर महीना पैसा पहले की तरियां मिलिंगे।

"अबे तो शर्मा के बच्चे...जब इतनी बात हो रही थी तो वापस ले आता बहू को।" कुमार ने कहा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"ले, ये कौन-सी समझदारी होती, उसे ले के कहाँ जाता?"

"अबे जाता कहाँ, जो पांच हजार अपने बाप को दिए....उन्हें अपने पास रखता। यहाँ ऊपर प्रीतम सिंह का कमरा किराए पर ले लेता। सौ रुपये महीने में तेरा काम चल जाता।"

"कुमार...पर तुझे ये पता नहीं है के रांड तो रंडापौ काट ले, पर रंडुआ काटन दैं तब न। यहाँ कमरा पै रखूं तो ये बाइपास के लुक्के लौंडे सब दिना मेरे घर में घुसे मिलिंगे।"

"पर घर में भी यह सब कब तक चलेगा, जब तू ट्रक ले के जाएगा तो तेरे पीछे घरवाले तेरी बीबी को तंग नहीं करेंगे....यह तूने सोचा है क्या?"

"हाँ....सोचा है तभी तो नाक पे पांच हजार मार के आया हूँ। हर महीना खर्च दूँगा तो सब लैन पै रहेंगे...न तो उनको भी पता है, लौंडा बहू को ले के फुर्र हो जाएगा। वैसे भी अभी ताजा ताजा मामला है। बखत के साथ कहीं एक-दो कमरे की जगह ले के छत छा लूंगा...तब की तब देखी जाएगी।" शर्मा आश्वस्त सा बोला, उसकी आवाज़ में गजब का आत्मविश्वास था।

□

सूरज आज उदास था, नहीं तो सुबह से उसकी दो चार से तो ऐन-टैन हो लेनी थी। सबसे पहले चुन्नी ने ही उसका हवाला लिया।

"सूरज....कौन मर गया?"

"मरा साले तेरा बाप...।" सूरज जूती उतारकर चुन्नी को मारने दौड़ा पर तब तक चुन्नी कल्टी हो लिया। सूरज तो रो ही पड़ा, "एक तो साले हम घर से वैसे ही दुखी हैं, उस पर चुन्नी साले को अपना हरामीपन दिखाना जरूरी है।"

इस तरह सूरज को रोते देख सभी उसके पास गए, "या तो रांड रोएगी नहीं या पैं-पैं ही करेगी। अबे हुआ क्या, ये तो बता?"

"कुछ नहीं यार, मेरा लौंडा कल बीमार हो गया।"

"अरे, तो कोई बात नहीं, डॉक्टर को दिखा दे ठीक हो जाएगा, वैसे हुआ क्या उसे?"

"उसे हाय लग गई।"

"अबे, किसकी हाय लग गई?"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"एक गरीब किसान की।"

"गरीब किसान कहाँ से तेरे लौंडे को हाय मारने आ गया?"

"अरे, कल चौअन्नी भी नहीं थी तो मैंने सोची मजमे वाले की फाड़ करा दूँ, वो दो रुपये देगा।"

"कैसी फाड़?" चुन्नी तब तक वापस आ गया था।

"अरे, ये जो मजमा लगा के कपड़ा नीलाम करते हैं। वो किसी को फाड़ के लिए खड़ा कर देते हैं कि वो बोली बढ़ाता रहे। जब माल बेचना होता है दोनों हाथ ऊपर कर के पूछते हैं और कोई बोली। इसका मतलब होता है अब फाड़ वाले ने बोली नहीं बढ़ानी। बस, वो दो आखरी बोली वालों को माल चेप देता है।

जब उसने उन्तालीस और चालीस रुपये में माल चेपा तो एक गरीब किसान फंस गया। वो बहुत रोया कि वो घरवाली की दवा के लिए पैसे लाया था...कपड़ा उसे नहीं लेना, उसने तो रुमाल इनाम में पाने के लांलच में बोली लगाई थी।

मैं दो रुपये फाड़ के लेकर घर पहुंचा तो बीबी ने बताया छोटे को अभी-अभी बुखार हुआ है। मैंने हाथ लगा के देखा। छोरा भट्टी हो रहा था। डॉक्टर के लेकर गया। डॉक्टर ने दो रुपये रखवा लिए। छोरे का बुखार आज भी नहीं उतरा, साली जान सांसत में आ रही है। पता नहीं क्या होगा?"

"अरे उठ...मुंह धो ले। छोरे को कुछ नहीं होगा...आज क्या है। जुम्मा न.. .मैं जुम्मे की नमाज पढ़ने जाऊंगा. तो अल्ला मियां से दुआ करूंगा। तू चिन्ता मत कर।"

शाम को गोपाल पनवाड़ी के खोके के आगे पूरी मजलिस बैठी भूत, प्रेत, आत्मा, ऊपरी हवा, चुड़ैल, डायन सबके अपने-अपने अनुभव, कुछ सुने हुए कुछ काल्पनिक। पर सभी के ओठों पर रहस्यमय खुसपुस, डरे चेहरों के साथ प्रामाणिकता के लिए लगी कुमार की गुहार। कुमार दुकान पर नहीं था।

आधे घंटे बाद आया तो, गोपाल ने आते ही टोका।

"अरे, कहाँ चला गया था, हमने सारे कुंए-पोखरों में बांस डलवा दिए...बस थाने में गुमशुदगी की रिपार्ट लिखाने ही जा रहे थे।"

"ऐसी कौन-सी आफत आ गयी थी शर्मा, मैं कह कर तो गया था कि रोटी खा कर अभी आ रहा हूँ।"

"आफत तो बड़ी लम्बी-चौड़ी है। पहले ये बता तुझे भूत-प्रेत में विश्वास है?" पप्पी बोला।

"न...भूत-प्रेत नाम की कोई चीज नहीं होती...इसमें विश्वास होना न होना क्या?"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"लो...इनकी सुनो...कुछ होता ही नहीं है तो लोग ऐसे ही परेशान हुए डोलते हैं। चुन्नी ने प्रश्न कर दिया?"

"अरे, ये सब दिमागी बीमारियां हैं। अनपढ़ लोगों को ऊपरी हवा कह कर ये झाड़ने वाले बेवकूफ बनाते हैं।" कुमार ने विश्वास से कहा।

"अरे, मेरी भाभी को ऊपरी हवा है। जब वो घेरती है तो भाभी दो-दो, तीन-तीन लोगों के काबू नहीं आती...ऊलजलूल बोलती है। उसकी आवाज तक तो मर्दानी हो जाती है...ये बीमारी है, बीमारी है तो पीर जी के मजार का पढ़ा हुआ पानी पिलाने से ठीक क्यों हो जाती है?" धरम ने अपना अनुभव बताया।

"हाँ...वो बीमार है उसका इलाज अगर अच्छे डॉक्टर से कराओ तो वो ठीक हो जाएगी। जरूर उसे मिर्गी जैसी बीमारी होगी।" कुमार ने कहा।

"अच्छा, तुझे मालूम है, खेत में जो हल पड़ा होता है अगर शाम को उसके पास जाकर मूतो तो पलटवार करता है। कई बार तो आदमी ठौर मर जाता है।" चावला ने बताया।

"अरे चावला, तू तो पढ़ा-लिखा है, तू भी इन बातों में विश्वास करता है?" कुमार को आश्चर्य हुआ।

"अरे, पढ़े-लिखे होने का क्या मतलब है कि काले को काला मत कहो...तू बता न, खेत का हल क्यों वार करता है? मैं और मेरा भाई गए थे खेत में, मैंने भाई को मना भी किया था पर वो नही माना...वो हल पे मूतने लगा। हल धाड़ से उसके ऊपर आ गिरा...वो भाग भी नहीं सका। वो तो बाँह की हड्डी टूटने में गुजर गयी, नहीं तो जान ही जानी थी। हल ने नासमझ जान के उसे माफ कर दिया।" चावला अपने व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर बोल रहा था।

"मेरे भाई, हल कोई इनसान थोड़ी होता है जो उसके बुद्धि होती है। न वो किसी पर वार कर सकता है, न किसी को माफ कर सकता है।" कुमार ने कहा।

"अरे, तो क्या चावला झूठ बोल रहा है? उसके साथ गुजरी है...उसके भाई की बांह टूट गयी...तू बता ये सब कैसे हुआ या तू ये कहेगा कि कुछ हुआ ही नहीं बांह भी नहीं टूटी.... बता न?" गोपाल उत्तेजित हो उठा।

"गोपाल, तेरे घर तो किसानी भी होती है। तुझे तो पता है हल के नीचे जो फाल लगती है, वहाँ की लकड़ी कितनी जरूरी होती है। जुताई के समय हल को तो खेत में छोड़कर आना होता है। कोई [illegible] न ले जाए इसलिए लोगों ने यह भ्रम फैला रखा है। जिसके डर से फाल की चोरी न हो।" कुमार ने बताया।

"अच्छा जी...वो तो भ्रम फैला रखा है चलो, मान लिया। पर चावला के भाई

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
पर हल ने वार किया वो क्यों?'' सूरज जिज्ञासु हो रहा था।

''अरे, हल तो जुते खेत में ही खड़ा रहता है न, उसका फाल मिट्टी में फंसा होता है। वहाँ मूतोगे तो मिट्टी बैठ जाएगी और फल असंतुलित होकर गिर पड़ेगा। वो इस ओर या उस ओर कहीं भी गिर सकता है। पर जिस ओर से मूता गया उस ओर गिरने की संभावना ज्यादा होती है क्योंकि मिट्टी तो उस ओर की पहले बैठती है। बस...हल गिरा तो हाथ पर चोट लगा गयी। हल बेचारे का कोई लेना-देना नहीं था।'' कहकर कुमार हंसा।

''देखना, एक दिन कुमार मरेगा। ये ऐसी हंसी उड़ाता है किसी दिन किसी आत्मा ने सुन लिया तो ऐसा पछाड़ के मारेगी कि याद रखेगा।'' धरम ने अफसोस जताया।

गोपाल बोला, ''एक बार मेरे काका खेत से घर आ रहे थे। रास्ते में एक बकरी का बच्चा में-में कर रहा था। काका ने उसे उठा लिया के रेवड़ में से बिछड़ गया होगा। बस जी वो तो अपना आकार बढ़ाने लगा। उसकी टांगे लम्बी होती-होती जमीन छूने लगीं। काका समझ गया, उछाया है। वो बैल गाड़ी के पहियों के बीच की जगह पर ही चलता रहा काका को पता था उछाया बैलगाड़ी के पहियों से बनी बीच की जगह को पार नहीं कर सकता, उसे स्राप होता है।

''बस ज़ी, फिर वो मेढ़ा बन गया। अब तो काका उसे दूर फैंक कर सीधा भागा और घर आ के दम लिया। वो हफ्ताभर बुखार में तपता रहा बड़ी मुश्किल से ठीक हुआ और ये बाबूजी कहते हैं ऐसा कुछ होता ही नहीं।''

''अरे होता कैसे नहीं? हमने अपनी आंखों से देखा है। ये जो पेट्रोल पम्प के पास शमशान है वहाँ एक अघोरी आता था। वो अपने साथ एक लुगाई भी रखे था। लाश की खोपड़ी में शराब पीता था, अपना गूं अपने पूरे शरीर पे मलते मैंने अपनी आखों देखा है। औरत भी नितंग नंगी थी। चिता में से मुर्दे का माँस लेकर खा रहा था। मेरी तो घिग्गी बांध गई थी। दस-पन्द्रह मिनट तो मैं चाह के भी भाग नहीं सका. ..टांगों ने उठकर ही नहीं दिया। मैं तो खूब डर गया था। जब वो अघोरी जोर से हंसा तो मेरी टांग खुलीं और मैं भाग के घर आया। अब मैं देर-अबेर उधर जाता भी नहीं हूँ।'' सूरज के चेहरे पर और बातों में दशहत थी।

''चलो ठीक है भाई, तुम जीते मैं हारा। जब तुमने ठान रखा है कि होता है तो भाई होता है। मैं कहता हूँ नहीं होता तो नहीं होता, बस अपने-अपने विश्वास हैं। इससे ऊपर कुछ नहीं होता।'' कुमार कहकर दुकान पर ग्राहक से निबटने चला गया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

□

कुमार मोटर साइकिल लेकर मथुरा चल दिया। के.आर. कॉलेज जाने के रास्ते पर खड़ा होकर हंसो की प्रतीक्षा करने लगा। सामने से हंसो आती दिखी तो उसे इशारा किया कि वह मोटर साइकिल पर बैठ जाए। हंसो के बैठते ही कुमार ने मोटर साइकिल जन्मभूमि के मार्ग पर दौड़ा दी।

जन्मभूमि के पार्क के पास मोटरसाइकिल रोकी तो हंसो ने पूछा, ''कुमार आपकी तबीयत खराब है क्या?''

''हाँ हंसो, पूरे बीस दिन बीमार था।''

''ओह...मैं समझी आप उस दिन मेरी बातों का बुरा मान गये थे कि कैसी लड़की है। मैं भी क्या करूं? आपको देखते ही अन्दर से जैसे किसी ने कहा, यही है तेरे सपनों का राज कुमार।''

''थैंक्स हंसो...।'' कुमार की आंखों में आंसू झिलमिला उठे। उसने हंसो का हाथ अपने हाँथों के बीच लेकर कहा।

''थैंक्स किस बात का...कुमार?''

''हंसो, तुझे नहीं पता कि तूने अभी-अभी क्या कह दिया है, काश, मैं पिछले हफ्ते ही तुझसे मिल लेता तो कम से कम इतना परेशान तो नहीं होता। खामखा अपना दिमाग खराब कर रखा था।''

''क्या हो गया कुमार, कुछ खास बात है क्या।?''

''हाँ हंसो...खास बात यह है कि ...मुझे तुमसे प्यार हो गया है।''

''सच...एक बार फिर कहो कुमार?''

''एक बार नहीं रे, सौ बार...तू मेरी है सिर्फ और सिर्फ मेरी। तेरे और मेरे बीच अगर कोई दीवार होगी तो उसे गिराने में मुझे थोड़ी भी झिझक नहीं होगी।''

''ये आज दीवानों जैसी बातें क्यों की जा रही है?''

''हंसो...उस दिन जब तुझसे मिलकर गया तो मेरा दिल मेरे साथ नहीं था और दिमाग में हर क्षण तुम्हारी ही बातें घूम रही थी।''

''हाय...सच क्या...? भगवान की कसम तब से अब तक मैं भी भी आपके बारे मे ही सोचती रही। आपने देखा नहीं, आपने ज्यों ही इशारा किया, मैं मोटर साईकिल पर चुपचाप आकर बैठ गयी। आपको याद है, आपने जाते समय क्या कहा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

था? आपने कहा था इसका प्रमाण भी आपको जल्दी ही मिल जाएगा। हाय... कुमार...सच मैं पल-पल प्रतीक्षा करती रही कि तुम आहोंगे और कहोगे, हंसो मैं तुझे प्यार करता हूँ, और देख लो...तुमने कहा।''

''हाँ हंसो...सुन तो सही, वहाँ जाकर लगातार तेरे बारे में ही सोचता रहा जब तुझे याद कर करके बेचैन हो गया तो पापा जी से कह दिया कि मुझे हंसो से विवाह करना है।''

''सीधे पापा जी से...हाँ कुमार, तुन लड़के लोग कह सकते हो। तुम्हें ये छूटें हासिल हैं। हम लड़कियों के पास तो अपनी भावना सिर्फ छुपा के रखने के अलावा कोई रास्ता ही नहीं होता।''

''तू आगे तो सुन....यह सारा कुछ इतना भी आसान नहीं होता। पापा जी इस बात के लिए तो राजी हैं कि तुम्हारा मेरा विवाह हो जाए। पर तुम्हारे पापा को उनसे रिश्ते की बात चलानी पड़ेगी यह उनकी जिद है।''

''फिर...यह कैसे होगा?''

''मैं तो तुम्हारे पास इसलिए आया था कि मुझे पक्का पता नहीं था कि तुम्हें मुझसे प्यार है या नहीं। यही जानने के लिए मैं आज आया हूँ। अब यह बात तो साफ हो गयी है। बस एक बात और बता दे यदि हमारे परिवारों ने अगर अड़चनें पैदा की तो क्या तुम मेरा साथ दोगी? मैं चाहता हूँ हमारा प्यार हर हाल में विवाह में परिणत हो जाए...प्रेम सिर्फ प्रेम तक सीमित रहे तो मुझे यह प्रेम का अपमान लगता है।''

''मैं तुम्हारी हूँ...पर अपने घर पर तुम्हारी तरह साफ-साफ कह नहीं सकती।''

''यदि उन्होंने तुम्हारा विवाह कहीं और करना चाहा...इसके लिए ज़ोर-ज़बर दस्ती की, तो क्या उस हालत में तुम मुझसे कोर्ट मैरिज करना पसंद करोगी।''

''कुमार, मैंने कहा न मैं तुम्हारी हूँ, यह मेरा वचन है, पर घर की नाराजगी लेना भी मैं उचित नहीं समझती। पहले तो प्रतीक्षा करें...शायद कहीं कोई बात बन जाए। अगर नहीं बनेगी तो जैसा आप कहेंगे वैसा ही करूंगी। पर यह समझ लो कोर्ट मैरिज अन्तिम अस्त्र है। वैसे मुझे विश्वास है आप कुछ न कुछ कर ही लोगे।''

''अच्छा, कितना जानती हो मुझे...किस आधार पर मुझ पर इतना विश्वास?

''हाँ...इतना ही विश्वास कुमार तुम्हारे चेहरे को देखकर मेरे अन्दर से जैसे कोई कहता है..यही है परम विश्वसनीय व्यक्ति। सच...मेरी कसम....तुम मेरा यकीन करो।'' हंसो ने अंगूठे और उंगली से अपने गले को पकड़ते हुए कहा।

''हंसो, हम जिन परिवारों से हैं वहाँ गरीबी है और आगे बढ़ने की ललक भी। इसके साथ ही पुरातन इज्ज़त के पुराने मापदण्ड भी लिए फिरते हैं। पापा जी...खुद

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

को लड़के वाला होने की अकड़ में रखे बैठे हैं। अब तनेजा अंकल को कौन कहेगा कि वो पापा जी से बात करें। यहाँ कौन-सा बिचौलिया बैठा है...जो करना है मुझे ही करना पड़ेगा।''

''हाँ. बात तो यह भी ठीक है। मेरे पापा तो बहुत गुस्से वाले हैं। आधी तनखा तो प्रदीप की मैडिकल फीस में चली जाती है। बची तनखा से घर चलाना कितना मुश्किल होता है और सारा गुस्सा निकलता है, रोज़-रोज़ की छोटी-छोटी बातें में।''

''यह तो मुझे पता है। तभी तो मैंने इण्टर में ही दुकान खोल ली थी।''

''तुम लड़के थे...मैं लड़की हूँ...अब पापा जी ने ग्वालियर का ट्रांसफर माँगा हुआ है। वहाँ से बी.एड करूंगी।''

''अगर ट्रांसफर हो गया तो...तुम तो ग्वालियर चली जाओगी और मैं यहाँ टापता रह जाऊंगा।''

''मैं तो बस एक ही बात कह सकती हूँ विवाह करूंगी तो तुमसे, नहीं तो जिन्दगी भर कुंवारी रहूँगी।''

''लगता है, मुझे ही कुछ करना पड़ेगा...वैसे अगर तुम्हारे पापा नाराज़ हो गए तो मुझे कुछ ऊंचा-नीचा कहना पड़ा तो तुम बुरा मत मान जाना कि मैंने तुम्हारे पापा की बेइज़्ज़ती कर दी।''

''तुम्हें कुछ शक है क्या, मैं तुम्हारी किसी भी बात पर अविश्वास कर के शक कर सकती हूँ?''

''शक नहीं...कई बार परिस्थितियां ही कुछ ऐसी हो उठती है कि आदमी विवश हो जाता है। मुझे अगर तुम्हें पाना है तो अपने तरीके से ऐसा कुछ करना कहना पड़ सकता है कि उन्हें बुरा लग जाए। वैसे एक बात बताऊं, मैं ऐसा कुछ नहीं करूंगा कि उनका अपमान हो, आख़िर वो भी मेरे पिता समान ही हैं।''

''कुमार, तुम्हारी ये बातें सुन के मेरा मन कांप जाता है। घर वाले क्या हमारी भावना को समझने की कोशिश भी नहीं कर सकते?''

''अरे, करते हैं यार...पर उनकी झूठी शान...उनकी अकड़ उन्हें ऐसा करने से रोकती है। क्या तुम्हारे पापा आधी तन्खा प्रदीप को देकर यह नहीं चाहते कि जैसे वो संतान के लिए त्याग कर रहे हैं, ऐसे ही संतान भी उनके लिए त्याग करे।''

''पर वो संतान के त्याग में उनके जीवन की मुस्कान ही माँगना चाहते हैं।''

''चल छोड़ न...दो घंटे हो गए....ऐसा करता हूँ तुझे स्टेशन वाले चौराहे पर उतार देता हूँ।''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

□

सरदार बलवंत सिंह ने सुबह-सुबह ही कुमार को घेर लिया।

"ओ, ये कौन सा तुम्हारा कानून है, की शरारत लिक्खा डाका...ये भी कोई बात हुई?"

"ओ चाचा, हुआ क्या? क्यों सुबह-सुबह मेरे पे चढ़ा जा रहा है?

"लै, कहता है मेरे पे चढ़ा जा रहा है। मैं गरीब ने तेरे बगैर कहाँ जाना है? दस ऐ वी कोई न्याय है, की शरारत लिक्खा डाका?"

"ओ चाचा बैठ...अराम से बैठ। हाँ, अब बता क्या हो गया? किसने शरारत की, किसने डाका लिक्खा?" कुमार ने पूछा।

"ओ किसने क्या...तेरे पुत्तर ने....जीत ने और किसने....हरामियों ने डाका लिख दिया। बता मैं क्या करूं, कहाँ जाऊं? ऐ वी कोई बात हुई, की शरारत लिक्खा डाका... ।" सरदार बलवंत सिंह कलपे जा रहा था।

"चाचा आराम से समझा...मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा, किसने क्या किया और क्या हुआ?"

"ले, तूं वी विक गया...मेरे को पहले ई पता था तूने विक जाना है। इसे वास्ते नेता बणा फिरता है न। बता, थानेदार तुझे कितने रुपये महीना देता है?"

"तेरा दिमाग खराब हो गया है क्या...थानेदार किस बात के पैसे मेरे को देगा।"

"रिक्शेवाला, जिस पर बलवंत सिंह आया था बोला..., नेता जी, "रात को इनका बड़ा लड़का जीत लांचियों में गया था। पुलिस ने रेड मारी तो आठ लोग पकड़े गए। दो तो पैसे दे के चले गए। छः हवालात में बंद कर दिए, कह रहे हैं डाके की दफा लगा के बंद करेंगे।"

"हाँ दस्सो...ये भी कोई बात है...डाके में बंद करेंगे। अरे, बंद करना है तो रंडीबाजी में बंद करो...साथ में रंडियों को भी बंद करो, नईं तो मेरे लड़के को छोड़ दो। चल कुमार, तू मेरे साथ चल के इसी वक्त जीत को छुड़ा दे। जरा थानेदार को वी पता चले हम मरे-गिरे लोग नईं हैं। हमारी भी सुनने वाला बैठा है।"

कुमार रिक्शे पर बलवंत के साथ बैठ लिया, "पर चाचा, तू भी तो ध्यान रखा कर, जीते को समझा...किसी दिन किसी बुरी बीमारी से मरेगा।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"न, आप क्या कहते हो, मैं उस कुत्ते को आप कहता हूँ जा रंडियों में मुंह मार के आ। जवान बच्चा है, जवानी जोर मारती है, तो चला जाता है आएल पल्टी करने। शरारत तो जवान छोकरों ने करनी है। हम बुड्ढ़े थोड़े न करेंगे।"

"चाचा, जवान बच्चा है तो उसकी शादी कर दे। कितनी उमर है उसकी?" कुमार ने कहा।

"उमर तो पैंती साल है, पर शादी कहाँ करूं, कोई कुड़ी वाला तियार नई होता। ड्रैवर और पुलिसिए की शादी करना कोई सौखा काम है?" बलवंत अपनी कहता रहा।

"ये मेरे को कुछ नहीं पता। आज तो छुड़वा देता हूँ पर दुबारा मैं रंडीबाजी के केस में तुम्हारी कोई मदद नहीं करूंगा, यह मैं साफ-साफ बताए देता हूँ।"

कुमार थानेदार से मिला, जीत को छोड़ दिया गया, जीत कुमार से नजरें नीचे किए घर चला गया।

दूसरे दिन कुमार ने जीत की खबर ली, "ओए जीतेया, तेरे को ऐसी कौन-सी आफत पड़ गयी थी। अपने बुड्ढे बाप की नाक कटवा के रख दी।"

जीत शर्मिंदा, "सा बोला...बस शराब के नशे में चले गए, सात-आठ आदमी थे। वहाँ नशे में गाली-गुप्तार कर दी तो उन्होंने पुलिस बुला ली।"

"ओए, जीत तू गया ही क्यों...तेरे का अपनी नहीं, तो अपने बाप की इज्जत तो रखनी थी।" कुमार ने गुस्से से कहाँ

"बस....अब जो हो गया...सो हो गया।" जीत गम्भीर होकर बोला।

"हो गया, सो हो गया नहीं....आगे मैं इस तरह के केसों में कोई मदद नहीं कर सकता। साले, सारे बाइपास के लड़के शोर मचाते फिर रहे हैं...की शरारत लिख्खा डाका, उनको तो मुहावरा मिल गया।"

□

सुबह से भगवान सिंह दारू पीने पर जुटा है। यो तो बाइपास पर इक्का-दुक्का दारू-बाज इधर-उधर लुढ़कता ही रहता है। पर दोपहर को उसने खाना भी नहीं खाया तो प्रीतम सिंह का ध्यान गया।

"ओए...भगवान सिंह....हलो...।" प्रीतम सिंह ने भगवान सिंह के मुंह के सामने चुटकी बजाई।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भगवान सिंह ने मुंह उठाया, ''आ चाचा बैठ।'' बगल की कुर्सी की ओर इशारा किया। साथ ही ढाबे वाले लड़के को आवाज लगाई, ''एक गिलास और दे जा।''

प्रीतम सिंह उसका मतलब समझ कर बोला, ''रहने दे गिलास, जे बता तूने रोटी खाई कि नहीं?''

''अब कहाँ की रोटी...खाई न खाई सब बराबर है।'' भगवान सिंह दार्शनिक होने लगा।

''क्यों...घरवाली से लड़ के आया है क्या?''

''अरे, उस बिचारी को क्यों बीच में घसीट रहा है? उसकी तो साली की किसमत ही फूट गयी जो हमारे जैसे कमेरे से शादी की। साली जिन्दगी भर रोएगी अपने पाप को, भगवान सिंह की आंखों में आंसू झलक उठे। ''वो बिचारी तो चुपचाप घसीट रही है हमारे साथ। ये तो साली हमारी किसमत ही भगवान ने पता नहीं कौन से कलम से लिखी है जो बोदका में डुबो के लिखने बैठा तो स्याही की बूंद ही टपक गयी। अब वो किसी से नहीं पढ़ी जाती।''

''चल...जे बोतल बंद कर, रोटी खा के सो जा। शाम को जब सूफी होगा तब बात करेंगें, ओए छोटू दाल फ्राई कर और रोटी लगा।''

''चाचा, रहने दे। तू भी कब तक रोटी खिलाएगा? बहुत-से-बहुत चार-दिन फिर तू भी हाथ खींच लेगा।''

''अरे, तू ये बहकी-बहकी अपनी बकवास बंद कर और बता, तेरे को कौन सी आफत पड़ गयी?''

''ले कहता है, कौन सी आफत पड़ गयी? साला सब कुछ मेरे साथ होना होता है। अभी लाला ने नयी चेसी कसवा के दी, एक लोकल चक्कर लगाया। गाड़ी खड़ी करके उतरने को हुआ, उधर से गणेश जी ने ड्रैवर खिड़की से सूंड डाल दी।''

''मैं देखूं ये माजरा क्या है? तब तक लागों ने आवाज लगा के बताया कि हाथी पागल हो गया है। ड्रैवरों को पकड़ के मारता है। मैं लपक के कंडक्टर सैड से उतरा। जल्दी-जल्दी में चाबी स्विच में रह गयी, गाड़ी गियर में थी। गणेशजी ने देखा ड्रैवर नईं है तो पीछे से जा के धक्का मार दिया। गाड़ी स्टार्ट हो गयी, गेयर में तो थी ही पुल के नीचे ये जा और वो जा।''

फिर लाला ने जो लानत मलामत करी है, साली जिन्दगी में ऐसी फजीहत कभी न हुई। अब बता इसमें मेरा क्या कसूर, साला हाथी कर गया, भुगतूं मैं। अब वैसे भी कोई नौकरी पे न रखने का। पांच साल में ये तीसरी गाड़ी पलट रही है। भगवान सिंह ने पूरा किस्सा सुना डाला।

''चल कोई नईं....तू रोटी खा ले।'' प्रीतम सिंह ने सान्तवना दी, रोटी खा के

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
भगवान सिंह पेड़ के नीचे चारपाई डालकर सो गया। शाम को जब उठा तो प्रीतम सिंह के साथ चाय पी।

प्रीतम सिंह ने उससे कहा, "ऐसा कर, मेरा गट्टू ट्रक चला लिया कर। पहाड़ी के लोकल चक्कर ही लगाने होते हैं।"

"वा चाचा, तेरे जैसा दोस्त हो तो दुश्मन की दरकार नहीं है। साला, नई चेसी चलाने वाला ड्रैवर, अब तेरा टट्टू ठेला चलाऊं। अरे, लौंग रूट की फुल चेसी नहीं तो लोकल ढंग के ट्रक पे तो नौकरी करा। गट्टू चलाने से तो बेरोजगार ही भला।"

प्रीतम सिंह ऐसे समय में चुप लगा जाने में बड़ा माहिर है।

अभी शाम घिरी नहीं है कि एक साधु बाबा भगवान सिंह के पास आ बैठा। दूसरे दिन सुबह-सुबह भगवान सिंह सूफी था। गिर्राज के ढाबे के बाईं तरफ ही तखत डाल के भगवान सिंह और बाबा बैठे थे।

लोग उत्सुकता वश आते तो बाबा आशीर्वाद देता, गायों को चारा डालने का नुस्खा बताता। अपनी दक्षिणा के नाम पर कहता, "बाबा का पैसे से क्या काम जो श्रद्धा हो दे दो, नहीं तो हरि इच्छा।"

पूरे क्षेत्र में शोर हो गया बड़े पहुंचे हुए बाबा आए हैं। कोई आता, भगवान सिंह भी बाबा के कसीदे पढ़ने लगता। हर दिन के साथ भीड़ बढ़ती गयी।

पन्द्रह दिन बाद घोषणा हुई कि बाबा आठ दिन के लिए समाधि लेंगे। आठ दिन बिना अन्न जल रहेगे, नौवें दिन सबको आशीर्वाद देंगे।

अब जमीन खोद कर गड्ढा बना। बाबा उसमें बैठ गए। ऊपर से पत्थर की सिलें लगाकर गड्ढा बंद कर दिया गया। अब चौबीसों घंटे वहाँ भगवान सिंह विराजमान होता। लोग आते-जाते, भगवान सिंह सिर्फ एक वाक्य कहता, "गौ सेवा करो...मन भर चारा रोज गायों को डालो तुम्हारा काम हो जाएगा।"

कोई चारा रिक्शे पर लदवा कर लाता और नाद में डाल जाता। ज्यादातर लोग नगद पैसा दे जाते कि गायों को चारा मंगवा कर डलवा देना। तब भगवान सिंह रिक्शे के दो रुपये भी रखवा लेता।

सात दिन गुजर गए। आठवें दिन बाबा समाधि से बाहर आ गया जबकि नौवें दिन आना तय था। लोगों ने खूब जै-जै कार किया, चढ़ावा चढ़ाया। नौवें दिन बाबा बाइपास पर नहीं था। भगवान सिंह खूब खुश-खुश बाइपास पर घूम रहा था।

सूरज ने ईर्ष्या से कहा, 'बाबा भगवान सिंह को कोई मन्तर दे गया है। अब भगवान सिंह को पैसे को कमी नहीं रहेगी।'

शाम को चुन्नी, सूरज, पप्पी इत्यादि भी कुमार के पास आ जुटे, "अब तो तूने अपनी आंखों से देख लिया, बाबा हफ्ता भर समाधि में रहाँ न खाना न पीना,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

न हवा....अब तो देख ली तूने ईश्वर की शक्ति।''

कुमार गड़बड़ा गया, ''हाँ यार....पूरे हफ्ते भर बिना अन्न-जल और हवा कोई कैसे जी सकता है?''

''देख ले, तू बहुत ऐन-टैन करता था।'' सबने कुमार को खामोश देख खिल्ली उड़ाई।

कुमार कहीं गहरी सोच में उतर गया। क्या हुआ होगा, कैसे हुआ होगा। फिर याद आया अगर कोई कुछ बता सकता है तो भगवान सिंह।

शाम को भगवान सिंह को देखते ही कुमार ने रोक लिया, ''चाचा, अग्रेजी पउआ पिएगा?''

''ले कहता है अंग्रेंजी पउआ...नेकी और पूछ-पूछ। वैसे एक बता दे आज तेरे को पउआ पिलाने की क्या सूझी?''

''बस सूझ गयी...दरअसल चाचा, मुझे तुझसे कुछ पूछना है। बिना पउआ तो तू किसी को अपना बुखार भी न दे।''

''ठीक...बिलकुल ठीक....अगर ये बात है तो तेरे को भी मेरे साथ पीनी पड़ेगी।''

''चाचा, तेरे को पता है मैं नहीं पीता।''

''अरे, तो मत पी तेरे हिस्से का भी पउआ मंगा ले, तेरे वदले भी मैं पी लूंगा। चल मंगा हाफ, देख, अच्छी-सी मंगइयो। कहीं यो ही मंगा ले चालू-सी। चल पूछ क्या पूछ रहा था...तू भी क्या याद रखेगा।''

''न चाचा अभी न, दो पैग, तू गले के नीचे उतार ले, तब तेरे मुंह से सच्ची बात निकलेगी। न तो तू यो ही अल्ल-बल्ल मारेगा।''

''न कुमार कसम से, तेरे को मैं अपना बच्चा मानता हूँ। तेरे से कच्ची बात. ..न ....न मतलब ई ना।''

''चाचा, कसम मत खा मुझे यकीन है। दरअसल मुझे वो बाबा की समाधि का पूरा किस्सा पूछना है।''

''बस...खोदा पहाड़ निकला चूहाँ उसके लिए तुझे पउआ पिलाने की क्या जरूरत थी?'' वो तो मैं वैसे ई बता देता।

''चल, अब बता दे।''

''हुआ यों, के जब ट्रक उलटा था। शाम को ये बाबा आ गया आपनी मारने लगा तेरे ये होगा...तेरा इतना भाग है तेरे सितारे बुलंद हैं?''

मैं तो पहले ई तपा पड़ा था। मैंने कही हमारे पास तो दारू है, पीनी है तो पी ले।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वो हराम का बोला....यहाँ खुल्ले में, कहीं ओट में बैठ लेते हैं। मैं साले को अन्दर कमरे में ले गया। वहाँ उसने बताई के उसका हाथी पागल हो गया था।

बस जी, मैंने जूती उतारी और ये दे और वो दे, साले की कुटम्मस कर दी। वो रोया, मैं तो महावत हूँ बाबा थोड़े न हूँ। हाथी मरा तो बाबा लोगों ने भी मुझे भगा दिया, अब तो रोटी के भी लाले हैं।

''अब हम दोनों की रोजी चली गयी थी सो उसने बताई के ऐसे-ऐसे हम समाधि का खेल करेंगे। मैंने सोची ये बाबा लोगों के साथ रहा है तो सब लाग-वाग जानता होगा।''

''पर चाचा, वो हफ्ताभर समाधि में कैसे रहा, कुमार ने जिज्ञासा की?''

''अरे कुमार, तू तो वोई रहाँ मैं तो तेरे को ज्ञानी ध्यानी समझ रहा था। अरे गड्ढा तो हमने बनवाया था। चारों बगल सूराख रखे थे। दो-दो ईट वैसे ई फंसा रखी थीं। बस ऊपर पटिया रखने के बाद हटा दी ईंट। वहीं से खाना-पानी सरका देता था। रात को साले को पउआ दे देता था। बिगर पउया तो उसका गुजारा हीं नहीं था।''

''अरे...तो ये धांधलेबाजी थी।'' कुमार ने आश्चर्य किया।

''ये तो उसने पहले ही बता दिया था। पहले तो हम रोज चढ़ावा आधा-आधा बांट लेते थे। जब वो गड्ढे में गया तो मैं सारा चढ़ावा घर भेज देता था।''

''ले चाचा...ये तो चोरों को मोर वाली बात ही हुई।'' कुमार ने हंसकर कहा।

''हाँ हुई...तुझे पता है कितना चढ़ावा आ रहा था। हजार-बारह सौ रुपये रोज। साला महीना भर ट्रक चलाओ तो चार सौ रुपल्ली मिलते थे।''

''अरे बाप रे...हजार-बारह सौ।'' कुमार की आंख फटी की फटी रह गयी।

''हाँ जी..हजार-बारह सौ।''

''तो चाचा, फिर खेल खत्म कैसे हो गया, कुमार ने पूछा?''

''पैसे तो मैंने घर भेजे थे रखने को, वो साला समझा मैं सारे पैसे खा रहा हूँ। साला धमकी देने लगा। सातवें दिन मैंने चारों मोरी सुबह-सुबह ही मूंद दीं। जब बाबा का का दम घुटा तो उछला, ढक-ढक आवाज आयी तो हमने पटियां हटा दी, दस-बारह आदमी गवाह मैंने पहले से इकट्ठे कर रखे थे।''

''अरे बाप रे...अगर वो मर जाता तो?''

''मर जाता तो कलेश कटता, हमने कहा था के समाधि ले। उसने अपने से किया था।''

''तो तुमने भंडा-फोड़ क्यों किया? एक दिन की बात ही तो थी। तुम्हें एक दिन और हजार-बारह सौ रुपये मिल जाते।''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"रुपये तो हजार-बारह सौ मिल जाते। पर एक बात और भी तो देख, अगर मैं उसे नौंवे दिन निकालता तो वो साला पब्लिक में पुज जाता। बड़ा भारी साधु बन के निकलता, फिर जो वो मुझे छीलता तो बचाने को कौन आता? और फिर जितना नहाए उतना पुन्न।"

"अब नौकरी तो तुम्हारे पास है नहीं, कहाँ जाओगे?"

"देख कुमार, एक बात समझ ले, सारा झमेला नोटों का है। जब साली नौकरी नहीं होती तो जेब में पैसे भी नहीं होते। हम तो छोटे मजूर है। रोज कुआं खोदना रोज पानी पीना, जिस किसी के पास नौकरी माँगने जाओ हर कोई फायदा उठाता है। साला नखरे करता है चार सौ दूँगा सूखे, नाइट भी नहीं और सवारी भी नहीं बैठाने देता। डग्गेमारी में भले बैठा ले दस-पांच की, वो रुपये तो दाल-रोटी में उड़ जाते हैं।"

"चलो ठीक है, पर अब करोगे क्या?"

"ले, क्या करना है, राशन घर में भर दिया दो महीने का, बाबा की कमाई पड़ी है। जिस लाला को जरूरत होगी अपने से बुलाएगा और नौकरी देगा...नौकरी देगा अपनी गर्ज को। फिर हम नखरे करेंगे और वो सुनेगा। सारा खेल फंसी का है, हम भी खेल के देखेंगे, वैसे भी हमें जिंदगी भर करनी तो ड्रैवरी है, कोई प्राइम मिनिस्ट्री तो हमें मिलने से रही। अब चलूं...पउआ तो पी लिया....पउआ बचा है, कल काम आएगा।

माँगने वालियों में हड़कंप मच गया। वे चिल्लाती हुई भागीं। अरे सत्यानास जाय, छोरी फाड़ गेरी। पल भर में बाइपास भी चौकन्ना हो उठा। पता चला कि दिल्ली की किसी बड़ी गाड़ी में दो लड़कों ने गिलहरी को उठा लिया। गिलहरी के साथ बलात्कार हुआ है।

मोहल्ले वाले शोर सुनकर भागे तो कार गिलहरी को बाहर फेक भागने के चक्कर में कीचड़ में फंस गयी। मोहल्ले वालों ने लड़कों की जमकर धुनाई कर दी। साथ ही पुलिस उन्हें ले गयी है।

फूली ने कुमार को बुलवाया। कुमार तो किसी पारिवारिक शादी में बाहर गया हुआ है। फूली अड़ गयी रिपोर्ट लिखो, गुंडों को जेल में डालो। उसके साथ उसका पूरा कबीला है। थाने के अन्दर बाहर उनका हुजूम है।

मामले की नजाकत को देख थानेदार ने लड़कों को लाकअप में बंद कर दिया। साथ ही रियायत भी की है कि उनकी दिल्ली में पिता से बात करा दी है। बलात्कारी के पिता उद्योगपति हैं।

थानेदार नर्म हो उठा...सर यहां हालात नाजुक हैं। पूरा कबीला थाने के बाहर इकट्ठा है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
देखो मेरे बच्चे को कुछ नहीं होना चाहिए। ले दे कर जैसे भी हो मामला निपटवाओ। पच्चीस, पचास हजार की बिलकुल भी चिन्ता नहीं करना।

पुलिस अपने तरीके से केस हैंडल कर रही है। थानेदार की सहानुभूति उद्योगपति के वाक्य पर है पैसे की चिन्ता नहीं करना।एक लाख तक के लिए भी फूली तैयार नहीं है।

वह रोती कलपती थाने में बैठी है। गिलहरी हैरान, परेशान जमीन को पैरों के अंगूठे से कुरेदती रोती जा रही है। उसकी आंख के पपोटे सूजकर अंगारा बन चुके है। बेबसी से इधर-उधर देख वह अपना मुँह घुटनों में छुपाने के अलावा कुछ नहीं कर पाती।

रात घिरने तक हर्जाने की रकम दो लाख पहुंच गयी तो फूली के घर वाले और मोहल्ले वाले भी उस पर दबाव बनाने लगे। फूली, दो लाख बहुत ज्यादा है ले ले करम जली।

अरे कैसे बिक जाऊं, जवान जहान छोरी को बेच दऊं। मैंने तो ये पढ़ाई लिखाई, के कछू जिन्दगी बन जाएगी। मोय न पतौ ही पढ़ के ऐसी जिन्दगी बनैगी। सत्यानास हो इन पढ़े लिखे कमीनों का, ऐसी आग लग रही तो अपनी माँ भैनन की ...में कूदते, यहाँ कहाँ आ मरे, नासपीटे, अरे कोई तो बताओ, न्याव कौन से देस में है। कोई तौ अतौ पतौ बताओ। यहाँ तो सब कछु पैसा में तोल गैरौ रे।

कुमार सुबह छः बजे की गाड़ी से उतरा तो घटना का पता चला। सीधे थाने गया। फूली का विलाप सुन वह थानेदार से अड़ गया कि एफ.आई.आर दर्ज करो, लड़की का मैडीकल कराओ। दोषी को हर हाल में सजा मिलनी चाहिए।

थानेदार चापलूसी पर उतर आया, सर मैंने भी यही सलाह दी है पर इसी के आदमी सौदेबाजी पर उतर आए। थोड़ी ही देर में लड़के का पिता भी दिल्ली से चलकर यहाँ पहुँचने वाला है।

अभी बातें हो रही थी कि बलात्कारी का पिता भी आ गया। ऊपर से नरम, हाथ जोड़े हुए पर पैसे के रूवाब को चेहरे पर चिपकाए। कहाँ है मेरा बेटा।

वो रहा, लॉकअप में, मच्छरों से खेल रहा है। कुमार ने बड़ी हिकारत के साथ कहा।

वह सीधा वहीं पहुँचा, बेटा...कैसा है तू। ये चोट के निशान कैसे हैं। किसने मारा तुझे।

बेटा अपनी जगह पर बैठा ही रहाँ पिता जी मुझे बचा लो...मैंने कुछ नहीं किया। सच...पिता जी।

सेठ, थानेदार से मुखातिब हुआ। मेरी आपसे फोन पर बात हुई तो थी। फिर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मेरे बच्चे को मारने का क्या मतलब। मैंने कह तो दिया था कि पैसे की चिन्ता मत करना पर मेरे बच्चे को कोई नुकसान नहीं होना चाहिए।

थानेदार ने उत्तर दिया, सर, थाने में किसी भी प्रकार की कोई मारपीट नहीं की गयी है। यह तो पकड़े जाने पर मोहल्लों वालों ने ही जो हाथा पायी की वही है।

कुमार भी गुस्से से बोला, लाला अभी तेरे लाल को कोर्ट में पेश किया जाएगा। चौदह दिन की पुसिल रिमाँड ली जाएंगी...जरा शान्ति तो रखो। जब थर्ड डिग्री लगेगी तब नवाब साहब के होश ठिकाने आएगे। इसके बिना तो इसकी मस्ती उतर ही नहीं सकती।

सर...प्लीज...आप कौन हैं। सर मैं हर प्रकार का हर्जाना देने को तैयार हूँ।

लाला, तेरे पास पैसे हैं। पर तू यह नहीं जानता कुछ चीज़ें पैसा भी नहीं खरीद सकता।

सर...आप इन्सानियत के नाते सोचें, बच्चा है, गल्ती कर बैठा है। इसे सजा दिला के आपको क्या मिलेगा इसका सारा कैरियर नष्ट हो जाएगा। साथ ही जेल का ठप्पा लग जाएगा।

यह तो तेरे लड़के को पहले सोचना चाहिए था। जब कोई आपना भला स्वयं नहीं सोचता तो दूसरे किसी को क्या पड़ी है कि वह इसका भला सोचे।

सर...प्लीज, मैं बाप होकर हाथ जोड़कर इसकी ओर से माफी माँगता हूँ। सर...प्लीज इन्सानियत के नाते।

वैरी गुड लाला, सारी इन्सानियत दूसरों को ही आनी चाहिए या कुछ तुम्हारे मन में भी होनी चाहिए। तुम सीधे अपने बच्चे की रट लगाए हुए हो। एक घण्टा होने को आया क्या तुमने पूछा वह लड़की कहाँ है किस हाल में है।

सर...प्लीज, उसे बुलवाइये मैं उसका अच्छे से अच्छा इलाज करवाऊंगा। मुझे बताया गया कि दो लाख रूपया हर्जाना देना है। बेशक यह रकम बहुत ज्यादा है पर मैं देने को तैयार हूँ। मैं रुपया अपने साथ लाया हूँ।

किसी ने फूली को खबर दी तो वह भी भीतर घुस आयी। कुमार ने उसी से पूछा...फूली निडर होकर बता तू लाला से हर्जाने के दो लाख रुपये लेगी या एफ.आई.आर दर्ज करा के लड़के को सजा दिलवायगी।

फूली कुछ देर लाला देखती रही फिर रो पड़ी...मुझे कुछ न चाहिए। दरोगा जी छोरे को छोड़ दो, मुझे न लिखानी रपट। फिर रोती कलपती कमरे से बाहर निकलकर अपनी बेटी का हाथ पकड़ बाहर जाने लगी।

चल करम जली...जो बीती सो बीती...घर चल बेटी।

कुमार और कबीले का मुखिया भी आ गए। फूली क्या हो गया है तुझे। क्यों

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
भागी जा रही है, दो लाख बड़ी रकम है ले ले मुखिया बोला।

फूली एफ.आई.आर दर्ज करा, मैं तेरे साथ हूँ। इस दुष्ट को सजा दिलवाकर ही चैन लूंगा। तू मेरा विश्वास कर, कुमार बोला।

अरे किससे पैसा लूं किसकी रपट लिखाऊं। अभी इतनी भी न गिरी, गरीब हूँ, लाचार हूँ, पर ये कमबखत मारा लाला ही तो गिलैहरी का बाप है। अब तुमी बताओं बहन के पैसे भाई से कैसे ले लूं। जो ले लूं तो धरती न पलट जाएगी।

एक बार तो जैसे सन्नाटा छा गया। जो बात फूली के मुंह से कभी नहीं निकली थी आज जग के सामने थी। फूली बेटी को लेकर चली ही गयी।

□

जिला अध्यक्ष की कोठी पर पूरा दरबार लगा था। जाते ही सभी मिले पर कुमार ने सूंघ लिया कि कहीं कुछ गड़बड़ जरूर है। पर अपने भावों को छुपाए हुए बोला, "ठाकुर साहब, आज तो लगता है पूरी कार्यकारणी बिना बैठक के ही हाजिर है।"

"विधान सभा इलक्शन की घोषणा होने वाली है तो सब तरफ से हाथ-पैर मारे जा रहे हैं।" ठाकुर साहब अपनी ठसक के साथ बोले।

"बौस, यह बताओ आपकी जिला कांग्रेस अध्यक्ष से बात हुई क्या कि हम तीन एम.एल.ए. सीटें यूथ काग्रेस कोटे में लेंगे?"

"उनसे तो उसी दिन बात हो गयी थी। जिस दिन जिला कार्यकारिणी की बैठक हुई थी। वो दो सीट छोड़ने को राजी हैं, एक छाता और बाह की....मथुरा सीट पे बहुत दावेदार हैं।"

"तो फिर लखनऊ चलें न...वहीं विधान सभा में जाकर जायज़ा ले लेते हैं।"

"अरे वो सब भी....दिल्ली पहुंचें हुए हैं। हमें दिल्ली ही चलना पड़ेगा। हर सीट के लिए तीन-तीन नाम देने हैं। तेरे छाता से तो हरि राणा भी मुंह पैना रहा है।"

"वो ब्लॉक अध्यक्ष...उसने आज तक क्या काम किया है? बस पद से चिपका बैठा है...हम नगर और पंचायत स्तरों पर जो बैठकें करते हैं उसमें आने के अलावा उसने कोई बैठक भी बुलाई है?"

"अरे छोड़ कुमार, तू बता वहाँ छाता में तेरी पकड़ कैसी है?"

"बौस, वहाँ के समीकरण तो आपको पता ही हैं। बहरहाल कोसी की कांग्रेस

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
और युवा कांग्रेस इकाइयां मेरे नाम पर एकमत हो गयी हैं। इस आशय का पत्र जिला कांग्रेस अध्यक्ष को जा चुका है।''

''कुमार, जरा भीतर आ...एक खास बात तुझसे डिसकस करनी है।''

''चलो...। हाँ, अब बोलो ठाकुर साहब क्या खास बात है।''

''कुमार, ये बता, दिल्ली चलने का इरादा कब है?''

''मैं तो हर वक्त तैयार हूँ....भले अभी चलो। ''

''तो फिर टिकट कन्फर्म के लिए दो पेटी पहुंचवा दे।''

''कौन से टिकट कन्फर्म की, बौस?''

''तेरे एम.एल.ए. टिकट का एप्रूवल लेना है...उसी के लिए दिल्ली चलने की बात कर रहा है ना।''

''हाँ...और दिल्ली क्यों जाना है?''

''मैं भी तो उसी टिकट एप्रूवल की बात कर रहा हूँ।''

''तो क्या मुझे अपने लिए टिकट खरीदनी होगी?''

''तू इसे खरीदना कहता है जिले में तीन सीटों पर झंडा...बैनर...बिल्लों की पूर्ती में तुझे मालूम है कितना खर्च होता है?''

''खर्च जो होगा हो हो जाएगा...वो हर व्यक्ति अपने स्तर पर देखेगा...अगर टिकट खरीद कर लेनी है, तो मुझे नहीं लड़ना इलेक्शन।''

''अरे कुमार, तू कैसी बात कर रहा है? पूरे जिले में एक तेरी सीट ही तो क्लियर सीट है।''

''अगर ऐसा है तो सीट मुझे उपहार में मिलनी चाहिए, जिला और प्रदेश को चाहिए कि सारा जोर मेरी सीट पर लगे जिससे अधिक से अधिक मार्जिन से मैं जीत कर रिकार्ड बना सकूं।''

''तुझे मालूम है, अगर एक बार तू वहाँ से जीत गया तो छाता तहसील कांग्रेस का गढ़ बन जाएगा...अगर रिकार्ड मार्जिन से जीता तो आने वाले समय में संसद के दरवाजे भी तेरे लिए खुल सकते हैं।''

''ठाकुर साहब....भले ही पी.एम. बनने के दरवाजे खुलते हों, मुझे खरीद कर टिकट नहीं चाहिए। मुझे राजनीति अपनी शर्तों पर करनी है। आपकी शर्तों पर नहीं।''

''राजनीति व्यक्ति नहीं, पार्टी की शर्तों पर होती है।''

''होती होगी...मैं पार्टी की सभी शर्तों को पूरा करता हूँ। दरी बिछाने से अधिवेशन तक में मैंने सक्रिय भूमिका निभाई है।''

''तूने कोई अनोखी भूमिका निभाई है? सब लोग यही कुछ कर रहे हैं। तू अहसान फरामोश आदमी है। तू भूल गया तेरे एक पत्र लिखने पर मैंने तुझे नगर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

युवा कांग्रेस अध्यक्ष बना दिया था। तेरे खिलाफ तेरे विरोधियों के पत्र आए पर मैंने सारे के सारे डस्टबिन में डाल दिए, तुझे जिला कार्यकारिणी में मंत्री रखा। तूने एक मिनट में सब मिट्टी कर दिया। मुझे पता होता तू गद्दार निकलेगा तो मैं कभी तेरा समर्थन नहीं करता।''

''बहुत बढ़िया ठाकुर साहब....बहुत बढ़िया...आपको पता है न मेरे पिता जी रेलवे में क्लर्क हैं...मैं मोटर पाट्‌र्स की छोटी सी दुकान चलाकर घर चला रहा हूँ। उसके बावजूद मैने किसी काम में कोताही नहीं की। संजय गांधी को दिल्ली में पुलिस द्वारा घसीटे जाने के बाद कोसी से तीन बसें भरवा कर गिरफ़्तारी दी थी। मैं खुद गिरफ़्तार हुआ था। अपनी मेहनत के बूते पर कांग्रेस का नाम अपने क्षेत्र में चमकाया। किसलिए...इसीलिए न कि आने वाले दिनों में पार्टी में मेरी कदर होगी। पर नहीं, कदर होगी दो लाख रुपये देने वाले की। मेरा बूता नहीं है मैं लखनऊ जाकर लड़ूं, अपने टिकट के लिए भीख माँगता फिरूं...अगर मेरा जिला ही मेरे खिलाफ है तो क्या करना है ऐसा इलक्शन लड़ कर? मैं अपना नाम विदड्रा करता हूँ।''

''कुमार पछताएगा....जल्दीबाजी मत कर...अभी बहुत समय पड़ा है सोच विचार ले।''

''ठाकुर साहब, सोचना उसे होता है जो निर्णय-अनिर्णय की अवस्था में होते हैं। यहाँ तो सब कुछ एकदम शीशे की तरह साफ़ है। मुझे आपका निर्णय अभी और इसी वक्त चाहिए। आप मेरी सहायता कर सकते हैं तो करें, नहीं तो कोई बात नहीं। मुझे आपसे कोई गिला नहीं होगा, न ही कोई मलाल। एक बात और, युवा कांग्रेस का कार्य मैं पहले की तरह मन लगाकर करता रहूँगा।''

''भाई मेरे...राजनीति में बहुत ऊंच-नीच देखनी पड़ती है। अगर मैं भी तेरी तरह ऐंठ जाऊं तो हो लिया काम।''

''यह देखना आपका व्यक्तिगत मसला है। मैं सिर्फ अपनी बात कर रहा हूँ।''

''तो फिर मैं तेरा विड्रावल अन्तिम निर्णय मान लूं।''

''बिलकुल मान लें....मैं तो कह रहा हूँ मुझे कोई उजर नहीं है। हम दोनों भाई सलाह कर रहे हैं....कोई झगड़ा थोड़े हो रहा है।''

''कुमार, तू जल्दबाजी कर रहा है। कोई भी जाकर कांग्रेस कमेटी से बात कर के देख, शायद वो तेरी कुछ मदद करें।''

''हो सकता है करें...पर मैं भीख माँगने का काम ही नहीं करूंगा। कोसी में मैं अपनी शर्तों पर ही डिक्टेट करता रहा हूँ....डिक्टेट होना मेरी आदत में शुमार नहीं है, बौस आज्ञा हो तो चलूं...मुझे किसी के पास बहुत जरूरी काम से जाना है।''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"चल, फिर भी एक बार और मेरी बात पर विचार करके देखना।"

"अब इन बातों में मुझे कोई तंत नहीं नजर आता दिखता....खैर, देखता हूँ क्या हो सकता है?"

कुमार निकल लिया।

□

यूथ कांग्रेस के अध्यक्ष के घर से निकल कर कुमार सत्ताइस क्वाटर्स की ओर चल पड़ा। दिल ने कहा आज का दिन अच्छा नहीं है। अच्छी भली एम.एल.ए. के लिए मिलती टिकट को स्वयं लात मार कर आ गया। कहीं ऐसा न हो आज का दिन अगली बात में भी अपना असर दिखा दे।

कुमार ने फिर स्वयं को उत्तर दे डाला...दिखा दे तो दिखा दे। सच पर कोई क्या अपना काला साया छोड़ेगा। हंसो को किया वादा निभाना है तो ये पापड़ भी बेलने ही पड़ेंगे, जो परेशानी आएगी उसका भी सामना किया ही जाएगा। किया क्या जाएगा...करना पड़ेगा बच्चू, कह कर कुमार ने मोटर साइकिल की रेस बढ़ा दी।

तनेजा अंकल अखबार देख रहे थे, "सुना कुमार, तेरी नेतागिरी का क्या चल रहा है?"

"अंकल, मैं आज तक तो तहसील छाता से एम.एल.ए. टिकट के लिए एण्टाइटल था...पर अभी-अभी युवा कांग्रेस अध्यक्ष ठाकुर के घर से उन्हें मना कर के आ रहा हूँ।"

"क्यों...इलक्शन तो जीत जाएगा न...फिर क्यों मनाकर आया?"

"मेरे पास लक्ष्मी पुत्रों की कमी है...टिकट के लिए मोटी रकम चाहिए।"

"चल छोड़ आया तो अच्छा किया, वैसे भी हम लोगों को राजनीति रास नहीं आती। हम सीधे सच्चे नौकरी करने वाले लोग हैं, बच्चे पल जाएं, कहीं हील-हवाले से लग जाएं इतना ही काफी है।"

"अंकल, मुझे आप से पर्सनल बात करनी है।"

"बोल न बेटा...इसमें सोचने की क्या बात है? जैसे देवीदयाल से घर में बात करता है वैसे ही मुझसे कर ले?"

"अंकल...मुझे हंसो से शादी करनी है।"

दोनों थोड़ी देर चुप बैठे रहे। "फिर तनेजा साहब ने कहा, क्या तेरी हंसो से कोई बात हुई है?"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"नहीं...उससे तो मेरी कोई बात नहीं हुई...वो मुझे अच्छी लगी तो मैंने आप से बात कर ली।"

"बेटा, तुम अभी बच्चे हो, मैं तुमसे क्या बात करूं? मैं देवीदयाल से बात करूंगा।"

देवीदयाल को तनेजा का फोन आया तो शिकायत करने के लिए था पर देवीदयाल के अहं को सन्तुष्ट कर गया। तनेजा ने कहा, "यार देवीदयाल, कल कुमार आया था...हंसो से शादी करने के लिए कह रहा था।"

"तो हाँ कर देनी थी....लड़का काबिल है...रोजगार से लगा हुआ है और तू क्या चाहता है? बोल, कब बारात ले आएं?"

"देवीदयाल, मज़ाक मत कर, यार तू ये सोच...कि यह क्या तरीका हुआ बात करने का? लड़का खुद अपनी शादी की बात लड़की के बाप से कर रहा है।"

"तनेजा, आज कल यही जमाना है। वैसे उसका भी कसूर नहीं है, वो जरा जल्दी बड़ा हो गया है। अपने बूते पे दुकान चलाता है...यूथ कांग्रेस भी...वकालत भी....। ऐसे में धक्के खा-खा के आदमी वैसे भी जल्दी बड़ा हो जाता है। तुझे कोई एतराज है क्या....या तूने लड़की के लिए कोई मेल देख रखा है?"

"नहीं यार...ऐसा कुछ नहीं है। बात दरअसल यह है लड़का मेडीकल पढ़ रहा है। अभी हंसो भी बी.एड. कर ले नौकरी लगे तो मेरी कुछ मदद हो जाए। तू तो किस्मत वाला है। तेरे दोनों लड़के हिल्ले से लग गए, बेटा-बेटी की भी शादियां हो गयीं। यहाँ अभी लम्बा पेंडा पड़ा है।"

"छोड़ ना यार ये बातें....कुमार तो यूथ कांग्रेस की सोच का है। दहेज के तो वो सख्त खिलाफ है। तू बस बरात को रोटी खिला देना, इतना ही काफी है, लेन देन के झमेले छोड़ दे।"

"देवी दयाल ऐसा नहीं होता...हम समाज में रहते हैं। हमें कम-ज्यादा समाज के हिसाब से चलना होता है। यार मेरी भी कोई इज्जत है कि नहीं। अभी और बच्चों के विवाह भी करने हैं।"

"बिना दहेज शादी में तेरी कौन-सी इज्जत चली जाएगी?"

"पूरे सैक्शन में बात फैल जाएगी कि तनेजा के पास लड़की की शादी के भी पैसे नीं है। फिर कोई रिश्ते की बात करने से भी कतराएगा।"

"चल, अब तू क्या कहता है...लुब-लुबाव बता ना....मैं तो सोच रहा था पुराना यार, समधी बन जाएगा।"

"देख देवी दयाल, तू कुमार से बात कर। अगर वो तीन साल इन्तज़ार करने को तैयार हो तो मुझे रिश्ता मंजूर है। इस बीच मैं कोई रस्म भी नहीं करूंगा और कुमार हंसो से भी नहीं मिलेगा। यह मैं पहले ही बताए देता हूँ।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"चल समधी; तेरी ये जिद भी मंजूर...पर यार, तीन साल बहुत ज्यादा नहीं हैं।"

"तीन साल निकलते कितनी देर लगती है। वैसे अगर हंसो की नौकरी लग गयी तो दो साल में ही कर दूँ...पर पहले नौकरी तो लगे।" तनेजा ने लम्बा सांस लेकर छोड़ दिया।

कुमार ने जब हंसो को सारी बताई तो हंसो बहुत खुश हुई। उसे आगे की जिन्दगी जानने की इच्छा हुई।

"कुमार, तुम्हारी एल.एल.बी. का क्या हुआ?"

"होना क्या है? एक सैमिस्टर दिया नहीं हैं दो बाकी पड़े हैं...वैसे मेरा मन नहीं है अब....वकालत का पेशा, पता नहीं क्यों मेरे गले नहीं उतरता?"

"फिर एल.एल.बी. में दाखिला ही क्यों लिया था?"

"मिनिस्टर बनने के लिए....यह भी राजनीति के खेल का एक हिस्सा था। अब जब सक्रिय राजनीति से मोहभंग हो गया है तो मुझे एल.एल.बी. करने में कोई तंत नजर नहीं आता।"

"हाय...कुमार, तुम कैसे इतनी सरलता से इतनी बड़ी बात कर सकते हो? सोचकर देखो...तुम वकील बन जाओगे...मैं टीचर लग जाऊंगी। हमारी एक दुनियां होगी...इज्जत होगी, प्लीज लॉ कर ही लो, मेरे लिए... साल भर की ही तो बात है।"

"तुम्हारी बात अपनी जगह ठीक है। पर तुम सिर्फ उजले पक्ष पर नजर रखती हो, मुझे बाइपास ने अंधेरे पक्ष पर पहले नजर रखना सिखाया है।"

हाँ....बताओ न...कुमार पूरी बात बताओ। हम लड़कियों की दुनियां घर की चार दीवारी में कैद रहती है...आप लोग घर से बाहर की दुनियां को खूब देखते परखते हो, इसलिए जानते भी ज्यादा हो।"

"हंसो, एल.एल.बी. पास कर लेना मेरा उल्टे हाथ का काम है। पर डिग्री मिलते ही लालच आएगा कि प्रैक्टिस करो। बस यही झमेले का काम है...आठ-दस साल लग जाते हैं, एक वकील को अपनी प्रैक्टिस जमाने में।"

"तो क्या हो गया? मेरी नौकरी लग जाएगी तो तन्खा आयेगी न, उससे घर चलेगा, आप प्रैक्टिस चला लेना।"

"नहीं यार, मैंने सोचा है तू कोस्ट कॉलेज में लेक्चरार की नौकरी कर लेना। वहाँ अपना जुगाड़ ठीक-ठाक है...मैनेजमैंट के लोगों से अपनी बातचीत है। मैं बाइपास पर प्लाट खरीद लेता हूँ, वहीं गैरेज खुल जाएगा...पीछे की ओर मकान होगा। देखो संजय की मारुति कब लांच होती है। कोशिश करूंगा, अगर मुझे एजेन्सी मिल जाए। उसके लिए मेहनत करनी होगी।"

"आपसे बाइपास-बाइपास बहुत सुनती हूँ...मुझे भी तो बताओ यह बाइपास क्या है?"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"बाइपास क्या है...बाइपास एक ऐसी जगह है जहाँ पूरा समाजवाद है। जिस किसी को घर....नौकरी में ठिकाना नहीं मिलता बाइपास उसे आश्रय देता है।"

"लो, ये क्या बात हुई...आप तो मजाक करने लगे।"

"मजाक नहीं, हंसो वास्तव में तो यह जिन्दगी ही पग-पग पर बाइपास माँगती है। सहज चलती जिंदगी में व्यवधान आया नहीं कि व्यक्ति पाइपास को स्वीकार करने लगता है।"

"वो कैसे...?"

"अपनी ही जिन्दगी को लो...मैं सोच भी नहीं सकता था कि मैं प्रेम के झमेले में पडूंगा। सोच रखा था घर वालों की इच्छानुसार विवाह करूंगा। तुम्हें देखते ही विवाह ने बाइपास माँग लिया कि नहीं। हमारा विवाह बिलकुल उसी तरीके से होगा जैसा हमारे परिवारों में विवाह होते हैं, पर ठीक यहीं पर तुमने और मैंने मुख्य राह को छोड़कर प्रेम करके विवाह की मंज़िल को वाया बाइपास पाया है।"

"मुझे नहीं समझना, इतने झमेले की बातों को...सिर्फ व्यक्तिगत जीवन के बारे में मुझे रुचि है। आप मुझे जिन्दगी भर प्यार करेंगे न?"

"हंसो....तो सीधा बोल न, भविष्य की सुरक्षा की बेचैनी तुझे तंग कर रही है।"

"सच...कुमार तंग नहीं। बस उत्सुकता है...वरना जो होगा देखा जाएगा, कल की इतनी चिन्ता मैं कहाँ से करूंगी?"

"चल, वो भी सुन ले। तुम्हारा पति बन कर, स्वामी या परमेश्वर बनने का ख्वाब मैंने कभी नहीं देखा। हाँ, एक मित्र बनकर तुम्हारे साथ जीवन-यापन करने की अभिलाषा मेरे अन्दर अंगड़ाइयां ले रही है।"

"पति-पत्नी और मित्र...यह कैसी पहेली है कुमार?"

"कोई पहेली नहीं...पति-पत्नी को मित्रों की तरह ही होना चाहिए। मैं यही चाहता हूँ और इसके लिए तुम्हारे सहयोग की अपेक्षा रहेगी।"

"मैं तो हमेशा...हर तरह से आपके साथ रहूँगी...आप को पा सकी, मेरे जीवन की यही सबसे बड़ी उपलब्धि है।"

"यह जो उपलब्धि शब्द का तुमने प्रयोग किया है मैं इससे इत्तेफाक नहीं रखता। मैं तो बस अपनी प्रकृति ही तुम्हें बताना चाहता हूँ। मैं इनसान हूँ....भूलें भी करूंगा....भटकूंगा भी...कभी तुम पर ज्यादती भी करूंगा..यह बहुत सहज-सी बात है। जब हम पारिवारिक संबंधों में जीते हैं तो यह सब जीवन का अंग ही होता है।"

"बस मैं यही अपेक्षा तुमसे करता हूँ कि यदि कभी भूल करूं तो तुम उस समय मुझे याद दिलाओगी कि मैंने तुमसे मित्रवत जिन्दगी जीने का वायदा किया हुआ है। बस तब तुम देखना...मेरा सारा गुस्सा...सारी कमजोरी उड़न छू हो लेगी।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"आपको नहीं लगता आप अपने मामलों में अधिक आश्वस्त होते हैं?"

"तुम जो चाहे कह सकती हो...तुम्हें अधिकार है। पर मैं तुम्हें स्वयं को ब्लैक-मेल करने का अचूक रास्ता बता रहा हूँ। जैसे लोक कथाओं में राक्षस अपनी मौत का रहस्य बता दिया करता था।"

"अरे बाप रे, इतनी भारी भरकम बातों से मुझे कुछ नहीं लेना। बस आपके साथ जीवन जीना है उसमें सुख भी होंगे...दुख भी...जो भी होगा मिल-बांट के गुजार लेंगे।"

"अब चल, तुझे देर हो जाएगी...वैसे तुम्हारे पापा जी के न मिलने के आदेश को हम लगातार बाइपास करते जा रहे हैं। चल, तुझे चौराहे तक उतारता हूँ।"

□

"कमला मौसी घर में है क्या?" कुमार ने कमला को घर पर जाकर दस्तक दी।

"अरे कुमार, तू....रे कौन-सी भीड़ आ पड़ी जो तू खुद चल के आया....आजा बेटा... ।" कमला धोती का आंचल सर पर ठीक करते हुए बोली।

"मौसी तुझे याद है, तू एक दिन मेरे पास आयी थी। आज मैं तेरे पास आया हूँ। पर थोड़ा सा फर्क है मैं प्लाट लेने नहीं आया हूँ। उस दिन तू अपने काम से आयी थी और आज भी मैं तेरे ही काम से आया हूँ। पर अब तेरे काम का जिम्मा मैं लेने को तैयार हूँ।"

"मैं तो बस तुझे प्लाट बेचने आयी थी कि तेरी देखा-देखी और लोग भी प्लाट ले लेंगे, और कोई काम तो मेरे को नईं था।"

"देख मौसी, तेरे पास जमीन है मेरे पास स्कीम है, मेरे पास जमीन नहीं है न तो मैं अपनी स्कीम खुद ही चला लेता। अगर हम दोनों मिल जाएं तो बड़े काम को अंजाम दे सकते हैं।"

"अब तू कौन-सी सकीम ले आया है? कुछ ओर-छोर तो बता। सकीम अच्छी होगी तो क्यों न करूंगी। वैसे भी तेरे को खूब जानूं। दस साल हो गए तेरे को देखते हुए, आज दिन तक तुझे न किसी का बुरा करते न देखा न सुना।"

"मौसी, मेरा विचार है तेरे खेतों में कमला नगर बसा दूँ। उस दिन तू कह रही थी न कि मैं तो मर जाऊंगी...अब भले मर जइयो पर कमला नगर, सदा-सदा के लिए बसा रहेगा...साथ में तेरा नाम भी।"

"बेटा मैंने भुतेरी कोसिस कर ली दो प्लाट बिके हैं एक तो तेरे शेरे पंजाब

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वाले मिस्त्री ने लिया, दूसरा वो इल्कट्रीसन है न क्या नाम है उसका....डॉक्टर ने। तू कह रहा है पूरा कमला नगर बसाऊंगा।''

''मौसी, यही तो स्कीम है...ये दिमाग का काम है। तू देखती जा, लोग भाग के तेरे प्लाट खरीदने आयेंगे।''

''सोच ले कुमार, पांच-दस प्लाट बेचना और बात है, पूरा मोहल्ला बसाना खाला जी का घर है क्या?''

''ले...मैं तेरे को मौसी कहता हूँ न....उर्दू में मौसी को ही खाला कहते हैं। समझी खाला जान, मेरे लिए कमला नगर बसाना खाला जी का घर ही है।''

''अरे बाप रे....कमला नगर, कुमार तूने तो मेरे होश उड़ा के रख दिए। अगर तू कमला नगर बसवा दे तो जिन्दगी भर तेरा अहसान नहीं भूलूंगी।''

''मौसी कमला नगर ही नहीं, कुमार चौक भी बनेगा। मेरी स्कीम में सिर्फ तेरा-मेरा ही फायदा नहीं है और बहुत से जरूरतमंदों के भले का सोच कर ही मैं यह काम करने जा रहा हूँ।''

''वो तो ठीक है, तू कह रहा है तो ठीक ही कह रहा होगा, पर सकीम क्या है?''

''मौसी, स्कीम भी बताता हूँ, तू आधी रोटी पे दाल मत खा। पहले यह बता मेरा हिस्सा क्या होगा...दो रुपये के रूक्के पर तुझे एग्रीमेंट लिख के कोर्ट में रजिस्टर्ड करना होगा।''

''तू बता, तेरा कमीशन क्या होगा?''

''मेरा कमीशन, दस परसेंट...शुरु-शुरु के कमीशन में चार सौ गज का प्लाट, लबे सड़क, साठ बाई साठ फुट। आधे में कार गैरेज आधे में रहने का मकान, बाकी कमीशन रोकड़ा, जैसे-जैसे पैसे आते जाएंगे हाथ के हाथ लेता जाऊंगा...बोल मंजूर।''

''दस परसेंट तो बहुत ज्यादा है...पांच परसेंट करले...यहाँ जितने प्लाट दिए हैं, सौ-डेढ़ सौ से ऊपर दलाली किसी को भी न दी।''

''मौसी, तू अभी से लालच में आ रही है। हाय... सारी आमदनी मेरी हो जाए. ...हर्रा लगे न फिटकरी। मौसी, मेरी स्कीम दो-तीन सौ प्लाट बेचने की है, वो भी तीस रुपये गज। जो रेट तूने खुद खोल रखा है। इसमें तेरे एकदम पीछे के दस रुपये गज वाले प्लाट भी तीस रुपये गज बिकेंगे।''

''एक मिनट रुक कुमार, तेरे मौसा और बड़े लल्ला को भी बुला लूं। मेरी समझ में नैक कम आता है।''

''कुमार....तेरी मौसी कह रही है तू कोई स्कीम लाया है रे कमला नगर बसाने की।'' कमला के पति ने कमरे में घुसते ही कहा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"पण्डित जी प्रणाम...मौसी ठीक कह रही है...पर मेरा दस परसेंट कमीशन देने में इसकी जान निकलती है।"

"ले....कमीशन देने में क्यों जान निकलेगी? वो तो ब्योहार की बात है। तू अपनी सकीम का थोड़ा खुलासा कर।"

"पंडित जी, स्कीम इतनी है कि मैं दो-तीन सौ प्लाट बिकवा कर कमला नगर बसाने का निमित्त बन रहा हूँ। मैंने कमीशन दस परसेंट माँगा है। सारे प्लाटों का एक ही रेट है तीस रुपये गज...भले लबे सड़क हों या एक दम पीछे के।"

"अगर सकीम ऐसी है के पीछे के प्लाट भी तीस रुपये गज बिकेंगे तो तेरा दस परसेंट कमीशन पक्का।"

"पण्डित जी, यही तो मैंने भी कहा है...कल चलो कचहरी में करारनामा लिख लो।"

"और जो प्लाट न बिके तो...?"

"करारनामे में यह साफ-साफ लिखा जाएगा कि कम से कम पचास प्लाट बिकने पर ही कमीशन दिया जाना शुरु किया जाएगा। साथ ही, यह भी लिखा जाएगा कि भविष्य में भी यदि आपकी कमला नगर से लगती जमीन पर प्लाट कटेंगे तो मेरा कमीशन मुझे मिलता रहेगा।"

"ये तुम अपने मुंह से कह रहे हो। पचास प्लाट बिकने पर कमीशन देना शुरु करेंगे।"

"जी हाँ...इसका विलेख करारनामे में किया जाएगा। वैसे तुम्हारे ये साहब जादे भी वहाँ सीमेंट की ऐजेन्सी ले रहे हैं। क्यों दोस्त....चलेगा ना भी, सूखा काम और आमदनी चक्क।"

"अरे, इस नालायक की छोड़। ये तो बनिये का बैल है। पर तू देख ले, तूने क्या कही है? कल चल कचहरी, करारनामा लिखा के रजिस्टर करा लेते हैं।"

"ये बताओ, खेत किसके नाम पर हैं....खसरा खतौनी दिखा दो।"

"खसरा खतौनी तो बस्ते में है, देख ले...सारे खेत मेरे नाम पे हैं।"

"ठीक है फिर मौसी और तुम्हारा बेटा गवाही लगा देंगे। करारनामे के बाद कल शाम को तुम्हें पूरी स्कीम का खुलासा भी कर दूँगा।"

"ठीक है...सुबह नौ बजे हम तुझे तेरी दुकान से ले लेंगे।"

करारनामे की शर्तों पहले से तय थीं...टाइप करा के रजिस्टर कराते दो बज गए। रसीद लेकर कुमार को उसके घर उतारा तो कमला ने कहा, "बेटा, पांच बजे सीक आ जइयो...। मोय तेरी पूरी सकीम सुने बगैर कल न परैगी।"

शाम पांच बजे कमला पण्डितानी के घर पूरा परिवार उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहा था। कुमार ने खुलासा किया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"मेरी कमला नगर बसाने की एक महत्त्वाकांक्षी स्कीम है। इसमें जरूरतमंदों और उनकी आय को मद्देनजर रखते हुए प्रावधान किए गए हैं। प्लाट आकार में पचास, सौ, डेढ़ सौ और दो सौ गज श्रेणी में होंगे। रेट तीस रुपये गज समान होगा। बस स्टैंड से आने वाली सड़क के ठीक सामने कमला नगर की पैंतालीस फुट की गली होगी। अन्दर प्लाटों के हिसाब से तीस और छब्बीस फुट की गलिया। होगी।"

"अरे, गली-वली को छोड़...वो तो जैसे तू कहेगा बना देंगे....तू प्लाट के गाहक कहाँ से लाएगा?" कमला को बहुत जल्दी है।

"सुन मौसी, प्लाट ड्रा से निकाले जाएगें। दो महीने बुकिंग चलेगी प्लाट की कीमत का पन्द्रह प्रतिशत लेकर बुकिंग होगी। तीन महीने बाद खुले आम ड्रा निकलेगा जिसके तीस दिन के अन्दर पन्द्रह प्रतिशत और जमा कराना होगा। बाकी सत्तर प्रतीशत एक वर्ष की समान किस्तों में।"

"अगर कोई किस्त ने दे तो या प्लाट वापस करे, तब क्या करोगे? इस बारे में कुछ सोचा है? कभी बाद में परेशानी हो।"

"जो किस्त समय पर नहीं देगा, बारह रुपये सैकड़ा सालाना ब्याज देगा और जो प्लाट वापस करेगा, उससे प्लाट कीमत का दस प्रतिशत हर्जाना काट के उसका पैसा वापस कर दिया जाएगा, सीधी-सी बात। यह पहले ही स्कीम की शर्तों में लिखा होगा। सीधा खेल फरूखाबादी...कोई झोल-झमेले की गुन्जाइश नहीं है। अगर कोई पूरे पैसे दे तो तुरंत बैनामा उसके नाम करा दिया जाएगा, नहीं तो आखिरी किस्त दो और बैनामा कराओ।"

"तैने वो बात तो बता के नई दी, प्लाट लेगा कौन? सौ-दो सौ ग्राहक कहाँ से लाएगा?"

"कौन लेगा प्लाट-प्लाट लेंगे रेलवे वाले...बैंक...वाले...स्कूल कॉलेज के मास्टर...और बाइपास के दो-सौ दुकानदारों में से...जो बेचारे किराये पर रह रहे हैं। आयी समझ में...अब किसी दिन आर्कीटैक्ट को बुला के प्लाट बना के प्लाटों की निशान देही करो और पर्चे छपवा के बंटवा दो। अब बता, बस गया न कमला नगर।" कुमार ने हंसकर कहा।

●●●

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मलिक राजकुमार

जन्म : 15 फरवरी 1955, बबीना (उ.प्र.)

शिक्षा : एल.एल.बी., एम.ए. (हिंदी), पी.एच-डी.

प्रकाशन : नदी बहती है (कविता संग्रह), एक लड़की पारूल (कविता संग्रह), संबंधों की नाव (कहानी संग्रह), लामबहादुर के बैल (कहानी संग्रह), एक और त्रिशंकु (उपन्यास), जड़ां दी तलाश (पंजाबी कहानी संग्रह), पैरों तले पहाड़ (यात्रा वर्णन), शहतूत की आँख (कहानी संग्रह), दादका-नानका (पाकिस्तान यात्रा संस्मरण) बाइपास (उपन्यास), प्रकाशनाधीनः अस्मि (कहानी संग्रह)

संपादन : सांझे अला (सिरायकी कविता संग्रह), शब-ए-मालवा (ग़ज़ल संग्रह), (सिरायकी खंड) पंजाबी संस्कृति, हिसार, जायसी ग्रंथावली (आचार्य रामचंद्र शुक्ल)

लघु शोध : 'एक और त्रिशंकु' उपन्यास में प्रेम का स्वरूप - कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, 'संबंधों की नाव' में त्रिकोणात्मक संबंध - कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, 'लामबहादुर के बैल' में सामाजिक आक्रोश - कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, 'एक लड़की पारुल' का चयन के आधार पर अध्ययन - कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, पैरों तले पहाड़ में प्रकृति एवं संवेदना - कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, मलिक राजकुमार का रचना संसार : सिंघानिया विश्वविद्यालय, मलिक राजकुमार के साहित्य में सामाजिक संवेदना - अमरावती विश्वविद्यालय

संदर्भ ग्रंथ में : भारतीय लोक साहित्य कोश खंड 8 में सिरायकी विरसा

संकलन कार्य : संपूर्ण सिरायकी लोक साहित्य, रेडियो/दूरदर्शन कहानी, वार्ता, कविताओं का रेडियो पर हिंदी, सिरायकी, पंजाबी एवं ब्रजभाषा में वाचन

संप्रति : आयकर एवं वैट अधिवक्ता, दिल्ली

पता : ए-1/28, मियांवाली नगर, दिल्ली 110087

दूरभाष : मो. - 09810116001, 011-25260049 (नि.), 011-25735623 (कार्या.)

श्री नटराज प्रकाशन
ए-507/12, करतार नगर, बाबा श्यामगिरी मार्ग
साउथ गामड़ी एक्सटेंशन, दिल्ली 110053
फोन : 011 -22941694, मो. 93127517[illegible]
E-mail : shreenatrajprakashan@yahoo.in
ISBN 978-93-81350-03-4

CC-0 Agamnigam ... by IKS-MoE-2025 Grant